श्रीमद् राजचंद्र प्रणीत मोक्षमाळा

अतगत,

सिधु त्रिदुरुप रालरयोध शिक्षापाठ.

" जेणे आत्माने जाण्यो तेणे सर्व जाण्यु "

निर्ग्रंथ प्रवचन

(मणका त्रीजो)

प्रकटकर्त्ता,

श्री राजनगर सुबोधक पुस्तकालय

शा आत्माराम माणेकलालना ची भाई रालाभाईना स्मरणार्थे

सवत १९८०

पाचमी आवृत्ति

श्री फीनीक्ष प्रीन्टींग प्रेसमां,
शाह मोहनलाल चीमनलाले छाप्युं
अमदावाद

अनुक्रम मणिका

शिक्षण पद्धति अने मुखमुद्रा

आ एक स्याद्वादतत्त्वावबोधवृक्षनुं बीज छे. आ ग्रंथ तत्त्व पामवानी जिज्ञासा उत्पन्न करी शके एवुं एमां कंई अंशे पण दैवत रह्युं छे, ए समभावथी कहुं छुं. पाठक अने वाचकवर्गने मुख्य भलामण ए छे के शिक्षापाठ पाठे करवा करतां जेम बने तेम मनन करवा. तेनां तात्पर्यों अनुभववां. जेमनी समजणमां न आवतां होय तेमणे ज्ञाता शिक्षक के मुनिओथी समजवा, अने ए जोगवाई न होय तो पांच सात वखत ते पाठो वांची जवा. एक पाठ वांची गया पछी अर्धघडी ते पर विचार करी अंतःकरणने पूछवुं के शुं तात्पर्य मळ्युं? ते तात्पर्यमांथी हेय, ज्ञेय अने उपादेय शुं छे? एम करवाथी आखो ग्रंथ समजी शकाशे, हृदय कोमळ थशे, विचारशक्ति खीलशे, अने जैनतत्त्वपर रूडी श्रद्धा थशे. आ ग्रंथ कंई पठन करवारूप नथी, पण मनन करवारूप छे. अर्थरूप केळवणी एमां योजी छे. ते योजना 'बालावबोध' रूप छे. 'विवेचन' अने 'प्रज्ञावबोध' भाग भिन्न छे. आ एमांनो एक कटको छे, छतां सामान्य तत्त्वरूप छे. स्वभाषा संबंधी जेने सारुं ज्ञान छे अने नवतत्त्व तेमज सामान्य प्रकरण ग्रंथो जे समजी शके छे तेओने आ ग्रंथ विशेष बोधदायक थशे. आटली तो अवश्य भलामण छे के, नाना बाळकोने आ शिक्षापाठोनुं तात्पर्य समजणरूपे सविधि आपवुं. ज्ञानशाळाओना विद्यार्थीओने शिक्षापाठ मुखपाठे करावव‍ाने वारंवार समजाववा. जे जे ग्रंथोनी ए माटे सहाय लेवी घटे ते लेवी. एक बेवार पुस्तक पूर्ण शीखी रह्या पछी अवळेथी चलाववुं. आ पुस्तक भणी हुं धारुं छुं के सुज्ञ वर्ग कटाक्ष दृष्टिथी नहीं जोशे, बहु ऊंडा ऊतरतां आ 'मोक्षमाळा' मोक्षना कारणरूप थई पडशे. माध्यस्थताथी एमां तत्त्वज्ञान अने शील बोधवानो उद्देश छे. आ पुस्तक प्रसिद्ध करवानो मुख्य हेतु उछरता बालयुवानो आवी रीते विद्या पामी आत्मसिद्धिथी भ्रष्ट थाय छे ते भावना अटकाववानो पण छे—

श्रीमान् राजचंद्र

बालावबोध मोक्षमाळा प्रथमभाग

अनुक्रम मणिका

ॐ सत्

श्री सद्गुरुभक्ति रहस्य

दोहरा

हे प्रभु! हे प्रभु! शु कहु, दीनानाथ दयाळ;
हु तो दोष अनंतनु, भाजन छु करुणाळ १

शुद्ध भाव मुजमा नथी, नथी सर्व तुज रूप,
नथी लघुता के दीनता, शु कहु परम स्वरूप? २

नथी आज्ञा गुरुदेवनी, अचळ करी उरमाहि;
आपतणो विश्वास दृढ़:, ने परमादर नाहि. ३

जोग नथी सतसंगनो, नथी सत् सेवा जोग;
केवळ अर्पणता नथी, नथी आश्रय अनुयोग. ४

'हु पामर शु करी शकु?' एवो नथी विवेक,
चरण शरण धीरज नथी, मरण सुधीनी छेक ५

अचिंत्य तुज महात्मनो, नथी प्रफुल्लित भाव,
अंश न एके स्नेहनो, न मळे परम प्रभाव ६

अचळ रूप आसक्ति नहि, नहि विरहनो ताप,
कथा अलभ तुज प्रेमनी, नहि तेनो परिताप ७

भक्तिमार्ग प्रवेश नहि, नहि भजन दृढ भान,
समज नहि निजधर्मनी, नहि शुभदेशे स्थान ८

काळ दोष कळिथी थयो, नहि मर्यादा धर्म,
तोये नहि व्याकुळता? जुओ प्रभु मुज कर्म. ९

सेवाने प्रतिकूळ जे, ते बंधन नथी त्याग,
देहेंद्रिय माने नहि, करे बाह्य पर राग १०

तुज वियोग स्फुरतो नथी, वचन नयन यम नाहि,
नहि उदासीन अभक्तथी, तेम गृहादिक माहि ११

अहंभावथी रहित नहि, स्वधर्म संचय नाहि,
नथी निवृत्ति निर्मळपणे, अन्य धर्मनी कांइ १२

एम अनंत प्रकारथी, साधन रहित हुय,
नहीं एक सद्गुण पण, मुख बतावुं शुंय? १३

केवळ करुणा-मूर्त्ति छो, दीनबंधु दीननाथ,
पापी परम अनाथ छउं, ग्रहो प्रभुजी हाथ १४

अनंत कालथी आथड्यो, विना भान भगवान,
सेव्या नहि गुरुसंतने, मूक्युं नहि अभिमान १५

संत चरण आश्रय विना, साधन कर्यां अनेक,
पार न तेथी पामियो, उग्यो न अंश विवेक १६

सहु साधन बंधन थयां, रह्यो न कोइ उपाय,
सत् साधन समज्यो नहि, त्यां बंधन शुं जाय १७

प्रभु, प्रभु लय लागी नहि, पड्यो न सद्गुरु पाय;
दीठा नहि निज दोष तो, तरिये कोण उपाय? १८

अधमाधम अधिको पतित, सकळ जगतमां हुय,
ए निश्चय आव्या विना, साधन करशे शुंय? १९

पडी पडी तुज पदपंकजे, फरी फरी मागुं एज;
सद्गुरु संत, स्वरूप तुज, ए दृढता करि देज २०

भादरवा सुद ८–१९४७

મોક્ષમાળા અમે સોળ વર્ષ અને પાંચ માસની ઉમ્મરે ત્રણ દિવસમા રચી હતી ૬૭ મા પાઠ ઉપર શાહી ઢોળાઈ જતા તે પાઠ ફરી લખવો પડયો હતો, અને તે ઠેકાણે 'બહુ પુણ્ય કેરા પુંજથી' એ અમૂલ્ય તાત્ત્વિક વિચારનુ કાવ્ય મુકયુ હતુ

જૈન માર્ગને યથાર્થ સમજાવવા તેમા પ્રયાસ કર્યો છે જિનોક્ત માર્ગથી કંઈપણ ન્યૂનાધિક તેમા કહ્યુ નથી વીતરાગ માર્ગ પર આબાલવૃદ્ધની રૂચી થાય, તેનુ સ્વરૂપ સમજાય, તેનુ બીજ હૃદયમા રોપાય તેવા હેતુએ બાલાવબોધરૂપ યોજના તેની કરી છે તે શૈલી તથા તે બોધને અનુસરવા પણ એ નમુનો આપેલ છે એનો પ્રજ્ઞાવબોધ ભાગ ભિન્ન છે તે કોઈ કરશે

મોક્ષમાળાના પાઠ અમે માપિ માપીને લખ્યા છે ફરી આવૃત્તિ અંગે સુખ ઉપજે તેમ પ્રવર્તા કેટલાક વાકય (અંડર લાઈન) નીચે લીટી દોરી છે, તેમ કરવા જરૂર નથી શ્રોતા-વાચકને બનતા સુધી આપણા અભિપ્રાયે ન દોરવા લક્ષ રાખવુ શ્રોતા-વાચકમા પોતાની મેળે અભિપ્રાય ઉગવા દેવો સારાસાર તોલ કરવાનુ વાચનાર-શ્રોતાના પોતાના પર છોડી દેવુ આપણે તેમને દોરી તેમને પોતાને ઉગી શકે એવા અભિપ્રાયને થંભી ન દેવો

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર

श्रीमद् राजचद्र वर्ष १६ मु वि स. १९४०

जन्म ववाणीआ
वि स १९२४ कार्तिक पूर्णिमा रवि

देहविलय राजकोट.
वि स १९५७ चैत्र वद पचमी, मगळ

तमे आ पुस्तकनो विनय अने विवेकथी उपयोग करजो विनय अने विवेक ए धर्मना मूळ हेतुओ छे

तमने बीजी एक आ पण भलामण छे के, जेओने वाचता आवडतु न होय, अने तेओनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अनुक्रमे तमने वाची सभळाववु

तमने आ पुस्तकमाथी जे कइ न समजाय ते सुविचक्षण पुरुष पासेथी समजी लेवु योग्य छे

तमारा आत्मानु आथी हित थाय, तमने ज्ञान, शाति अने आनद मळे, तमे परोपकारी, दयाळु, क्षमावान, विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ, एवी शुभ याचना अर्हत् भगवान पासे करी आ पाठ पूर्ण करु छउ

शिक्षापाठ २ सर्वमान्य धर्म

चोपाइ

धर्मतत्त्व जो पूछयु मने,
तो सभळावु स्नेहे तने,
जे सिद्धात सकळनो सार,
सर्व मान्य सहुने हितकार १

भाख्यु भाषणमा भगवान,
धर्म न बीजो दया समान,

सर्वमान्य धर्म.

अभयदान साथे संतोष,
द्यो प्राणीने, दळवा दोष

सत्य, शील ने सघळां दान,
दया होइने रह्यां प्रमाण;
दया नहीं तो ए नहीं एक,
विना सूर्य किरण नहीं देख.

पुष्पपांखडी ज्यां दूभाय,
जिनवरनी त्यां नहीं आज्ञाय;
सर्व जीवनुं ईच्छो सुख,
महावीरनी शिक्षा मुख्य

सर्व दर्शने ए उपदेश,
ए एकांते—नहीं विशेष;
सर्व प्रकारे जिननो बोध,
दया दया निर्मळ अविरोध!

ए भवतारक सुंदर राह,
धरिये तरिये करी उत्साह,
धर्म सकळनुं ए शुभ मूळ,
ए वण धर्म सदा प्रतिकूळ

तत्त्वरूपथी ए ओळखे,
ते जन प्होंचे शाश्वत सुखे,
शांतिनाथ भगवान प्रसिद्ध,
राजचंद्र करुणाए सिद्ध

शिक्षापाठ ३ कर्मना चमत्कार.

हुं तमने केटलीक सामान्य विचित्रताओ कही जउं छउं, ए उपर विचार करशो, तो तमने परभवनी श्रद्धा दृढ थशे

एक जीव सुंदर पलंगे पुष्पशय्यामां शयन करे छे, एकने फाटेली गोदडी पण मळती नथी एक भात भातनां भोजनोथी तृप्त रहे छे, एकने काळी जारना पण सांसा पडे छे एक अगणित लक्ष्मीनो उपभोग ले छे, एक फूटी बदाम माटे थइने घेर घेर भटके छे एक मधुरा वचनोथी मनुष्यना मन हरे छे, एक अवाचक जेवो थइने रहे छे एक सुन्दर वस्त्रालंकारथी विभूषित थइ फरे छे, एकने खरा शियाळामां फाटेलुं कपडुं पण ओढवाने मळतुं नथी एक रोगी छे, एक प्रबल छे एक बुद्धिशाळी छे एक जडभरत छे एक मनोहर नयनवाळो छे, एक अंध छे एक लूलो, के पांगळो छे, एकना पग ने हाथ रमणीय छे एक कीर्तिमान छे, एक अपयश भोगवे छे एक लाखो अनुचरो पर हुकम चलावे छे, अने एक तेटलानां ज टुंबा सहन करे छे एकने जोइने आनंद उपजे छे एकने जोतां वमन थाय छे एक संपूर्ण इंद्रियोवाळो छे, अने एक अपूर्ण इंद्रियोवाळो छे एकने दिन दुनियानुं लेशभान नथी, ने एकना दुःखनो किनारो पण नथी

एक गर्भाधानमां आवतां ज मरण पामे छे, एक जन्म्यो के तरत मरण पामे छे एक मुवेलो अवतरे छे, अने एक सो वर्षनो वृद्ध थइने मरे छे

कोइनां मुख, भाषा अने स्थिति सरखां नथी मूर्ख राज्यगादी पर खमा खमाथी वधावाय छे, अने समर्थ विद्वानो धक्का खाय छे!

आम आखा जगतनी विचित्रता भिन्न भिन्न प्रकारे तमे जुओ छो, ए उपरथी तमने कइ विचार आवे छे? में कह्यु छे ते उपरथी तमने विचार आवतो होय तो कहो के, ते शा वडे थाय छे?

पोताना बांधेला शुभाशुभ कर्मवडे, कर्मवडे आखो ससार भमवो पडे छे. परभव नहि माननार पोते ए विचारे शा वडे करे छे ते उपर यथार्थ विचार करे, तो ते पण आ सिद्धात मान्य राखे

शिक्षापाठ ४ मानवदेह

आगळ कह्यु छे ते प्रमाणे विद्वानो मानवदेहने बीजा सघळा देह करता उत्तम कहे छे उत्तम कहेवाना केटलाक कारणो अत्रे कहीशु

आ ससार बहु दु खथी भरेलो छे एमाथी ज्ञानीओ तरीने पार पामवा प्रयोजन करे छे मोक्षने साधी तेओ अनत सुखमा बिराजमान थाय छे ए मोक्ष बीजा कोइ देहथी मळतो नथी देव, तिर्यच के नरक ए एके गतिथी मोक्ष नथी, मात्र मानवदेहथी मोक्ष छे

त्यारे तमे कहेशो के, सघळा मानवियोनो मोक्ष केम थतो नथी? तेनो उत्तर जेओ मानवपणुं समजे छे, तेओ ससारशोकने तरी जाय छे जेनामा विवेकबुद्धि उदय पामी होय, अने ते वडे सत्यासत्यनो निर्णय समजी, परम तत्त्वज्ञान तथा उत्तम चारित्ररूप सद्धर्मनु सेवन करी जेओ अनुपम मोक्षने पामे छे, तेना देहधारीपणाने विद्वानो मानवपणु कहे छे मनुष्यना शरीरना देखाव उपरथी विद्वानो तेने मनुष्य कहेता नथी, परतु तेना विवेकने लइने कहे छे बे हाथ बे पग, बे आख, बे कान, एक मुख, बे होठ अने एक नाक ए जेने होय तेने मनुष्य कहेवो एम आपणे समजवु नहीं जो एम समजीए

तो पछी वान्राने पण मनुष्य गणवो जोइए एणे पण ए प्रमाणे सघळु प्राप्त कर्युं छे विशेषमा एक पुछडु पण छे, त्यारे शु एने महा मनुष्य कहेवो? ना, नही मानवपणु समजे तेज मानव कहेवाय

ज्ञानीओ कहे छे के, ए भव बहु दुर्लभ छे, अति पुण्यना प्रभावथी ए देह सापडे छे, माटे एथी उतावळे आत्मसार्थक करी लेवु अयमतकुमार, गजसुकुमार जेवा नाना बाळको पण मानवपणाने समजवाथी मोक्षने पाम्या मनुष्यमा जे शक्ति वधारे छे, ते शक्तिवडे करीने मदोन्मत हाथी जेवा प्राणीने पण वश करी ले छे, ए शक्तिवडे जो तेओ पोताना मनरूपी हाथीने वश करी ले, तो केटलु कल्याण थाय!

कोइ पण अन्य देहमा पूर्ण सद्विवेकनो उदय थतो नथी, अने मोक्षना राजमार्गमा प्रवेश थइ शकतो नथी एथी आपणने मळेलो आ बहु दुर्लभ मानवदेह सफळ करी लेवो ए अवश्यनुं छे केटलाक मूर्खो दुराचारमा, अज्ञानमा, विषयमा, अने अनेक प्रकारना मदमा आवो मानवदेह वृथा गुमावे छे अमूल्य कौस्तुभ हारी बेसे छे आ नामना मानव गणाय, बाकी तो वानररूप ज छे

मोतनी पळ, निश्चय, आपणे जाणी शकता नथी, माटे जेम बने तेम धर्ममा त्वराथी सावधान थवु

शिक्षापाठ ५ अनाथी मुनि भाग १

अनेक प्रकारनी रिद्धिवाळो मगधदेशनो श्रेणिक नामे राजा अश्वक्रिडाने माटे मडिकुक्ष नामना वनमा नीकळी पडयो वननी विचित्रता मनोहारिणी हती नाना प्रकारना वृक्षो त्या आवी रह्या

हता, नाना प्रकारनी कोमळ वेलीओ घटाटोप थइ रही हती; नाना प्रकारना पखीओ आनदथी तेनु सेवन करता हता; नाना प्रकारना पक्षियोना मधुरा गायन त्या सभळाता हता, नाना प्रकारना फूलथी ते वन छवाइ रह्यु हतु; नाना प्रकारना जळना झरण त्यां वहेता हता टूकामा ए वन नदनवन जेवु लागतु हतु ते वनमा एक झाड तळे महा समाधिवत पण सुकुमार अने सुखोचित मुनिने ते श्रेणिके बेठेलो दीठो एनु रूप जोइने ते राजा अत्यंत आनद पाम्यो उपमारहित रूपथी विस्मित थइने मनमा तेनी प्रशसा करवा लाग्यो आ मुनिनो केवो अद्भुत वर्ण छे! एनु केवु मनोहर रूप छे! एनी केवी अद्भुत सौम्यता छे! आ केवी विस्मयकारक क्षमानो धरनार छे! आना अगथी वैराग्यनो केवो उत्तम प्रकाश छे! आनी केवी निर्लोभता जणाय छे! आ सयति केवु निर्भय नम्रपणु धरावे छे! ए भोगथी केवो विरक्त छे! एम चिंतवतो चिंतवतो, मुदित थतो थतो, स्तुति करतो करतो, धीमेथी चालतो चालतो, प्रदक्षिणा दइ ते मुनिने वदन करी अति समीप नही, तेम अति दूर नही, एम ते श्रेणिक बेठो पछी बे हाथनी अजलि करीने विनयथी तेणे ते मुनिने पूछ्यु. "हे आर्य! तमे प्रशसा करवा योग्य एवा तरुण छो! भोगविलासने माटे तमारु वय अनुकूळ छे; ससारमा नाना प्रकारना सुख रह्या छे ऋतु ऋतुना कामभोग, जळ सबधीना विलास, तेमज मनोहारिणी स्त्रीओना मुखवचननु मधुरुं श्रवण छता ए सघळानो त्याग करीने मुनित्वमा तमे महा उद्यम करो छो एनु शु कारण? ते मने अनुग्रहथी कहो" राजाना आवा वचन साभळीने मुनिए कह्युः "हे राजा! हु अनाथ हतो मने अपूर्व वस्तुनो प्राप्त करावनार, तथा योग क्षेमनो करनार, मारापर अनुकपा आणनार, करुणाथी करीने परम सुखनो देनार एवो मारो कोइ मित्र थयो नही ए कारण मारा अनाथीपणानु हतुं"

शिक्षापाठ ६ अनाथी मुनि भाग २

श्रेणिक मुनिना भाषणथी स्मित हसीने बोल्यो, 'तमारे मारा रिद्धिवंतने नाथ केम न होय? जो कोई नाथ नथी तो हुं थउं छउं हे भयत्राण! तमे भोग भोगवो हे संयति! मित्र, ज्ञातिए करीने दुर्लभ एवो आ तमारो मनुष्यभव सुलभ करो अनाथीए कह्युं "अरे श्रेणिक राजा! पण तुं पोते अनाथ छो तो मारो नाथ शुं थईश? निर्धन ते धनाढ्य क्यांथी बनावे? अबुध ते बुद्धिदान क्यांथी आपे? अज्ञ ते विद्वत्ता क्यांथी दे? वंध्या ते संतान क्यांथी आपे? ज्यारे तुं पोते अनाथ छो, त्यारे मारो नाथ क्यांथी थईश?' मुनिना वचनथी राजा अति आकुळ अने अति विस्मित थयो कोई काळे जे वचननुं श्रवण थयुं नथी ते वचननुं यतिमुखथी श्रवण थयुं एथी ते शंकित थयो, अने बोल्यो "हुं अनेक प्रकारना अश्वनो भोगी छउं, अनेक प्रकारना मदोन्मत्त हाथीओनो धणी छउं अनेक प्रकारनी सेना मने आधीन छे, नगर, ग्राम, अंतःपुर अने चतुष्पादनी मारे कंई न्यूनता नथी, मनुष्य संबंधी सघळा प्रकारना भोग हुं पाम्यो छउं, अनुचरो मारी आज्ञाने रुडी रीते आराधे छे, एम राजाने छाजती सर्व प्रकारनी संपत्ति मारे घेर छे, अनेक मनवांछित वस्तुओ मारी समीपे रहे छे आवो हुं महान छतां अनाथ केम होउं? रखे हे भगवन्! तमे मृषा बोलता हो ' मुनिए कह्युं "राजा! मारुं कहेलुं तुं न्यायपूर्वक समज्यो नथी हवे हुं जेम अनाथ थयो, अने जेम में संसार त्याग्यो तेम तने कहुं छउं, ते एकाग्र अने सावधान चित्तथी सांभळ, सांभळीने पछी तारी शंकानो सत्यासत्य निर्णय करजे —

"कौशाम्बी नामे अति जीर्ण अने विविध प्रकारनी भव्यताथी भरेली एक सुदर नगरी छे; त्या रिद्धिथी परिपूर्ण रत्नचय नामनो मारो पिता रहेतो हतो, हे महाराजा! यौवनवयना प्रथम भागमा मारी आखो अति वेदनाथी घेराइ; आखे शरीरे अग्नि बळवा मड्यो. शस्त्रथी पण अतिशय तिष्ण ते रोग वैरीनी पेठे मारापर कोपायमान थयो मारु मस्तक ते आखनी असह्य वेदनाथी दुःखवा लाग्यु. वज्रना प्रहार जेवी, बीजाने पण रौद्र भय उपजाववानी एवी ते दारूण वेदनाथी हु अत्यत शोकमा हतो सख्याबध वैद्यकशास्त्रनिपूण वैद्यराजो मारी ते वेदनानो नाश करवा माटे आव्या, अने तेमणे अनेक औषध उपचार कर्या पण ते वृथा गया. ए महा निपूण गणाता वैद्यराजो मने ते दरदथी मुक्त करी शक्या नही, ए ज हे राजा! मारु अनाथपणुं हतुं मारी आखनी वेदना टाळवाने माटे मारा पिताए सर्व धन आपवा माड्यु पण तेथी करीने मारी ते वेदना टळी नही, हे राजा! ए ज मारु अनाथपणु हतुं. मारी माता पुत्रने शोके करीने अति दु.खार्त्त थइ, परतु ते पण मने दरदथी मूकावी शकी नही, ए ज हे राजा! मारु अनाथपणु हतु. एक पेटथी जन्मेला मारा ज्येष्ठ अने कनिष्ठ भाइओ पोताथी बनतो परिश्रम करी चूक्या पण मारी ते वेदना टळी नहीं, हे राजा! ए ज मारु अनाथपणु हतु. एक पेटथी जन्मेली मारी ज्येष्ठा अने कनिष्ठा भगिनीओथी मारु ते दुःख टळ्यु नही, हे महाराजा! ए ज मारु अनाथपणु हतु. मारी स्त्री जे पतिव्रता, मारापर अनुरक्त अने प्रेमवती हती, ते आसु भरी मारु हैयु पलाळती हती तेणे अन्न पाणी आप्या छता, अने नाना प्रकारना अंघोलण, चुवादिक सुगंधी पदार्थ, तेम ज अनेक प्रकारना फुल चदनादिकना जाणिता अजाणिता विलेपन कर्या छता, हु ते विलेपनथी मारो रोग शमावी न शक्यो, क्षण पण रहेती नहोती एवी ते स्त्री पण मारा

रोगने टाळी न शकी, ए ज हे महाराजा ! मारुं अनाथपणुं हतु एम कोइना प्रेमथी, कोइना औषधथी, कोइना विलापथी के कोइना परिश्रमथी ए रोग उपशम्यो नहीं ए वेळा पुनः पुन में असह्य वेदना भोगवी, पछी हु प्रपची ससारथी खेद पाम्यो एकवार जो आ महा विडंबनामय वेदनाथी मुक्त थउ तो खंती, दंती अने निरारंभी प्रव्रज्याने धारण करुं एम चिंतवीने शयन करी गयो ज्यारे रात्रि व्यतिक्रमी गइ त्यारे हे महाराजा ! मारी ते वेदना क्षय थइ गइ, अने हु निरोगी थयो मात, तात स्वजन बंधवादिकने पूछीने प्रभाते में महा क्षमावंत इंद्रियने निग्रह करवावाळुं, अने आरंभोपाधिथी रहित एवुं अणगारत्व धारण कर्यु

शिक्षापाठ ७ अनाथी मुनि भाग ३

हे श्रेणिक राजा ! त्यार पछी हुं आत्मा परमात्मानो नाथ थयो हवे हुं सर्व प्रकारना जीवनो नाथ छउं तु जे शंका पाम्यो हतो ते हवे टळी गइ हशे एम आखु जगत–चक्रवर्त्ती पर्यंत अशरण अने अनाथ छे ज्यां उपाधि छे त्या अनाथता छे, माटे हुं कहु छउं ते कथन तु मनन करी जजे निश्चय मानजे के, आपणो आत्मा ज दुःखनी भरेली वैतरणीनो करनार छे, आपणो आत्मा ज क्रूर सालमलि वृक्षना दुःखनो उपजावनार छे, आपणो आत्मा ज वांछित वस्तुरूपी दूधनी देवावाळी कामधेनु सुखनो उपजावनार छे; आपणो आत्मा ज नंदनवननी पेठे आनंदकारी छे, आपणो आत्मा ज कर्मनो करनार छे, आपणो आत्मा ज ते कर्मनो टाळनार छे, आपणो आत्मा ज दुःखोपार्जन करनार छे, अने आपणो आत्मा ज

मुखोपार्जन करनार छे; आपणो आत्मा ज मित्र, ने आपणो आत्मा ज वैरी छे, आपणो आत्मा ज कनिष्ठ आचारे स्थित, अने आपणो आत्मा ज निर्मळ आचारे स्थित रहे छे

एम आत्मप्रकाशक बोध श्रेणिकने ते अनाथी मुनिए आप्यो. श्रेणिकराजा बहु संतोष पाम्यो. वे हाथनी अंजलि करीने ते एम बोल्यो· "हे भगवन्! तमे मने भली रीते उपदेश्यो; तमे जेम हतु तेम अनाथपणु कही बताव्यु महर्षि! तमे सनाथ, तमे सबंधव अने तमे सधर्म छो तमे सर्व अनाथना नाथ छो हे पवित्र संयति! हु तमने क्षमावु छु. तमारी ज्ञानि शिक्षाथी लाभ पाम्यो छु. धर्मध्यानमा विघ्न करवावाळु भोग भोगववा संबंधीनु में तमने हे महा भाग्यवंत! जे आमंत्रण दीधु ते संबंधीनो मारो अपराध मस्तक नमावीने क्षमावु छु" एवा प्रकारथी स्तुति उच्चारीने राजपुरुष केशरी श्रेणिक विनयथी प्रदक्षिणा करी स्वस्थानके गयो

महा तपोधन, महा मुनि, महा प्रज्ञावंत, महा यशवंत, महा निर्ग्रंथ अने महा श्रुत अनाथी मुनिए मगध देशना श्रेणिक राजाने पोताना वितक चरित्रथी जे बोध आप्यो छे ते खरे! अशरणभावना सिद्ध करे छे. महा मुनी अनाथीए भोगवेली वेदना जेवी, के एथी अति विशेष वेदना अनंत आत्माओने भोगवता जोइए छीए ए केवु विचारवा लायक छे! संसारमा अशरणता अने अनंत अनाथता छवाइ रही छे तेनो त्याग उत्तम तत्त्वज्ञान अने परम शीलने सेववाथी ज थाय छे ए ज मुक्तिना कारणरूप छे. जेम संसारमा रह्या अनाथी अनाथ हता तेम प्रत्येक आत्मा तत्त्वज्ञाननी प्राप्ति विना सदैव अनाथ ज छे. सनाथ थवा सद्देव, सद्धर्म अने सद्गुरुने जाणवा अने ओळखवा ए अवश्यनुं छे

शिक्षापाठ ८ सद्देवतत्त्व

त्रण तत्त्वो आपणे अवश्य जाणवा जोइए ज्यांसुधी ते तत्त्वो संबंधी अज्ञानता होय छे त्यांसुधी आत्महित नथी ए त्रण तत्त्वो सद्देव, सद्धर्म अने सद्गुरु छे आ पाठमा सद्देवनु स्वरूप संक्षेपमा कहीशु

चक्रवर्ती राजाधिराज के राजपुत्र छता जेओ संसारने एकांत अनंत शोकनुं कारण मानीने तेनो त्याग करे छे, पूर्ण दया, शांति, क्षमा, निरागीत्व अने आत्मसमृद्धिथी त्रिविध तापनो लय करे छे, महा उग्र तपोध्यानवडे विशोधन करीने जेओ कर्मना समूहने बाळी नाखे छे; चंद्र तथा शंखथी अत्यंत उज्ज्वळ एवु शुक्ल ध्यान जेओने प्राप्त थाय छे, सर्व प्रकारनी निद्रानो जेओ क्षय करे छे, संसारमा मुख्यता भोगवतां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय ए चार कर्म भस्मीभूत करी जेओ केवलज्ञान केवल दर्शनसहित स्वस्वरूपथी विहार करे छे, जेओ चार अघाति कर्म रह्या सुधी यथाख्यात चारित्ररूप उत्तम शीलनुं सेवन करे छे, कर्मग्रीष्मथी अकळाता पामर प्राणीओने परम शांति मळवा जेओ शुद्ध बोधबीजनो निष्कारण करुणाथी मेघधारावाणीवडे उपदेश करे छे, कोइ पण समये किंचित् मात्र पण संसारी वैभवविलासनो स्वप्नांश पण जेने रह्यो नथी, घनघाति कर्म क्षय कर्या पहेला, पोतानी छद्मस्थता गणी जेओ श्रीमुखवाणीथी उपदेश करता नथी, पांच प्रकारना अंतराय, हास्य, रति, अरति, भय, जुगुप्सा, शोक, मिथ्यात्व, अज्ञान, अप्रत्याख्यान, राग, द्वेष, निद्रा अने काम ए अढार दूषणथी जे रहित छे, सच्चिदानंद स्वरूपथी विराजमान छे, महा उद्योत कर बार गुणो जेओने प्रगटे छे, जन्म,

मरण अने अनंत संसार जेनो गयो छे तेने निर्ग्रंथना आगममां सद्देव कह्या छे. ए दोषरहित शुद्ध आत्मस्वरूपने पामेला होवाथी पूजनीय परमेश्वर कहेवा योग्य छे. उपर कह्या ते अढार दोषमानो एक पण दोष होय त्यां सद्देवनुं स्वरूप घटतुं नथी. आ परम तत्त्व महत्पुरुषोथी विशेष जाणवुं अवश्यनुं छे.

शिक्षापाठ ९ सद्धर्मतत्त्व

अनादि काळथी कर्मजाळना बंधनथी आ आत्मा संसारमां रझळ्या करे छे. समय मात्र पण तेने खरुं सुख नथी. अधोगतिने ए सेव्या करे छे, अने अधोगतिमां पडता आत्माने धरी राखनार सद्गति आपनार वस्तु तेनुं नाम 'धर्म' कहेवाय छे, अने ए ज सत्य सुखनो उपाय छे. ते धर्मतत्त्वना सर्वज्ञ भगवाने भिन्न भिन्न भेद कह्या छे. तेमांना मुख्य बे छेः १. व्यवहारधर्म. २. निश्चयधर्म.

व्यवहारधर्ममां दया मुख्य छे. सत्यादि बाकीनां चार महाव्रतो ते पण दयानी रक्षा वास्ते छे. दयाना आठ भेद छेः १. द्रव्यदया. २. भावदया. ३. स्वदया. ४. परदया. ५. स्वरूपदया. ६. अनुबंधदया. ७. व्यवहारदया. ८. निश्चयदया.

प्रथम द्रव्यदया—कोई पण काम करवुं ते यत्नापूर्वक जीवरक्षा करीने करवुं ते 'द्रव्यदया.'

बीजी भावदया—बीजा जीवने दुर्गति जतो देखीने अनुकंपा-बुद्धिथी उपदेश आपवो ते 'भावदया.'

त्रीजी स्वदया–आ आत्मा अनादि काळथी मिथ्यात्वथी ग्रहायो छे, तत्त्व पामतो नथी, जिनाज्ञा पाळी शकतो नथी, एम चिंतवी धर्ममा प्रवेश करवो ते 'स्वदया'

चोथी परदया–छकाय जीवनी रक्षा करवी ते 'परदया'

पाचमी स्वरूपदया–सूक्ष्म विवेकथी स्वरूपविचारणा करवी ते 'स्वरूपदया'

छट्ठी अनुबधदया–सद्गुरु, के सुशिक्षक शिष्यने कडवा कथनथी उपदेश आपे ए देखवामा तो अयोग्य लागे छे, परतु परिणामे करुणानु कारण छे–आनुं नाम 'अनुबधदया'

सातमी व्यवहारदया–उपयोगपूर्वक तथा विधिपूर्वक जे दया पाळवी तेनुं नाम 'व्यवहारदया'

आठमी निश्चयदया–शुद्ध साध्य उपयोगमां एकता भाव, अने अभेद उपयोग ते 'निश्चयदया'

ए आठ प्रकारनी दयावडे करीने व्यवहारधर्म भगवाने कह्यो छे एमा सर्व जीवनु सुख, सतोष, अभयदान ए सघळां विचारपूर्वक जोता आवी जायछे.

बीजो निश्चयधर्म–पोताना स्वरूपनी भ्रमणा टाळवी, आत्माने आत्मभावे ओळखवो, 'आ ससार ते मारो नथी, हु एथी भिन्न, परम असग सिद्धसदृश्य शुद्ध आत्मा छुं,' एवी आत्मस्वभाववर्त्तना ते 'निश्चयधर्म' छे

जेमां कोइ प्राणीनु दु ख, अहित के असतोष रह्यां छे त्या दया नथी, अने दया नथी त्यां धर्म नथी अर्हत् भगवानना कहेलां धर्मतत्त्वथी सर्व प्राणी अभय थाय छे

शिक्षापाठ १० सद्गुरुतत्त्व भाग १

पिता-पुत्र. तु जे शाळामां अभ्यास करवा जाय छे ते शाळानो शिक्षक कोण छे ?

पुत्र-पिताजी. एक विद्वान अने समजु ब्राह्मण छे

पिता-तेनी वाणी, चालचलगत वगेरे केवा छे ?

पुत्र-एनी वाणी बहु मधुरी छे ए कोइने अविवेकथी बोलावता नथी, अने बहु गभीर छे; बोले छे त्यारे जाणे मुखमाथी फुल झरे छे कोइनु अपमान करता नथी; अने अमने योग्य नीति समजाय तेवी शिक्षा आपे छे

पिता-तु त्यां शा कारणे जाय छे ते मने कहे जोइए.

पुत्र-आप एम केम कहो छो, पिताजी ! संसारमा विचक्षण थवाने माटे पद्धतिओ समजु, व्यवहारनी नीति शीखु एटला माटे थइने आप मने त्या मोकलो छो

पिता-तारा ए शिक्षक दुराचारी के एवा होत तो ?

पुत्र-तो तो बहु माठु थात; अमने अविवेक अने कुवचन बोलता आवडत, व्यवहारनीति तो पछी शीखवे पण कोण ?

पिता-जो पुत्र ए उपरथी हु हवे तने एक उत्तम शिक्षा कहुं जेम समारमा पडवा माटे व्यवहारनीति शीखवानु प्रयोजन छे तेम धर्मतत्त्व अने धर्मनीतिमा प्रवेश करवानु परभवने माटे प्रयोजन छे जेम ते व्यवहारनीति सदाचारि [illegible] उत्तम मळी शके छे

त्रीजी स्वदया–आ आत्मा अनादि काळथी मिथ्यात्वथी ग्रहायो छे, तत्त्व पामतो नथी, जिनाज्ञा पाळी शकतो नथी, एम चिंतवी धर्ममा प्रवेश करवो ते 'स्वदया'

चोथी परदया–छकाय जीवनी रक्षा करवी ते 'परदया'

पाचमी स्वरूपदया–सूक्ष्म विवेकथी स्वरूपविचारणा करवी ते 'स्वरूपदया'

छठ्ठी अनुबंधदया–सद्‌गुरु, क सुशिक्षक शिष्यने कडवां कथनथी उपदेश आपे ए देखवामां तो अयोग्य लागे छे, परतु परिणामे करुणानुं कारण छे–आनुं नाम 'अनुबधदया'

सातमी व्यवहारदया–उपयोगपूर्वक तथा विधिपूर्वक जे दया पाळवी तेनुं नाम 'व्यवहारदया'

आठमी निश्चयदया–शुद्ध साध्य उपयोगमां एकता भाव, अने अभेद उपयोग ते 'निश्चयदया.'

ए आठ प्रकारनी दयावडे करीने व्यवहारधर्म भगवाने कह्यो छे एमां सर्व जीवनु सुख, संतोष, अभयदान ए सघळां विचारपूर्वक जोता आवी जायछे

बीजो निश्चयधर्म–पोताना स्वरूपनी भ्रमणा टाळवी, आत्माने आत्मभावे ओळखवो, 'आ ससार ते मारो नथी, हुं एथी भिन्न, परम असग सिद्धसदृश शुद्ध आत्मा छुं,' एवी आत्मस्वभाववर्त्तना ते 'निश्चयधर्म' छे

जेमा कोइ प्राणीनु दु ख, अहित के असंतोष रह्यां छे त्यां दया नथी, अने दया नथी त्या धर्म नथी अर्हंत भगवानना कहेला धर्मतत्त्वथी सर्व प्राणी अभय थाय छे

शिक्षापाठ १० सद्गुरुतत्त्व भाग १

पिता-पुत्र, तु जे शाळामा अभ्यास करवा जाय छे ते शाळानो शिक्षक कोण छे ?

पुत्र-पिताजी, एक विद्वान अने समजु ब्राह्मण छे.

पिता-तेनी वाणी, चाल्चलगत वगेरे केवा छे ?

पुत्र-एनी वाणी बहु मधुरी छे. ए कोइने अविवेकथी बोलावता नथी, अने बहु गभीर छे; बोले छे त्यारे जाणे मुखमाथी फुल झरे छे. कोइनुं अपमान करता नथी; अने अमने योग्य नीति समजाय तेवी शिक्षा आपे छे

पिता-तुं त्या शा कारणे जाय छे ते मने कहे जोइए

पुत्र-आप एम केम कहो छो, पिताजी! ससारमा विचक्षण थवाने माटे पद्धतिओ समजु, व्यवहारनी नीति शीखु एटला माटे थइने आप मने त्या मोकलो छो

पिता-तारा ए शिक्षक दुराचारी के एवा होत तो ?

पुत्र-तो तो बहु माठु थात; अमने अविवेक अने कुवचन बोल्ता आवडत; व्यवहारनीति तो पछी शीखवे पण कोण ?

पिता-जो पुत्र ए उपरथी हुं हवे तने एक उत्तम शिक्षा कहुं; जेम ससारमा पडवा माटे व्यवहारनीति शीखवानुं प्रयोजन छे, तेम धर्मतत्त्व अने धर्मनीतिमा प्रवेश करवानु परभवने माटे प्रयोजन छे जेम ते व्यवहारनीति सदाचारी शिक्षकथी उत्तम मळी शके छे, तेम

परभवश्रेयस्कर धर्मनीति उत्तम गुरुथी मळी शके छे व्यवहारनीतिना शिक्षक अने धर्मनीतिना शिक्षकमां बहु भेद छे नीलोगीना कटका जेम व्यवहारशिक्षक अने अमूल्य कौस्तुभ जेम आत्मधर्म शिक्षक छे

पुत्र—शीरछत्र! आपनुं कहेवुं व्याजबी छे धर्मना शिक्षकनी संपूर्ण अवश्य छे आपे वारंवार संसारना अनंत दुःख मने कह्युं छे, एथी पार पामवा धर्म ज सहायभूत छे, त्यारे धर्म केवा गुरुथी पामीए तो श्रेयस्कर नीवडे ते मने कृपा करीने कहो

शिक्षापाठ ११ सद्गुरुतत्त्व भाग २

पिता—पुत्र गुरु त्रण प्रकारना कहेवाय छे. १ काष्टस्वरूप २ कागळस्वरूप ३ पथ्थरस्वरूप काष्टस्वरूप गुरु सर्वोत्तम छे, कारण संसाररूपी समुद्रने १ काष्टस्वरूपी गुरु ज तरे छे, अने तारी शके छे २ कागळस्वरूप गुरु ए मध्यम छे ते संसारसमुद्रने पोते तरी शके नही, परंतु कंइ पुण्य उपार्जन करी शके ए बीजाने तारी शके नही ३ पथ्थरस्वरूप ते पोते बुडे अने परने पण बुडाडे. काष्टस्वरूप गुरु मात्र जिनेश्वर भगवानना शासनमां छे बाकी बे प्रकारना जे गुरु रह्या ते कर्मावरणनी वृद्धि करनार छे आपणे सघा उत्तम वस्तुने चाहीए छीए, अने उत्तमथी उत्तम मळी शके छे गुरु जो उत्तम होय तो ते भवसमुद्रमां नाविकरूप थई सद्धर्म नावमां बेसाडी पार पमाडे तत्त्वज्ञानना भेद, स्वस्वरूपभेद, लोकालोकविचार, संसारस्वरूप ए सघळुं उत्तम गुरु विना मळी शके नही, त्यारे तने प्रश्न करवानी इच्छा थशे के एवा गुरुना लक्षण कियां कियां?

ते कहु छु जिनेश्वर भगवाननी भाखेली आज्ञा जाणे, तेने यथातथ्य पाळे, अने बीजाने बोधे, कचन, कामिनीथी सर्व भावथी त्यागी होय, विशुद्ध आहारजळ लेता होय, बावीश प्रकारना परिषह सहन करता होय, क्षात, दात, निरारभी अने जितेंद्रिय होय, सिद्धातिक ज्ञानमा निमग्न होय, धर्म माटे थईने मात्र शरीरनो निर्वाह करता होय, निर्ग्रंथपथ पाळता कायर न होय, सळी मात्र पण अदत्त लेता न होय, सर्व प्रकारना आहार रात्रिए त्याग्या होय, समभावि होय, अने निरागताथी सत्योपदेशक होय टुकामा तेओने काष्टस्वरूप सदगुरु जाणवा पुत्र! गुरुना आचार, ज्ञान ए सम्वन्धी आगममा वहु विवेकपूर्वक वर्णन कर्यु छे जेम तु आगळ विचार करता शीखतो जइश, तेम पछी हु तने ए विशेष तत्त्वो बोधतो जइश.

पुत्र–पिताजी, आपे मने टुकामा पण बहु उपयोगी, अने कल्याणमय कह्यु, हुं निरतर ते मनन करतो रहीश.

शिक्षापाठ १२ उत्तम गृहस्थ

ससारमा रह्या छता पण उत्तम श्रावको गृहाश्रमथी आत्मसाधनने साधे छे; तेओनो गृहाश्रम पण वखणाय छे

ते उत्तम पुरुष, सामायिक, क्षमापना, चोविहार प्रत्याख्यान इ० यम नियमने सेवे छे

परपत्नि भणी मा बहेननी दृष्टि राखे छे

सत्पात्रे यथाशक्ति दान दे छे.

शात, मधुरी अने कोमळ भाषा बोले छे.

सत्शास्त्रनुं मनन करे छे

रने त्यांसुधी उपजीविकामां पण माया, कपट, इ० करतो नथी

स्त्री, पुत्र, मात, तात, मुनि अने गुरु ए सघळाने यथायोग्य सन्मान आपे छे.

मावापने धर्मनो बोध आपे छे

यत्नथी घरनी स्वच्छता, रांधवुं, सींधवुं, शयन इ० रखावे छ

पोते विचक्षणताथी वर्ती स्त्री, पुत्रने विनयी अने धर्मी करे छे

कुटुंबमां संपनी वृद्धि करे छे

आवेला अतिथिनुं यथायोग्य सन्मान करे छे.

याचकने क्षुधातुर राखतो नथी

सत्पुरुषोनो समागम, अने तेओनो बोध धारण करे छे

समर्यादा अने संतोषयुक्त निरंतर वर्ते छे

जे यथाशक्ति शास्त्रसंचय घरमां राखे छे

अल्प आरंभथी जे व्यवहार चलावे छे

आवो गृहस्थावास उत्तम गतिनुं कारण थाय, एम ज्ञानीओ कहे छे

शिक्षापाठ १३ जिनेश्वरनी भक्ति भाग १

जिज्ञासु–विचक्षण सत्य! कोई शंकरनी, कोई ब्रह्मानी, कोई विष्णुनी, कोई सूर्यनी, कोइ अग्निनी, कोइ भवानीनी, कोई पेगम्बरनी अने कोइ क्राइस्टनी भक्ति करे छे एओ भक्ति करीने शु आशा राखता हशे?

सत्य–प्रिय जिज्ञासु, ते भाविक मोक्ष मेळववानी परम आशाथी ए देवोने भजे छे

जिज्ञासु–कहो त्यारे, एथी तेओ उत्तम गति पामे एम तमारु मत छे?

सत्य–एओनी भक्तिवडे तेओ मोक्ष पामे एम हु कही शकतो नथी. जेओने ते परमेश्वर कहे छे तेओ कइ मोक्षने पाम्या नथी; तो पछी उपासकने ए मोक्ष क्याथी आपे? शंकर वगेरे कर्मक्षय करी शक्या नथी अने दूषणसहित छे एथी ते पूजवायोग्य नथी

जिज्ञासु–ए दूषणो कया कया ते कहो?

सत्य–अज्ञान, निद्रा, मिथ्यात्व, राग, द्वेष, अविरति, भय, शोक, जुगुप्सा, दानातराय, लाभातराय, वीर्यातराय अने उपभोगातराय काम, हास्य, रति, अने अरति ए अढार दूषणमानु एक दूषण होय तोपण ते अपूज्य छे एक समर्थ पडिते पण कह्यु छे के, 'परमेश्वर छउ' एम मिथ्या रीते मनावनारा पुरुषो पोते पोताने ठगे छे, कारण पडखामा स्त्री होवाथी तेओ विषयी ठरे छे, शस्त्र धारण करेला होवाथी द्वेषी ठरे छे. जपमाळा धारण कर्याथी तेओनु चित्त व्यग्र छे एम सूचवे छे, 'मारे शरणे आव, हु सर्व पाप हरी लउ' एम कहेनारा अभिमानी अने नास्तिक ठरे छे आम छे तो पछी

बीजाने तेओ केम तारी शके? वळी केटलाक अवतार लेवारूपे परमेश्वर कहेवराव छे तो त्या तेओने अमुक कर्मनुं भोगववुं बाकी छे एम सिद्ध थाय छ

जिज्ञासु–भाई, त्यारे पूज्य कोण? अने भक्ति कोनी करवी के जेवडे आत्मा स्वशक्तिनो प्रकाश करे

सत्य–शुद्ध सच्चिदानंदस्वरूप जीवनसिद्ध भगवान् तेम ज सर्व दूषणरहित, कर्ममलहीन, मुक्त, वीतराग सकळ भयरहित, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी आत्मशक्ति प्रकाश पामे छे

जिज्ञासु–एओनी भक्ति करवाथी आपणने तेओ मोक्ष आपे छ एम मानवु खरु?

सत्य–भाई जिज्ञासु, ते अनतज्ञानी भगवान् तो निरागी अने निर्विकार छे एने स्तुति निंदानु आपणने कंइ फळ आपवानु प्रयोजन नथी आपणो आत्मा अज्ञानी अने मोहांध थइने जे कर्मदळथी घेरायेलो छे ते कर्मदळ टाळवा अनुपम पुरुषार्थनु अवश्य छे सर्व कर्मदळ क्षय करी अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत चारित्र, अनत वीर्य, अने स्वस्वरूपमय थया एवा जिनेश्वरोनु स्वरूप आत्मानी निश्चयनये रिद्धि होवाथी ते भगवाननु स्मरण, चिंतवन, ध्यान अने भक्ति ए पुरुषार्थता आपे छे विकारथी आत्मा विरक्त करे छे शांति अन निर्जरा आपे छे जेम तरवार हाथमां लेवाथी शौर्यवृत्ति अने भाग पीवाथी निशो उत्पन्न थाय छे, तेम ए गुणचिंतवनथी आत्मा स्वस्वरूपानंदनी श्रेणिए चढतो जाय छे. दर्पण जोतां जेम मुखाकृतिनु भान थाय छे तेम, सिद्ध के जिनेश्वरस्वरूपनां चिंतवनरूप दर्पणथी आत्मस्वरूपनु भान थाय छे

शिक्षापाठ १४. जिनेश्वरनी भक्ति भाग २

जिज्ञासु–आर्य सत्य ! सिद्धस्वरुप पामेला ते जिनेश्वरो तो सघळा पूज्य छे; त्यारे नामथी भक्ति करवानी कइ जरूर छे ?

सत्य–हा, अवश्य छे. अनंत सिद्धस्वरूपने ध्याता जे शुद्ध स्वरूपना विचार थाय ते तो कार्य; परंतु ए जेवडे ते स्वरूपने पाम्या ते कारण कयुं ? ए विचारता उग्र तप, महान् वैराग्य, अनंत दया महान् ध्यान ए सघळानुं स्मरण थशे, एओना अर्हंत तीर्थंकरपदमा जे नामथी तेओ विहार करता हता ते नामथी तेओना पवित्र आचार अने पवित्र चरित्रो अंतःकरणमा उदय पामशे जे उदय परिणामे महा लाभदायक छे जेम महावीरनुं पवित्र नाम स्मरण करवाथी तेओ कोण ? क्यारे ? केवा प्रकारे सिद्धि पाम्या ? ए आदि चरित्रोनी स्मृति थशे; अने एथी आपणे वैराग्य, विवेक इत्यादिकनो उदय पामीए

जिज्ञासु—पण लोगस्समा तो चोवीश जिनेश्वरना नामोनुं सूचवन कर्युं छे ? एनो हेतु शु छे ते मने समजावो

सत्य–आ काळमा आ क्षेत्रमा जे चोवीश जिनेश्वरो थया एमना नामोनुं अने चरित्रोनुं स्मरण करवाथी शुद्ध तत्त्वनो लाभ थाय. वैरागीनुं चरित्र वैराग बोधे छे. अनंत चोवीशीना अनंत नाम सिद्धस्वरूपमा समग्रे आवी जाय छे. वर्त्तमानकाळना चोवीश तीर्थंकरना नाम आ काळे लेवाथी काळनी स्थितिनुं बहु सूक्ष्मज्ञान पण साभरी आवे छे. जेम एओना नाम आ काळमां लेवाय छे, तेम चोवीशी चोवीशीनां नाम काळ अने चोवीशी फरता लेवाता जाय छे; एटले अमुक नाम लेवा एम कइ हेतु नथी परंतु तेओना गुणना पुरुषार्थनी स्मृति माटे वर्त्तती चोवीशीनी स्मृति करवी एम तत्त्व

रह्यु छे तेओना जन्म, विहार, उपदेश ए सघळुं नामनिक्षेपे जाणी शकायछे ए वडे आपणो आत्मा प्रकाश पामे छे सर्प जेम मोरलीना नादथी जागृत थाय छे, तेम आत्मा पोतानी सत्य रिद्धि सांभळता ते मोहनिद्राथी जागृत थाय छे

जिज्ञासु—मने तमे जिनेश्वरनी भक्ति संबधी बहु उत्तम कारण कह्यु जिनेश्वरनी भक्ति कंइ फळदायक नथी एम आधुनिक केळवणीथी मने आस्था थइ हती ते नाश पामी छे जिनेश्वर भगवाननी भक्ति अवश्य करवी जोइए ए हुं मान्य राखु छउं

सत्य—जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी अनुपम लाभ छे, एना कारणो महान् छे, तेमना परम उपकारने लीधे पण तेओनी भक्ति अवश्य करवी जोइए वळी तेओना पुरूषार्थेनु स्मरण थता पण शुभ वृत्तिओनो उदय थाय छे जेम जेम श्री जिनना स्वरूपमा वृत्ति लय पामे छे, तेम तेम परम शांति प्रगटे छे एम जिनभक्तिना कारणो अत्रे सक्षेपमा कह्या छे ते आत्मार्थीओए विशेषपणे मनन करवायोग्य छे

शिक्षापाठ १५ भक्तिनो उपदेश

तोटक छंद

शुभ शीतळतामय छाय रही,
मनवांछित ज्या फळपक्ति कही,
जिन भक्ति ग्रहो तरु कल्प अहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे,
मन ताप उताप तमाम मटे,
अति निर्जरता वण दाम ग्रहो,
भजिने भगवत भवत ल्हो. २.

समभावि सदा परिणाम थशे,
जडमंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजिने भगवत भवन लहो ३.

शुभ भाववडे मन शुद्ध करो,
नवकार महा पदने समरो,
नहि एह समान सुमंत्र कहो,
भजिने भगवत भवंत लहो ४.

करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा,
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो,
भजिने भगवत भवत ल्हो ५.

शिक्षापाठ १८ खरी महत्ता

केटलाक लक्ष्मीथी करीने महत्ता मळे छे एम माने छे, केटलाक महान् कुटुंबथी महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक पुत्र वडे करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक अधिकारथी महत्ता मळे छे एम माने छे, पण ए [illegible] विवेकथी जोता मिथ्या छे

जेमा महत्ता मनाय छे तेमा महत्ता नथी, पण लघुता छे लक्ष्मीथी ससारमा खान, पान, मान, अनुचरो पर आज्ञा, वैभव ए सघळु मळे छे, अने ए महत्ता छे, एम तमे मानता हशो, पण एटलेथी एन महत्ता मानवी जोइती नथी लक्ष्मी अनेक पाप वडे करीने पेदा थाय छे आव्या पछी अभिमान, बेभानता, अने मूढता आपे छे कुटुंब-समुदायनी महत्ता मेळववा माटे तेनुं पालणपोषण करवु पडे छे त वडे पाप अने दु ख सहन करवा पडे छे आपणे उपाधिथी पाप करी एनुं उदर भरवु पडे छे पुत्रथी वंश शाश्वत नाम रहेतुं नथी, एने माटे पण अनेक प्रकारनां पाप अने उपाधि वेठवी पडे छे, छतां एथी आपणु मगळ शुं थाय छे ? अधिकारथी परतत्रता के अमलमद आवे छे, अने एथी जुल्म, अनीति, लाच तेम ज अन्याय करवा पडे छे, के थाय छे कहो त्यारे एमां महत्ता शानी छे ? मात्र पापजन्य कर्मनी पापी कर्म वडे करी आत्मानी नीच गति थाय छे; नीच गति छे त्या महत्ता नथी पण लघुता छे

आत्मानी महत्ता तो सत्य वचन, दया, क्षमा, परोपकार अने समतामां रही छे लक्ष्मी इ० तो कर्ममहत्ता छे आम छतां लक्ष्मीथी शाणा पुरुषो दान दे छे, उत्तम विद्याशाळाओ स्थापी परदु खभंजन थाय छे एक परणेली स्त्रीमा ज मात्र वृत्ति रोकी परस्त्री तरफ पुत्री भावथी जुए छे कुटुंब वडे करीने अमुक समुदायनु हित काम करे छे पुत्र वडे तेने संसारमां भार आपी पोते धर्ममार्गमां प्रवेश करे छे अधिकारथी डहापण वडे आचरण करी राजा, प्रजा बन्नेनुं हित करी, धर्मनीतिनो प्रकाश करे छे, एम करवाथी केटलीक महत्ता पमाय खरी छतां ए महत्ता चोक्कस नथी, मरणभय माथे रह्यो छे, धारणा धरी रहे छे योजेली योजना के विवेक वखते हृदयमांथी जतां रहे एवो संसारमोह छे एथी आपणे एम निसशय समजवु के, सत्य

वचन, दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य अने समता जेवी आत्ममहत्ता कोई स्थळे नथी. शुद्ध पंचमहाव्रतधारी भिक्षुके जे रिद्धि अने महत्ता मेळवी छे, ते ब्रह्मदत्त जेवा चक्रवर्त्तीए लक्ष्मी, कुटुंब, पुत्र के अधिकारथी मेळवी नथी, एम मारुं मानवुं छे !

शिक्षापाठ १७ बाहुबळ

बाहुबळ एटले पोतानी भूजानुं बळ एम अहीं अर्थ करवानो नथी, कारण के, बाहुबळ नामना महापुरुषनुं आ एक नानुं पण अद्‌भुत चरित्र छे

सर्व संग परित्याग करी, भगवान् ऋषभदेवजी भरत अने बाहुबळ नामना पोताना बे पुत्रोने राज्य सोंपी विहार करता हता त्यारे, भरतेश्वर चक्रवर्त्ती थयो आयुधशाळामां चक्रनी उत्पत्ति थया पछी प्रत्येक राज्यपर तेणे पोतानी आम्नाय बेसाडी, अने छखंडनी प्रभुता मेळवी मात्र बाहुबळेज ए प्रभुता अंगीकार न करी आथी परिणाममां भरतेश्वर अने बाहुबळने युद्ध मंडायुं घणा वखत सुधी भरतेश्वर, के बाहुबळ ए बन्नेमांथी एके हठ्या नहीं, त्यारे क्रोधावेशमां आवी जइ भरतेश्वरे बाहुबळ पर चक्र मूक्युं एक वीर्यथी उत्पन्न थयेला भाइपर चक्र प्रभाव न करी शके. आ नियमने लीधे ते चक्र फरीने पाछुं भरतेश्वरना हाथमां आव्युं भरते चक्र मूकवाथी बाहुबळने बहु क्रोध आव्यो तेणे महा बलवत्तर मुष्टि उपाडी. तत्काळ त्यां तेनी भावनानुं स्वरूप फर्युं ते विचारी गयो के, हुं आ बहु निंदनीय कर्म करुं छउं, आनुं परिणाम केवुं दु:खदायक छे ! भले भरतेश्वर राज्य भोगवो मिथ्या, परस्परनो नाश शा माटे करवो ?

आ मुष्टि मारवी योग्य नथी, तेम उगामी ते हवे पाछी वाळवी पण योग्य नथी एम विचारी तेणे पंच मुष्टि केश लुंचन कर्युं, अने त्याथी मुनिभावे चाली नीकळ्या भगवान आदीश्वर ज्यां अढाणु दिक्षित पुत्रोथी तेमज आर्य, आर्याथी विहार करता हता त्यां जवा इच्छा करी, पण मनमां मान आव्युं के त्यां हुं जउश तो माराथी नाना अठाणु भाइने वंदन करवुं पडशे, माटे त्यां तो जवुं योग्य नथी एम मानवृत्तिथी वनमां ते एकाग्र ध्याने रह्या हळवे हळवे बार मास थइ गया महा तपथी काया हाडकानो माळो थइ गइ, ते सुका झाड जेवा देखावा लाग्या, परंतु ज्यांसुधी माननो अंकुर तेना अंतःकरणथी खस्यो नहोतो त्यांसुधी ते सिद्धि न पाम्या ब्राह्मी अने सुंदरीए आवीने तेने उपदेश कर्यो "आर्य वीर! हवे मदोन्मत्त हाथीपरथी उतरो, एनाथी तो बहु शाल्युं एओना आ वचनोथी बाहुबळ विचारमां पड्या विचारतां विचारतां तेने भान थयुं के सत्य छे, हुं मानरूपी मदोन्मत्त हाथीपरथी हजु क्यां उतर्यो छउं? हवे एथी उतरवुं ए ज मंगळकारक छे, ' आम विचारी तेणे वंदन करवाने माटे पगलुं भर्युं के ते अनुपम दिव्य कैवल्य कमळाने पाम्या

वाचनार, जुओ, मान ए केवी दुरित वस्तु छे!!

शिक्षापाठ १८ चार गति

जीव शातावेदनीय, अशातावेदनीय वेदतो शुभाशुभ कर्मना फळ भोगववा आ संसारवनमां चार गतिने विषे भम्या करेछे, तो ए चार गति खचित जाणवी जोइए

१ नरकगति–महारंभ, मदिरापान, मांसभक्षण, ईत्यादिक तीव्र हिंसाना करनार जीवो अघोर नरकमां पडे छे त्यां लेश पण शाता, विश्राम के सुख नथी महा अन्धकार व्याप्त छे अगछेदन सहन करवुं पडे छे, अग्निमां बळवुं पडे छे, अने छरपलानी धार जेवुं जळ पीवुं पडे छे अनंत दु:खथी करीने ज्यां प्राणीभूते साकड, अशाता अने विलविलाट सहन करवा पडे छे आवा जे दु:ख तेने केवल-ज्ञानीओ पण कही शकता नथी अहोहो ! ! ते दु:ख अनंतिवार आ आत्माए भोगव्यां छे.

२ तिर्यंचगति–छल, जूठ प्रपंच ईत्यादिक करीने जीव सिंह, वाघ, हाथी, मृग, गाय, भेंस, बळद ईत्यादिक तिर्यंचना शरीर धारण करे छे ते तिर्यंचगतिमां भूख, तरश, ताप, वध, बंधन, ताडन, भारवहन ईत्यादिना दुःखने सहन करे छे

३ मनुष्यगति–खाद्य, अखाद्य विषे विवेकरहित छे, लज्जाहीन, माता पुत्री साथे कामगमन करवामां जेने पापापापनुं भान नथी, निरंतर मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रीगमन वगेरे महा पातक कर्या करे छे, ए तो जाणे अनार्य देशना अनार्य मनुष्य छे आर्य देशमां पण क्षत्री, ब्राह्मण, वैश्य प्रमुख मतिहीन, दरिद्रि, अज्ञान अने रोगथी पीडित मनुष्य छे, मान, अपमान ईत्यादि अनेक प्रकारना दु:ख तेओ भोगवी रह्या छे

४ देवगति–परस्पर वेर, झेर, क्लेश, शोक, मत्सर, काम, मद, क्षुधा आदिथी देवताओ पण आयुष व्यतीत करी रह्या छे, ए देवगति

एम चार गति सामान्य रूपे कही आ चारे गतिमां मनुष्यगति सौथी श्रेष्ठ अने दुर्लभ छे, आत्मानुं परमहित–मोक्ष गति, एथी

पमाय छे; ए मनुष्यगतिमा पण केटलाय दु ख अने आत्मसाधनमा अतरायो छे

एक तरुण सुकुमारने रोमे रोमे लालचोळ सुया घोचवाथी जे असह्य वेदना उपजे छे ते करता आठगुणी वेदना गर्भस्थानमा जीव ज्यारे रहे छे त्यारे पामे छे लगभग नव महिना मळ, मूत्र, लोही, परु आदिमा अहोरात्र मूर्छागत स्थितिमा वेदना भोगवी भोगवीने जन्म पामे छे गर्भस्थाननी वेदनाथी अनतगुणी वेदना जन्मसमये उत्पन्न थाय छे त्यार पछी बाळावस्था पमाय छे मळ, मूत्र, धूळ अने नग्नावस्थामा अणसमजथी रझळी रडीने ते बाळावस्था पूर्ण थाय छे, अने युवावस्था आवे छे धन उपार्जन करवा माटे नाना प्रकारना पापमा पडवु पडे छे ज्याथी उत्पन्न थयो छे त्या एटले विषय विकारमा वृत्ति जाय छे उन्माद, आळस, अभिमान, निंद्यदृष्टि, सयोग, वियोग एम घटमाळमा युवावय चाल्यु जाय छे, त्या वृद्धावस्था आवे छे, शरीर कपे छे, मुखे लाळ झरे छे त्वचापर करोचळी पडी जाय छे सुघवु, साभळवु अने देखवु ए शक्तिओ केवळ मद थइ जाय छे केश धवळ थइ खरवा मडे छे, चालवानी आय रहेती नथी हाथमा लाकडी लई लडथडीआ खाता चालवु पडे छे का तो जीवन पर्यंत खाटले पड्या रहेवु पडे छे श्वास, खासी इत्यादिक रोग आवीने वळगे छे, अने थोडाकाळमा काळ आवीने कोळीओ करी जाय छे आ देहमाथी जीव चाली नीकळे छे काया हती नहती थइ जाय छे मरणसमये पण केटली बधी वेदना छे? चतुर्गतिना दु खमा जे मनुष्यदेह श्रेष्ठ तेमा पण केटला बधा दु ख रह्या छे! तेम छता उपर जणाव्या प्रमाणे अनुक्रमे काळ आवे छे एम पण नथी गमे ते वखते ते आवीने लइ जाय छे माटे ज विचक्षण पुरुषो प्रमाद विना आत्मकल्याणने आराधे छे

शिक्षापाठ १९ संसारने चार उपमा भाग १

१. संसारने तत्त्वज्ञानीओ एक महासमुद्रनी उपमा पण आपे छे. ससाररूपी समुद्र अनत अने अपार छे अहो लोको ! एनो पार पामवा पुरुषार्थनो उपयोग करो ! उपयोग करो !! आम एमना स्थळे स्थळे वचनो छे ससारने समुद्रनी उपमा छाजती पण छे समुद्रमा जेम मोजानी छोळो उछळ्या करे छे, तेम ससारमा विषयरूपी अनेक मोजाओ उछळे छे जळनो उपरथी जेम सपाट देखाव छे तेम, ससार पण सरळ देखाव दे छे समुद्र जेम क्याक वहु उडो छे, अने क्याक भमरीओ खवरावे छे तेम, ससार कामविषय प्रपचादिकमा वहु उडो छे ते मोहरूपी भमरीओ खवरावे छे थोडु जळ छता समुद्रमा जेम उभा रहेवाथी कादवमा खुची जइए छीए तेम, ससारना लेश प्रसगमा ते तृष्णारूपी कादवमा खुंचवी दे छे समुद्र जेम नाना प्रकारना खराबा, अने तोफानथी नाव के वहाणने जोखम पहोंचाडे छे, तेम स्त्रीओरूपी खरावा अने कामरूपी तोफानथी ससार आत्माने जोखम पहोंचाडे छे. समुद्र जेम अगाध जळथी शीतल देखातो छता वडवानळ नामना अग्निनो तेमा वास छे तेम ससारमा मायारूपी अग्नि नव्याज करे छे समुद्र जेम चोमासामा वधारे जळ पामीने उडो उतरे छे तेम पापरूपी जळ पामीने ससार उडो उतरे छे एटले मजबुत पाया करतो जाय छे

२. ससारने बीजी उपमा अग्निनी छाजे छे अग्निथी करीने जेम महा तापनी उत्पत्ति छे, तेम ससारथी पण त्रिविध तापनी उत्पत्ति छे. अग्निथी बळेलो जीव जेम महा विलविलाट करे छे, तेम ससारथी बळेलो जीव अनत दु खरूप नरकथी असह्य विलविलाट करे छे अग्नि जेम सर्व वस्तुनो भक्ष करी जाय छे, तेम

ससारना मुखमा पडेलाने ते भक्ष करी जाय छे अग्निमा जेम जेम घी अने इधन होमाय छे, तेम तेम ते वृद्धि पामे छे; तेवी ज रीते ससाररूप अग्निमां तीव्र मोहरूप घी, अने विषयरूप इधन होमाता ते वृद्धि पामे छे

३ संसारने त्रीजी उपमा अंधकारनी छाजे छे अंधकारमा जेम सींदरी, सर्पनु भान करावे छे, तेम ससार सत्यने असत्यरूप बतावे छे, अधकारमा जेम प्राणीओ आम तेम भटकी विपत्ति भोगवे छे, तेम ससारमा बेभान थइने अनत आत्माओ चतुर्गतिमा आम तेम भटक छे अधकारमां जेम काच अने हीरानु ज्ञान थतुं नथी, तेम ससाररूपी अधकारमा विवेक अविवेकनु ज्ञान थतु नथी जेम अंधकारमा प्राणीओ छती आंखे अध बनी जाय छे, तेम छती शक्तिए ससारमा तेओ मोहांध बनी जाय छे अधकारमां जेम घुवड ईसादिकनो उपद्रव वधे छे, तेम ससारमा लोभ, मायादिकनो उपद्रव वधे छे एम अनेक भेदे जोता ससार ते अधकाररूप ज जणाय छे

शिक्षापाठ २० संसारने चार उपमा भाग २

४ संसारने चोथी उपमा शकटचक्रनी एटले गाडाना पैडानी छाजे छे चालतां, शकटचक्र जेम फरतुं रहे छे, तेम ससारमा प्रवेश करता ते फरवाख्पे रहे छे. शकटचक्र जेम धरीविना चाली शकतुं नथी, तेम ससार मिथ्यात्वरूपी धरी विना चाली शकतो नथी शकटचक्र जेम आरावडे करीने रह्युं छे, तेम ससार शकट प्रमादादिक आराथी टक्यो छे एम अनेक प्रकारथी शकटचक्रनी उपमा पण वने लागी शके छे

एवी रीते ससारने जेटली अग्रोउपमा आपो एटली थोडी छे. मुख्यपणे ए चार उपमा आपणे जाणी हवे एमाथी तत्त्व लेवु योग्य छे:—

१. सागर जेम मजबुत नाव अने माहितगार नाविकथी तरीने पार पमाय छे, तेम सद्धर्मरूपी नाव, अने सद्गुरुरूपी नाविकथी ससारसागर पार पामी शकाय छे. सागरमा जेम डाह्या पुरुषोए निर्विघ्न रस्तो शोधी काढ्यो होय छे, तेम जिनेश्वर भगवाने तत्त्वज्ञानरूप निर्विघ्न उत्तम राह बताव्यो छे.

२ अग्नि जेम सर्वने भक्ष करी जाय छे, परतु पाणीथी बुझाइ जाय छे; तेम वैराग्यजळथी ससारअग्नि बुझवी शकाय छे.

३ अधकारमा जेम दीवो लइ जवाथी प्रकाश थता, जोइ शकाय छे; तेम तत्त्वज्ञानरूपी निर्बुज दीवो ससाररूपी अधकारमा प्रकाश करी सत्य वस्तु बतावे छे

४. शकटचक्र जेम बळद विना चाली शकतु नथी, तेम ससारचक्र राग द्वेपविना चाली शकतु नथी

एम ए ससारदरदनु निवारण उपमावडे अनुपानादि प्रतिकार साथे कह्यु ते आत्महितैपीए निरतर मनन करवु; अने बीजाने बोधवु.

शिक्षापाठ २१ बार भावना

वैराग्यनी, अने एवा आत्महितैषि विषयोनी सुदृढता थवा माटे बार भावना चिंतववानु तत्त्वज्ञानीओ कहे छे

१ शरीर, वैभव, लक्ष्मी, कुटुंब परिवारादिक सर्व विनाशी छे जीवनो मूळ धर्म अविनाशी छे, एम चिंतववुं ते पहेली 'अनित्यभावना'

२ संसारमां मरण समये जीवने शरण राखनार कोई नथी, मात्र एक शुभ धर्मनुं ज शरण सत्य छे, एम चिंतववुं ते बीजी 'अशरणभावना'

३ "आ आत्माए संसारसमुद्रमां पर्यटन करतां करतां सर्व भव कीधा छे, ए संसारजंजीरथी हुं क्यारे छूटीश? ए संसार मारो नथी, हुं मोक्षमयी छु," एम चिंतववु ते त्रीजी 'संसारभावना'

४ "आ मारो आत्मा एकलो छे, ते एकलो आव्यो छे, एकलो जशे, पोताना करेला कर्म एकलो भोगवशे" एम चिंतववु ते चोथी 'एकत्वभावना'

५ आ संसारमां कोइ कोइनुं नथी एम चिंतववु ते पांचमी 'अन्यत्वभावना'

६ "आ शरीर अपवित्र छे, मळमूत्रनी खाण छे, रोग जराने रहेवानुं धाम छे, ए शरीरथी हु न्यारो छउं" एम चिंतववुं ते छट्ठी 'अशुचिभावना'

७ राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व ईत्यादिक सर्व आश्रव छे एम चिंतववु ते सातमी 'आश्रवभावना'

८ ज्ञान, ध्यानमा जीव प्रवर्त्तमान थइने नवा कर्म बांधे नहीं एवी चिंतवना करवी ते आठमी 'सम्वरभावना'

९ ज्ञानसहित क्रिया करवी ते निर्जरानु कारण छे एम चिंतववु ते नवमी 'निर्जराभावना'

१० लोकस्वरुपनु उत्पत्ति स्थिति विनाशस्वरुप विचारवु ते दशमी 'लोकस्वरुपभावना'

११. संसारमा भमता आत्माने सम्यग्ज्ञाननी प्रसादी प्राप्त थवी दुर्लभ छे; वा सम्यग्ज्ञान पाम्यो, तो चारित्र सर्व विरति-परिणामरूप धर्म पामवो दुर्लभ छे; एवी चिंतवना ते अग्यारमी 'बोधदुर्लभभावना'

१२ धर्मना उपदेशक तथा शुद्ध शास्त्रना बोधक एवा गुरु अने एनु श्रवण मळवु दुर्लभ छे एवी चिंतवना ते बारमी 'धर्मदुर्लभभावना.'

आ बार भावनाओ मननपूर्वक निरंतर विचारवाथी सत्पुरुषो उत्तम पदने पाम्या छे, पामे छे, अने पामशे

शिक्षापाठ २२ कामदेव श्रावक

महावीर भगवानना समयमा द्वादशव्रतने विमल भावथी धारण करनार, विवेकी अने निर्ग्रंथवचनानुरक्त कामदेव नामना एक श्रावक तेओना शिष्य हता ... सभामा इंद्रे एक वेळा ...

धर्मभक्तनी प्रशंसा करी. एवामां त्यां एक तुच्छ बुद्धिवान देव बेठो हतो तेणे एवी सुन्दरतानो अविश्वास बताव्यो, अने कह्युं के ज्यांसुधी परिषह पड्या न होय त्यांसुधी बधाय सहनशील अने धर्मदृढ जणाय आ मारी वात हुं एने चळावी आपीने सत्य करी देखाडुं धर्मदृढ कामदेव ते वेळा कायोत्सर्गमां लीन हता देवताए प्रथम हाथीनुं रूप वैक्रिय कर्युं; अने पछी कामदेवने खूब गुंद्या तोपण ते अचळ रह्या, एटले मुशळ जेवुं अंग करीने काळावर्णनो सर्प थईने भयंकर फुंकार कर्या तोय कामदेव कायोत्सर्गथी लेश चळ्या नहीं; पछी अट्टहास्य करता राक्षसनो देह धारण करीने अनेक प्रकारना परिषह कर्या, तोपण कामदेव कायोत्सर्गथी चळ्या नहीं सिंह वगेरेना अनेक भयंकर रूप कर्या तोपण कायोत्सर्गमां लेश हीनता कामदेवे आणी नहीं एम रात्रिना चारे पहोर देवताए कर्या कर्युं, पण ते पोतानी धारणामां फाव्यो नहीं पछी ते देवे अवधिज्ञानना उपयोगवडे जोयुं तो कामदेवने मेरुना शिखरनी पेरे अडोल रह्या दीठा कामदेवनी अद्‌भुत निश्चलता जाणी तेने विनयभावथी प्रणाम करी पोतानो दोष क्षमावीने ते देवता स्वस्थानके गयो

कामदेव श्रावकनी धर्मदृढता एवो बोध करे छे के, सत्यधर्म अने सत्य प्रतिज्ञामां परम दृढ रहेवुं, अने कायोत्सर्ग आदि जेम बने तेम एकाग्र चित्तथी अने सुदृढताथी निर्दोष करवां चलविचल भावथी कायोत्सर्गादि बहु दोषयुक्त थाय छे पाई जेवा द्रव्यलाभ माटे धर्मशास्त्र काढनारथी धर्ममां दृढता क्याथी रही शके? अने रही शके तो केवी रहे! ए विचारतां खेद थाय छे

शिक्षापाठ २३ सत्य

सामान्य कथनमा पण कहेवाय छे के, सत्य ए आ जगत्नु धारण छे; अथवा सत्यने आधारे आ जगत् रह्यु छे ए कथनमाथी एवी शिक्षा मळे छे के, धर्म, नीति, राज अने व्यवहार ए सत्यवडे प्रवर्त्तन करी रह्या छे; अने ए चारे न होय तो जगत्नु रूप केवु भयकर होय? ए माटे सत्य ए जगत्नु धारण छे एम कहेवु ए कइ अतिशयोक्ति जेवु, के नही मानवा जेवु नथी

वसुराजानु एक शब्दनु असत्य बोलवु केटलु दु खदायक थयु हतु ते प्रसग विचार करवा माटे अही कहीशु'

वसुराजा, नारद अने पर्वत ए त्रणे एक गुरु पासेथी विद्या भण्या हता पर्वत अध्यापकनो पुत्र हतो, अध्यापके काळ कर्यो एथी पर्वत तेनी मा सहित वसुराजाना दरबारमा आवी रह्यो हतो एक रात्रे तेनी मा पासे बेठी छे; अने पर्वत तथा नारद शास्त्राभ्यास करे छे एमा एक वचन पर्वत एवु बोल्यो के, 'अजाहोतव्य.' त्यारे नारदे पूछ्यु "अज ते शु पर्वत ?" पर्वते कह्यु' "अज ते बोकडो" नारद बोल्यो "आपणे त्रणे जण तारा पिता कने भणता हता त्यारे, तारा पिताए तो 'अज' ते त्रण वर्षनी 'व्रीहि' कही छे; अने तु अवळु शा माटे कहे छे? एम परस्पर वचनविवाद वध्यो. त्यारे पर्वते कह्यु' "आपणने वसुराजा कहे ते खरु" ए वातनी नारदे हा कही; अने जीते तेने माटे अमुक सरत करी पर्वतनी मा जे पासे बेठी हती तेणे आ सांभळ्यु 'अज' एटले 'व्रीहि' एम तेने पण याद हतु; सरतमा पोतानो पुत्र हारशे एवा भयथी पर्वतनी मा रात्रे, [illegible] गइ अने पूछ्यु. "राजा, 'अज' एटले शु?" वसुर[illegible] कह्यु' "अज एटले [illegible]

त्यारे पर्वतनी माए राजाने कह्यु. "मारा पुत्रथी 'बोकडो' कहेवायो छे माटे, तेनो पक्ष करवो पडशे, तमने पूछवा माटे तेओ आवशे" वसुराजा बोल्यो. "हु असत्य केम कहु? माराथी ए बनी शके नही" पर्वतनी माए कह्यु "पण जो तमे मारा पुत्रनो पक्ष नहीं करो तो तमने हु हत्या आपीश" राजा विचारमां पडी गयो के, सत्यवडे करीने हु मणिमय सिंहासनपर अद्धर बेसु छउं लोकसमुदायने न्याय आपु छउ लोक पण एम जाणे छे के, राजा सत्यगुणे करीने सिंहासनपर अंतरिक्ष बेसे छे हवे केम करवु? जो पर्वतनो पक्ष न करु तो ब्राह्मणी मरे छे, ए वळी मारा गुरुनी स्त्री छे न चाल्ता छेवटे राजाए ब्राह्मणीने कह्यु "तमे भले जाओ, हु पर्वतनो पक्ष करीश" आवो निश्चय करावीने पर्वतनी मा घेर आवी प्रभाते नारद, पर्वत अने तेनी मा विवाद करता राजा पासे आव्या राजा अजाण थई पूछवा लाग्यो के शुं छे पर्वत? पर्वते कह्यु, "राजाधिराज! अज ते शु? ते कहो" राजाए नारदने पुछ्यु "तमे शु कहो छो?" नारदे कह्यु' 'अज' ते त्रण वर्षनी 'व्रीहि' तमने क्यां नथी सांभरतु? वसुराजा बोल्यो' 'अज' एटले 'बोकडो,' पण 'व्रीहि' नहीं ते ज वेळा देवताए सिंहासनथी उछाळी हेठो नाख्यो, वसु काळ परिणाम पामी नरके गयो

आ उपरथी सामान्य मनुष्योए सत्य, तेमज राजाए न्यायमा अपक्षपात, अने सत्य बने ग्रहण करवा योग्य छे ए मुख्य बोध मळे छे

जे पाच महाव्रत भगवाने प्रणीत कर्या छे, तेमाना प्रथम महाव्रतनी रक्षाने माटे बाकीनां चार व्रत वाडरूपे छे, अने तेमा पण पहेली वाड ते सत्य महाव्रत छे ए सत्यना अनेक भेद सिद्धातथी श्रुत करवा अवश्यना छे

शिक्षापाठ २४ सत्संग

सत्सग ए सर्व सुखनु मूळ छे; सत्सगनो लाभ मळ्यो के तेना प्रभाववडे वाञ्छित सिद्धि थइ ज पडी छे गमे तेवा पवित्र थवाने माटे सत्सग श्रेष्ठ साधन छे, सत्सगनी एक घडी जे लाभ दे छे ते कुसगना एक कोट्यावधि वर्ष पण लाभ न दई शकता अधोगतिमय महा पापो करावे छे, तेमज आत्माने मलिन करे छे सत्सगनो सामान्य अर्थ एटलो छे के, उत्तमनो सहवास ज्या सारी हवा नथी आवती त्या रोगना वृद्धि थाय छे; तेम ज्या सत्सग नथी त्या आत्मरोग वधे छे दुर्गंधथी कटाळीने जेम नाके वस्त्र आडु दइए छीए, तेम कुसगथी सहवास बध करवानु अवश्यनु छे; ससार ए पण एक प्रकारनो सग छे, अने ते अनत कुसगरूप तेम ज दुःखदायक होवाथी त्यागवायोग्य छे गमे ते जातनो सहवास होय परतु जेवडे आत्मसिद्धि नथी ते सत्सग नथी आत्माने सत्य रग चढावे ते सत्सग. मोक्षनो मार्ग बतावे ते मैत्रि उत्तम शास्त्रमा निरतर एकाग्र रहेवु ते पण सत्सग छे, सत्पुरुषोनो समागम ए पण सत्सग छे मलीन वस्त्रने जेम साबु तथा जळ स्वच्छ करे छे तेम शास्त्र बोध अने सत्पुरुषोनो समागम, आत्मानी मलीनता टाळीने शुद्धता आपे छे जेनाथी हमेशनो परिचय रही राग, रग, गान, तान, अने स्वादिष्ट भोजन सेवाता होय ते तमने गमे तेवो प्रिय होय तोपण निश्चय मानजो के, ते सत्सग नथी, पण कुसग छे. सत्सगथी प्राप्त थयेलु एक वचन अमुल्य लाभ आपे छे. तत्त्वज्ञानीओए मुख्य बोध एवो कर्यो छे के, सर्व सग परित्याग करी, अतरमा रहेला सर्व विकारथी पण विरक्त रही एकातनु सेवन करो तेमा सत्सगनी स्तुति आवी जाय छे. केवळ एकात ते तो ध्यानमा रहेवु के योगाभ्यासमा रहेवु ए छे; परतु समस्वभाविनो [illegible] पाथी एक ज प्रकारनी

छ खंड साधी आणा मनावनार राजाधिराज, चक्रवर्त्ती कहेवाय छे. ए समर्थ चक्रवर्त्तीमां सुभुम नामे एक चक्रवर्त्ती थइ गयो छे एणे छ खंड साधी लीधा एटले चक्रवर्त्ती-पदवी ते मनायो, पण एटलेथी एनी मनोवांछा तृप्त न थइ, हजु ते तरस्यो रह्यो एटले धातकी खंडना छ खंड साधवा एणे निश्चय कर्यो. बधा चक्रवर्त्ती छ खंड साधे छे, अने हुं पण एटला ज साधुं तेमां महत्ता शानी? बार खंड साधवाथी चिरकाळ हुं नामांकित थइश, समर्थ आज्ञा जीवनपर्यंत ए खंडोपर मनावी शकीश, एवा विचारथी समुद्रमां चर्मरत्न मूक्युं, ते उपर सर्व सैन्यादिकनो आधार रह्यो हतो. चर्मरत्नना एक हजार देवता सेवक कहेवाय छे, तेमां प्रथम एकें विचार्युं के कोण जाणे केटलांय वर्ष आमाथी छूटको थशे? माटे देवांगनाने तो मळी आवुं एम धारी ते चाल्यो गयो, एवाज विचारे बीजो गयो, पछी त्रीजो गयो, अने एम करतां करतां हजारे चाल्या गया, त्यारे चर्मरत्न बूड्युं, अश्व, गज अने सर्व सैन्यसहित सुभुम नामनो ते चक्रवर्त्ती बूड्यो, पापभावनामां ने पापभावनामां मरीने ते अनंत दुःखथी भरेली सातमी तमतमप्रभा नर्कने विषे जइने पड्यो. जुओ! छ खंडनुं आधिपत्य तो भोगववुं रह्युं, परंतु अकस्मात् अने भयंकर रीते परिग्रहनी प्रीतिथी ए चक्रवर्त्तीनुं मृत्यु थयुं, तो पछी बीजा माटे तो कहेवुं ज शुं? परिग्रह ए पापनुं मूळ छे, पापनो पिता छे, अने एकादशव्रतने महा दोष दे एवो एनो स्वभाव छे. ए माटे थइने आत्महितैषिए जेम बने तेम तेनो त्याग करी मर्यादा पूर्वक वर्त्तन करवुं.

शिक्षापाठ २६ तत्त्व समजवुं

शास्त्रोना शास्त्रो मुख पाठ होय एवा पुरुषो घणा मळी शके; परंतु जेणे थोडां वचनो पर प्रौढ अने विवेकपूर्वक विचार करी शास्त्र जेटलुं ज्ञान हृदयगत कर्युं होय तेवा मळवा दुर्लभ छे. तत्त्वने पहोंची जवुं ए कंई नानी वात नथी. कूदीने दरियो ओळंगी जवो छे.

अर्थ एटले लक्ष्मी, अर्थ एटले तत्त्व अने अर्थ एटले शब्दनुं बीजुं नाम. आवा अर्थशब्दना घणा अर्थ थाय छे. पण 'अर्थ' एटले 'तत्त्व' ए विषयपर अहीं आगळ कहेवानुं छे. जेओ निर्ग्रंथप्रवचनमां आवेलां पवित्र वचनो मुखपाठे करे छे, ते तेओना उत्साहबळे सत्फळ उपार्जन करे छे; परंतु जो तेनो मर्म पाम्या होय तो एथी ए सुख, आनंद, विवेक अने परिणामे महद्भूत फळ पामे छे. अभणपुरुष सुंदर अक्षर अने ताणेला मिथ्या लीटा ए बेना भेदने जेटलुं जाणे छे, तेटलुं ज मुखपाठी अन्य ग्रंथ विचार अने निर्ग्रंथप्रवचनने भेद रूप माने छे, कारण तेणे अर्थ पूर्वक निर्ग्रंथ वचनामृतो धार्यां नथी, तेम ते पर यथार्थ तत्त्वविचार कर्यो नथी. जो के तत्त्वविचार करवामां समर्थ बुद्धिप्रभाव जोइए छीए; तोपण कंई विचार करी शके, पथ्थर पीगळे नहीं तोपण पाणीथी पलळे. तेम ज जे वचनामृतो मुखपाठे कर्यां होय ते अर्थ सहित होय तो बहु उपयोगी थई पडे, नहीं तो पोपटवाळुं राम नाम. पोपटने कोई परिचये रामनाम कहेता शीखवाडे; परंतु पोपटनी बला जाणे के राम ते दाडम के द्राक्ष. सामान्यार्थ समज्या वगर एवुं थाय छे. कच्छी वैश्योनुं दृष्टांत एक कहेवाय छे ते कंईक हास्ययुक्त छे परंतु एमाथी उत्तम शिक्षा ... छे, एटले अहीं

कच्छना कोई गाममां श्रावकधर्म पाळता रायशी, देवशी अने खेतशी एम त्रण नामधारी ओशवाळ रहेता हता. नियमित रीते तेओ संध्याकाळे, अने परोढिये प्रतिक्रमण करता हता. परोढिये रायशी अने संध्याकाळे देवशी प्रतिक्रमण करावता हता. रात्रि संबंधी प्रतिक्रमण रायशी करावतो, एने प्रसंगे 'रायशी पडिक्कमणु ठायमि' एम तेने बोलाववुं पडतुं. तेमज देवशीने 'देवशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम संबंध होवाथी बोलाववुं पडतुं. योगानुयोगे घणाना आग्रहथी एक दिवस संध्याकाळे खेतशीने बोलाववा बेसार्यो. खेतशीए ज्यां 'देवशी पडिक्कमणु ठायमि' एम आव्युं, त्यां 'खेतशी पडिक्कमणु ठायमि' ए वाक्यो लगावी दीधा! ए सांभळी सघळा हास्यग्रस्त थया अने पूछ्युं आम कां? खेतशी बोल्यो, वळी आम ते केम? त्यां उत्तर मळ्यो के, 'खेतशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम तमे केम बोलो छो? खेतशीए कह्युं, हुं गरीब छउं एटले मारुं नाम आव्युं त्यां पाधरी तकरार लई बेठा, पण रायशी अने देवशी माटे तो कोई दिवस कोई बोलता पण नथी. ए बन्ने केम 'रायशी पडिक्कमणु ठायमि' अने 'देवशी पडिक्कमणु ठायमि' एम कहे छे? तो पछी हुं 'खेतशी पडिक्कमणु ठायमि' एम कां न कहुं? एनी भद्रिकताए तो सघळाने विनोद उपजाव्यो, पछी अर्थनी कारण सहित समजण पाडी एटले खेतशी पोताना मुखपाठी प्रतिक्रमणथी शरमायो.

आ तो एक सामान्य वात छे, परंतु अर्थनी खूबी न्यारी छे. तत्त्वज्ञ तेपर बहु विचार करी शके. बाकी तो गोळ गळ्यो ज लागे, तेम निर्ग्रंथवचनामृतो पण सत्फळ ज आपे. अहो! पण मर्म पाम्यानी वातनी तो बलिहारी ज छे!

शिक्षापाठ २७ यतना

जेम विवेक ए धर्मनु मूळतत्व छे, तेम यतना ए धर्मनु उपतत्त्व छे विवेकथी धर्म तत्त्व ग्रहण कराय छे; तथा यतनाथी ते तत्त्व शुद्ध राखी शकाय छे, अने ते प्रमाणे प्रवर्त्तन करी शकाय छे पाच समितिरुप यतना तो बहु श्रेष्ठ छे, परतु ग्रहाश्रमीथी ते सर्व भावे पाळी शकाती नथी; छता जेटला भावांशे पाळी शकाय तेटला भावांशे पण सावधानीथी पाळी शकता नथी जिनेश्वर भगवते बोधेली स्थूळ अने सूक्ष्म दया प्रत्ये ज्या बेदरकारी छे, त्या ते बहु दोषथी पाळी शकाय छे ए यतनानी न्यूनताने लीधे छे उतावळी अने वेगभरी चाल, पाणी गळी तेनो सखाळो राखवानी अपूर्ण विधि, काष्ठादिक इंधननो वगर खंखेर्ये, वगर जोये उपयोग, अनाजमा रहेला सूक्ष्म जतुओनी अपूर्ण तपास, पुज्या प्रमाज्या वगर रहेवा दीधेला ठाम, अस्वच्छ राखेला ओरडा, आगणामा पाणीनु ढोळवु, एठनु राखी मूकवु, पाटला वगर धखधखती थाळी नीचे मूकवी, एथी पोताने आ लोकमा अस्वच्छता, अगवड, अनारोग्यता इत्यादिक फळरूप थाय छे; अने परलोकमा दु:खदायि महापापना कारण पण थइ पडे छे, ए माटे थइने कहेवानो बोध के चालवामा, बेसवामा, उठवामा, जमवामा अने बीजा हरेक प्रकारमा यतनानो उपयोग करवो एथी द्रव्ये अने भावे बन्ने प्रकारे लाभ छे चाल धीमी अने गभिर राखवी, घर स्वच्छ राखवा, पाणी विधिसहित गळाववु, काष्ठादिक इंधन खंखेरी वापरवा ए कइ आपणने अगवड पडतु काम नथी, तेम तेमा विशेष वखत जतो नथी एवा नियमो दाखल करी दीधा पछी पाळवा मुश्केल नथी एथी बिचारा ~ ~ प्राणी जतुओ बचे छे.

प्रत्येक काम यतना पूर्वक ज करवु ए विवेकी श्रावकनु कर्त्तव्य छे

शिक्षापाठ २८ रात्रिभोजन

अहिंसादिक पचमहाव्रत जेवु भगवाने रात्रिभोजनत्यागव्रत कह्यु छे रात्रिमां ज चार प्रकारना आहार छे ते अभक्षरूप छे जे जातिनो आहारनो रग होय छे ते जातिना तमस्काय नामना जीव ते आहारमा उत्पन्न थाय छे रात्रिभोजनमा ए शिवाय पण अनेक दोष रह्या छे रात्रे जमनारने रसोइने माटे अग्नि सळगाववो पडे छे, त्यारे समीपनी भीतपर रहेला निरपराधी सूक्ष्म जतुओ नाश पामे छे इंधनने माटे आणेला काष्ठादिकमा रहेला जतुओ रात्रिए नहीं देखावाथी नाश पामे छे, तेम ज सर्पना झेरनो, करोळियानी लाळनो अने मच्छरादिक सूक्ष्म जतुनो पण भय रहे छे, वखते ए कुटुम्बादिकने भयकर रोगनु कारण पण थइ पडे छे

रात्रिभोजननो पुराणादिक मतमा पण सामान्य आचारने खातर त्याग कर्यो छे, छता तेओमा परपरानी रूढिथे करीने रात्रिभोजन पेसी गयु छे पण ए निषेधक तो छे ज

शरीरनी अदर बे प्रकारना कमळ छे ते सूर्यना अस्तथी सकोच पामी जाय छे, एथी करीने रात्रिभोजनमा सूक्ष्म जीव भक्षणरूप अहित थाय छे, जे महा रोगनु कारण छे एवो केटलेक स्थळे आयुर्वेदनो पण मत छे

सत्पुरुषो तो बे घडी दिवस रहे त्यारे वाळु करे, अने बे घडी दिवस चड्या पहेला गमे ते जातनो आहार करे नहीं रात्रिभोजनने माटे विशेष विचार मुनिसमागमथी के शास्त्रथी जाणवो. ए सबंधी बहु सूक्ष्म भेदो जाणवा अवश्यना छे

चारे प्रकारना आहार रात्रिने विषे त्यागवाथी महद्फळ छे आ जिन वचन छे

शिक्षापाठ २९ सर्व जीवनी रक्षा भाग १

दया जेवो एके धर्म नथी दया ए ज धर्मनु स्वरुप छे. ज्या दया नथी त्या धर्म नथी जगतितलमा एवा अनर्थकारक धर्ममतो पड्या छे के. जेओ एम कहे छे के जीवने हणता लेश पाप थतु नथी, बहु तो मनुष्यदेहनी रक्षा करो तेम ए धर्ममतवाळा झनुनी, अने मदाध छे, अने दयानु लेश स्वरूप पण जाणता नथी एओ जो पोतानु हृदयपट प्रकाशमा मूकीने विचारे तो अवश्य तेमने जणाशे के एक सूक्ष्ममा सूक्ष्म जतुने हणवामा पण महा पाप छे जेवो मने मारो आत्मा प्रिय छे तेवो तेने पण तेनो आत्मा प्रिय छे. हु मारा लेश व्यसन खातर के लाभ खातर एवा असंख्याता जीवोने बेधडक हणु छउ. ए मने केटलु बधु अनत दुःखनु कारण थइ पडशे? तेओमा बुद्धिनु बीज पण नहीं होवाथी तेओ आवो सात्विक विचार करी शकता नथी पापमां ने पापमा निशदिन मग्न छे. वेद, अने वैष्णवादि पथोमा पण सूक्ष्म दया सबधी कद विचार जोवामा आवतो नथी तोपण एओ केवळ दयाने नहीं समजनार करता घणा उत्तम छे. स्थूल जीवोनी रक्षामा ए ठीक

परन्तु ए भवमां करता आपणे केवा भाग्यशाळी के ज्यां एक पुष्पपांखडी दुभाय त्यां पाप छे ए खरुं तत्त्व समज्या अने यज्ञयागादिक हिंसाथी तो केवळ विरक्त रह्या छीए! बनता प्रयत्नथी जीव बचावीए छीए, वळी चाहीने जीव हणवानो आपणो लेश इच्छा नथी अनंतकाय अभक्ष्यथी बहु करी आपणे विरक्त ज छीए आ काळे ए सघळो पुण्यप्रताप सिद्धार्थ भूपाळना पुत्र महावीरना कहेला परमतत्त्वबोधना योगबळथी वध्यो छे मनुष्यो रिद्धि पामे छे, सुंदर स्त्री पामे छे, आज्ञांकित पुत्र पामे छे, बहोळो कुटुंबपरिवार पामे छे, मानप्रतिष्ठा तेम ज अधिकार पामे छे, अने ते पामवा कंई दुर्लभ नथी, परन्तु खरुं धर्मतत्त्व के तेनी श्रद्धा के तेनो थोडो अंश पण पामवो महा दुर्लभ छे ए रिद्धि इत्यादिक अविवेकथी पापनुं कारण थई अनंत दुःखमां लई जाय छे, परन्तु आ थोडी श्रद्धा-भावना पण उत्तम पदवीए पहोंचाडे छे आम दयानुं सत्परिणाम छे, आपणे धर्मतत्त्वयुक्त कुळमां जन्म पाम्या छीए तो हवे जेम बने तेम विमळ दयामय वर्तनमां आववुं वारंवार लक्षमां राखवुं के, सर्व जीवनी रक्षा करवी बीजाने पण एवो ज युक्तिप्रयुक्तिथी बोध आपवो सर्व जीवनी रक्षा करवा माटे एक बोधदायक उत्तम युक्ति बुद्धिशाळी अभयकुमारे करी हती ते आवता पाठमां हुं कहुं छउं, एम ज तत्त्वबोधने माटे यौक्तिक न्यायथी अनार्य जेवा धर्ममतवादीओने शिक्षा आपवानो वखत मळे तो आपणे केवा भाग्यशाळी!

अभयकुमार बोल्या "महाराज ! काले आपना सामंतो सभामां बोल्या हता के हमणां मांस सस्तुं मळे छे जेथी हुं तेओने त्यां लेवा गयो हतो. त्यारे सघळाए मने बहु द्रव्य आप्युं, परंतु काळजानु सवा पैसाभार मांस न आप्युं त्यारे ए मांस सस्तुं के मोघुं ?" यथा सामंतो सांभळी शरमथी नीचुं जोई रह्या कोईथी कंई बोली शकायुं नहीं पछी अभयकुमारे कह्युं "आ कंई में तमने दुःख आपवा कर्युं नथी, परंतु बोध आपवा कर्युं छे आपणने आपणा शरीरनुं मांस आपवुं पडे तो अनंतभय थाय छे, कारण आपणा देहनी आपणने प्रियता छे, तेम जे जीवनुं ते मांस हशे तेनो पण जीव तेने वहालो हशे जेम आपणे अमूल्य वस्तुओ आपीने पण पोतानो देह बचावीए छीए तेम ते बिचारा पामर प्राणीओने पण होवुं जोईए आपणे समजणवाळा, बोलता चालता प्राणी छईए ते बिचारा अवाचक अने निराधार प्राणी छे तेमने मोतरूप दुःख आपीए ए केवुं पापनुं प्रबळ कारण छे ? आपणे आ वचन निरंतर लक्षमां राखवुं के सर्व प्राणीने पोतानो जीव वहालो छे, अने सर्व जीवनी रक्षा करवी ए जेवो एके धर्म नथी" अभयकुमारना भाषणथी श्रेणिक महाराजा संतोषाया सघळा सामंतो पण बोध पाम्या तेओए ते दिवसथी मांस खावानी प्रतिज्ञा करी, कारण एक तो ते अभक्ष्य छे अने कोई जीव हणाया विना ते आवतुं नथी ए मोटो अधर्म छे, माटे अभय प्रधाननुं कथन सांभळीने तेओए अभयदानमां लक्ष आप्युं

अभयदान आत्माना परम सुखनुं कारण छे

शिक्षापाठ ३१ प्रत्याख्यान

'पच्चखाण' नामनो शब्द वारंवार तमारा सांभळवामा आव्यो छे एनो मूळ शब्द 'प्रत्याख्यान' छे, अने ते (शब्द) अमुक वस्तु भणी चित्त न करवु एम तत्त्वथी समजी हेतुपूर्वक नियम करवो तेने बदले वपराय छे. प्रत्याख्यान करवानो हेतु महा उत्तम अने सूक्ष्म छे प्रत्याख्यान नही करवाथी गमे ते वस्तु न खाओ के न भोगवो तोपण तेथी संवरपणु नथी, कारण के तत्त्वरूपे करीने इच्छानु रुंधन कर्यु नथी रात्रे आपणे भोजन न करता होइए; परन्तु तेनो जो प्रत्याख्यानरूपे नियम न कर्यो होय तो ते फळ न आपे, कारण आपणी इच्छा खुल्ली रही जेम घरनु बारणु उघाडु होय अने श्वानादिक जनावर के मनुष्य चाल्यु आवे तेम इच्छाना द्वार खुल्ला होय तो तेमा कर्म प्रवेश करे छे एटले के ए भणी आपणा विचार छूटथी जाय छे ते कर्मबंधननु कारण छे, अने जो प्रत्याख्यान होय तो पछी ए भणी दृष्टि करवानी इच्छा थती नथी जेम आपणे जाणीए छीए के वांसानो मध्य भाग आपणाथी जोइ शकातो नथी, माटे ए भणी आपणे दृष्टि पण करता नथी, तेम प्रत्याख्यान करवाथी आपणे अमुक वस्तु खवाय के भोगवाय तेम नथी एटले ए भणी आपणु लक्ष स्वाभाविक जतु नथी, ए कर्म आववाने आडो कोट थइ पडे छे. प्रत्याख्यान कर्या पछी विस्मृति वगेरे कारणथी कोइ दोष आवी जाय तो तेना प्रायश्चित-निवारण पण महात्माओए कह्या छे

प्रत्याख्यानथी एक बीजो पण मोटो लाभ छे, ते ए के अमुक वस्तुओमा ज आपणु लक्ष रहे छे, बाकी बधी वस्तुओनो त्याग थइ जाय छे; जे जे वस्तु त्याग करी छे ते ते संबधी पछी विशेष-

विचार, ग्रहवु, मूकवु ए एवी कंइ उपाधि रहेती नथी ए वडे मन बहु बहोळताने पामी नियमरूपी सडकमां चाल्यु जाय छे अश्व जो लगाममां आवी जाय छे, तो पछी गमे तेवो प्रबळ छतां तेने धारेले रस्ते जेम लइ जवाय छे तेम मन ए नियमरूपी लगाममां आववाथी पछी गमे ते शुभ राहमां लइ जवाय छे, अने तेमां वारंवार पर्यटन कराववाथी ते एकाग्र, विचारशील अने विवेकी थाय छे मननो आनंद शरीरने पण निरोगी करे छे अभक्ष्य, अनंतकाय, परस्त्रियादिकना नियम कर्याथी पण शरीर निरोगी रही शके छे मादक पदार्थो मनने अवळे रस्ते दोरे छे, पण प्रत्याख्यानथी मन त्यां जतुं अटके छे, एथी ते विमळ थाय छे

प्रत्याख्यान ए केवी उत्तम नियम पाळवानी प्रतिज्ञा छे, ते आ उपरथी तमे समज्या हशो विशेष सद्गुरु मुखथी अने शास्त्रावलोकनथी समजवा हु बोध करु छउं

शिक्षापाठ ३२ विनयवडे तत्त्वनी सिद्धि छे

राजगृही नगरीनां राज्यासनपर ज्यारे श्रेणिक राजा विराजमान हता, त्यारे ते नगरीमां एक चंडाळ रहेतो हतो एक वखते ए चंडाळनी स्त्रीने गर्भ रह्यो, त्यारे तेने केरी खावानी इच्छा उत्पन्न थइ तेणे ते लावी आपवा चंडाळने कह्युं चंडाळे कह्युं, आ केरीनो वखत नथी, एटले मारो उपाय नथी नहीं तो हुं गमे तेटले उंचे होय त्यांथी मारी विद्याना बळवडे लावी तारी इच्छा सिद्ध करुं चंडाळणीए कह्युं, राजानी महाराणीना बागमां एक अकाळे केरी

देनार आवो छे ते पर अत्यारे केरीओ लची रही हशे, माटे त्या जइने ए केरी लावो. पोतानी स्त्रीनी इच्छा पुरी पाडवा चडाळ ते बागमा गयो. गुप्त रीते आंबा समीप जई मंत्र भणीने तेने नमाव्यो; अने केरी लीधी. बीजा मंत्रवडे करीने तेने हतो एम करी दीधो. पछी ते घेर आव्यो अने तेनी स्त्रीनी इच्छा माटे निरंतर ते चडाळ विद्यावळे त्याथी केरी लाववा लाग्यो. एक दिवसे फरता फरता माळीनी दृष्टि आंबा भणी गई केरीओनी चोरी थयेली जोईने तेणे जइने श्रेणिकराजा आगळ नम्रता पूर्वक कह्यु. श्रेणिकनी आज्ञाथी अभयकुमार नामना बुद्धिशाळी प्रधाने युक्तिवडे ते चडाळने शोधी काढ्यो तेने पोता आगळ तेडावी पूछ्यु, एटला बधा माणसो बागमा रहे छे छता तु केवी रीते चढीने ए केरी लई गयो के ए वात कळवामा पण न आवी? चडाळे कह्यु, आप मारो अपराध क्षमा करजो हु साचु बोली जउ छउ के मारी पासे एक विद्या छे, तेना योगथी हु ए केरीओ लइ शक्यो. अभयकुमारे कह्यु, माराथी क्षमा न थइ शके; परंतु महाराजा श्रेणिकने ए विद्या तु आप तो तेओने एवी विद्या लेवानो अभिलाष होवाथी तारा उपकारना बदलामा हु अपराध क्षमा करावी शकु चडाळे एम करवानी हा कही. पछी अभयकुमारे चडाळने श्रेणिकराजा ज्या सिंहासनपर बेठा हता त्या लावीने सामो उभो राख्यो, अने सघळी वात राजाने कही बतावी ए वातनी राजाए हा कही चडाळे पछी सामा उभा रही थरथरते पगे श्रेणिकने ते विद्यानो बोध आपवा माड्यो; पण ते बोध लाग्यो नहीं. झडपथी उभा थइ अभयकुमार बोल्या: महाराज! आपने जो ए विद्या अवश्य शीखवी होय तो सामा आवी उभा रहो; अने एने सिंहासन आपो. राजाए विद्या लेवा खातर एम कर्यु तो तत्काळ विद्या सिद्ध थइ

आ वात मात्र बोध लेवाने माटे छे एक चंडाळनो पण विनय कर्या वगर श्रेणिक जेवा राजाने विद्या सिद्ध न थइ, तो तेमांथी तत्त्व ए ग्रहण करवानु छे के, सद्विद्याने साध्य करवा विनय करवो अवश्यनो छे. आत्मविद्या पामवा निर्ग्रंथगुरुनो जो विनय करीए तो केवु मगळदायक थाय !

विनय ए उत्तम वशीकरण छे उत्तराध्ययनमा भगवाने विनयने धर्मनु मूळ कही वर्णव्यो छे गुरुनो, मुनिनो, विद्वाननो, मातापितानो अने पोताथी वडानो विनय करवो ए आपणी उत्तमतानु कारण छे

शिक्षापाठ ३३ सुदर्शन शेठ

प्राचीन काळमा शुद्ध एक पत्नीव्रतने पाळनारा असख्य पुरुषो थइ गया छे, एमाथी सकट सही नामाकित थयलो सुदर्शन नामनो एक सत्पुरुष पण छे ए धनाढ्य सुदर रूपवान मुखमुद्रावाळो कातिमान अने मध्य वयमा हतो जे नगरमां ते रहेतो हतो, ते नगरना राज्यदरबार आगळथी कइ काम प्रसगने लीधे तेने नीकळवु पड्यु ते वेळा राजानी अभया नामनी राणी पोताना आवासना गोखमा बेठी हती साथी सुदर्शन भणी तेनी दृष्टि गइ तेनु उत्तम रूप अने काया जोइने तेनु मन ललचायु एक अनुचरी मोकलीने कपटभावथी निर्मळ कारण बतावीने सुदर्शनने उपर बोलाव्यो केटलाक प्रकारनी वातचित कर्या पछी अभयाए सुदर्शनने भोग भोगववा सबधीनु आमत्रण कर्यु सुदर्शने केटलोक उपदेश आप्यो तोपण तेनु मन शात थयु नही छेवटे कटाळीने सुदर्शने युक्तिथी कह्यु, बहेन, हु

पुरुपत्वमा नथी! तोपण राणीए अनेक प्रकारना हावभाव कर्या ए सघळी कामचेष्टाथी सुदर्शन चळ्यो नहो, एथी कटाळी जइने राणीए तेने जतो कर्यो

एक वार ए नगरमा उजाणी हती; तेथी नगर बहार नगरजनो आनदथी आम तेम भमता हता धामधुम मची रही हती सुदर्शन शेठना छ देव कुमार जेवा पुत्रो पण त्या आव्या हता. अभया राणी कपिला नामनी दासी साथे ठाठमाठथी त्या आवी हती सुदर्शनना देवपूतळा जेवा छ पुत्रो तेना जोवामा आव्या, कपिलाने तेणे पूछ्युः आवा रम्य पुत्रो कोना छे? कपिलाए सुदर्शन शेठनु नाम आप्यु नाम साभळीने राणीनी छातीमा कटार भोकाइ; तेने कारी घा वाग्यो सघळी धामधुम वीती गया पछी मायाकथन गोठवीने अभयाए अने तेनी दासीए मळी राजाने कह्युः "तमे मानता हशो के, मारा राज्यमा न्याय अने नीति वर्ते छे; दुर्जनोथी मारी प्रजा दुःखी नथी; परतु ते सघळु मिथ्या छे अतःपुरमा पण दुर्जनो प्रवेश करे त्या सुधी हजु अधेर छे! तो पछी बीजा स्थळ माटे पूछवु पण शु? तमारा नगरना सुदर्शन नामना शेठे मारी कने भोगनु आमत्रण कर्यु नहि कहेवायोग्य कथनो मारे साभळवा पड्या, पण में तेनो तिरस्कार कर्यो आथी विशेष अधारु कयु कहेवाय?" घणा राजा मुळे कानना काचा होय छे ए वात जाणे बहु मान्य छे, तेमा वळी स्त्रीना मायावि मधुरा वचन शु असर न करे? ताता तेलमा टाढा जळ जेवा वचनथी राजा क्रोधायमान थया सुदर्शनने शूळीए चढाववा देवानी तत्काळ तेणे आज्ञा करी दीधी, अने ते प्रमाणे सघळु थइ पण गयु. मात्र शूळीए सुदर्शन बेसे एटली वार हती

गमे तेम हो, पण शहियलना दिव्य भंडारमा अजवाळुं छे तेनो प्रभाव ढांक्यो रहेतो नथी सुदर्शनने शूळीए बेसार्यो, के शूळी फीटीने तेनुं झळझळतुं सोनानुं सिंहासन थयुं, अने देव दुंदुभीना नाद थया, सर्वत्र आनंद व्यापी गयो सुदर्शननुं सत्यशील विश्वमंडळमा झळकी उठ्युं सत्यशीळनो सदा जय छे

शीयळ अने सुदर्शननी उत्तम दृढता ए बन्ने आत्माने पवित्र श्रेणिए चढावे छे!

शिक्षापाठ ३४ ब्रह्मचर्यविषे सुभाषित

दोहरा

निरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान,
गणे काष्ठनी पूतळी, ते भगवानसमान १

आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरूप,
ए त्यागी, त्याग्युं बधुं, केवळ शोकस्वरूप २

एक विषयने जीतता, जीत्यो सौ संसार,
नृपति जीतता जीतिये, दळ, पुर, ने अधिकार ३

विषयरूप अंकुरथी, टळे ज्ञान ने ध्यान,
लेश मदीरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान. ४

जे नवराड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाइ,
भव तेनो लव पछी रहे, तत्त्ववचन ए भाइ ५

सुदर शीयळसुरतरू, मन वाणी ने देह;
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह ६

पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिक ज्ञान;
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान! ७

शिक्षापाठ ३५ नमस्कारमंत्र

नमो अरिहंताणं;
नमो सिद्धाणं;
नमो आयरियाणं;
नमो उवज्झायाणं;
नमो लोओ सव्वसाहुणं

आ पवित्र वाक्योने निर्ग्रंथप्रवचनमा नवकार (नमस्कार) मंत्र के पंचपरमेष्ठिमंत्र कहे छे

अर्हंत भगवतना बार गुण, सिद्ध भगवतना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पचवीश गुण, अने साधुना सत्तावीश गुण मळीने एकसो आठ गुण थया. अंगुठा विना बाकीनी चार आंगळीओना बार टेरवां थाय छे; अने एथी ए गुणोनु चितवन करवानी योजना होवाथी बारने नवे गुणता १०८ थाय छे. एटले नवकार एम कहेवामा साथे एवु सूचवन रह्यु जणाय छे के हे भव्य! तारा ए आंगळीनां टेरवाथी (नवकार) मंत्र नववार गण.—कार एटले करनार एम पण थाय छे बारने

गुणता जेटला थाय एटला गुणनो भरेलो मत्र एम नवकार मत्र तरीके एनो अर्थ थई शके छे पच परमेष्टि एटले आ सकळ जगतमा पाच वस्तुओ परमोत्कृष्ट छे ते ते कयि कयि?–तो कही बतावी के अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु, एने नमस्कार करवानो जे मत्र ते परमेष्टि मत्र, अने पाच परमेष्टिने साथे नमस्कार होवाथी पचपरमेष्टि मत्र एवो शब्द थयो आ मत्र अनादि सिद्ध मनाय छे, कारण पचपरमेष्टि अनादि सिद्ध छे एटले ए पाचे पात्रो आद्यरूप नथी, प्रवाहथी अनादि छे, अने तेना जपनार पण अनादि सिद्ध छे एथी ए जाप पण अनादि सिद्ध ठरे छे

प्र०–ए पचपरमेष्टि मत्र परिपूर्ण जाणवाथी मनुष्य उत्तम गतिने पामे छे एम सत्पुरुषो कहे छे ए माटे तमारु शुं मत छे?

उ०–ए कहेवु न्यायपूर्वक छे, एम हु मानु छउ

प्र०–एने कया कारणथी न्यायपूर्वक कही शकाय?

उ०–हा ए तमने हु समजावु, मननी निग्रहता अर्थे एक तो सर्वोत्तम जगद्भूषणना सत्य गुणनु ए चितवन छे तत्त्वथी जोतां वळी अर्हतस्वरूप, सिद्धस्वरूप, आचार्यस्वरूप, उपाध्याय स्वरूप अने साधुस्वरूप एनो विवेकथी विचार करवानु पण ए सूचवन छे कारण के तेओ पूजवा योग्य शाथी छे? एम विचारतां एओना स्वरूप, गुण इत्यादि माटे विचार करवानी सत्पुरुषने तो खरी अगत्य छे हवे कहो के ए मत्र केटलो कल्याण कारक छे?

प्रश्नकार–सत्पुरुषो नमस्कार मत्रने मोक्षनु कारण कहे छे ए आ व्याख्यानथी हुं पण मान्य राखु छउ

अर्हत भगवंत, सिद्ध भगवत, आचार्य, उपाध्याय अने साधु एओनो अकेको प्रथम अक्षर लेता "असिआउसा" एवु महद् वाक्य नीकळे छे जेनु ॐ एवु योगबिंदुनु स्वरुप थाय छे; माटे आपणे ए मत्रनो अवश्य करीने विमळ भावथी जाप करवो

शिक्षापाठ ३६ अनुपूर्वि

नर्कानुपूर्वी, तिर्यचानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, अने देवानुपूर्वी ए अनुपूर्वीओ विषेनो आ पाठ नथी, परतु "अनुपूर्वी" ए नामना एक अवधानी ल्घु पुस्तकना मंत्र स्मरण माटे छे.

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

पिता—आनी जातनां कोष्टकथी भरेलुं एक नानु पुस्तक छे ते तें जोयुं छे ?

पुत्र—हा पिताजी

पिता—एमां आडा अवळा अक मूक्या छे, तेनु कांइ पण कारण तारा समजवामा छे ?

पुत्र—नहीं पिताजी—मारा समजवामा नथी माटे आप ते कारण कहो

पिता—पुत्र! प्रत्यक्ष छे के मन ए एक बहु चचळ चीज छे, जेने एकाग्र करवु बहु बहु विकट छे, ते ज्या सुधी एकाग्र थतुं नथी त्या सुधी आत्ममलिनता जती नथी, पापना विचारो घटता नथी ए एकाग्रता माटे बार प्रतिज्ञादिक अनेक महान साधनो भगवाने कह्या छे मननी एकाग्रताथी महा योगनी श्रेणिये चढवा माटे अने तेने केटलाक प्रकारथी निर्मळ करवा माटे सत्पुरुषोए आ एक साधनरूप कोष्टकावली करी छे पच परमेष्टि मत्रना पाच अक एमा पहेला मूक्या छे, अने पछी लोमविलोमस्वरूपमा लक्षबंध एना ए पाच अक मूकीने भिन्न भिन्न प्रकारे कोष्टको कर्या छे एम करवानु कारण पण मननी एकाग्रता थइने निर्जरा करी शकाय, ए छे

पुत्र—पिताजी! अनुक्रमे लेवाथी एम शा माटे न थइ शके?

पिता—लोमविलोम होय तो ते गोठवता जवुं पडे अने नाम सभारता जवु पडे पाचनो अक मूक्या पछी बेनो आकडो आवे के 'नमो लोए सव्वसाहूण' पछी—'नमो अरिहताण' ए वाक्य मूकीने 'नमो सिद्धाण' ए वाक्य सभारवु पडे एम पुन पुन' लक्षनी द्रढता राखता मन एकाग्रताए पहोचे छे अनुक्रमबंध होय तो तेम थइ शकतु नथी, कारण के विचार करवो पडतो नथी ए सूक्ष्म वखतमा मन परमेष्टिमत्रमाथी नीकळीने ससारतत्रनी खटपटमा जइ पडे छे, अने वखते धर्म करता धाड पण करी नाखे छे, जेथी सत्पुरुषोए अनुपूर्विनी योजना करी छे, ते बहु सुदर छे अने आत्मशातिने आपनारी छे

शिक्षापाठ ३७ सामायिक विचार भाग १

आत्मशक्तिनो प्रकाश करनार, सम्यग्ज्ञानदर्शननो उदय करनार, शुद्ध समाधिभावमा प्रवेश करावनार, निर्जरानो अमूल्य लाभ आपनार, रागद्वेषथी मध्यस्थ बुद्धि करनार एवु सामायिक नामनु शिक्षाव्रत छे. सामायिक शब्दनी व्युत्पत्ति सम+आय+इक ए शब्दोथी थाय छे 'सम' एटले रागद्वेषरहित मध्यस्थ परिणाम, 'आय' एटले ते समभावनाथी उत्पन्न थतो ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मोक्ष मार्गनो लाभ, अने 'इक' कहेता भाव एम अर्थ थाय छे. एटले जे वडे करीने मोक्षना मार्गनो लाभदायक भाव उपजे ते सामायिक आर्त्त, अने रौद्र ए बे प्रकारना ध्याननो त्याग करीने मन, वचन, कायाना पापभावने रोकीने विवेकी मनुष्यो सामायिक करे छे

मनना पुद्गळ तरगी छे सामायिकमा ज्यारे विशुद्ध परिणामथी रहेवु कह्यु छे त्यारे पण ए मन आकाश पातालना घाट घड्या करे छे तेमज भूल, विस्मृति, उन्माद इत्यादिथी वचन कायामा पण दूषण आववाथी सामायिकमां दोष लागे छे. मन, वचन अने कायाना थइने बत्रीस दोष उत्पन्न थाय छे. दश मनना, दश वचनना अने बार कायाना एम बत्रीश दोष जाणवा अवश्यना छे जे जाणवाथी मन सावधान रहे छे.

मनना दश दोप कहु छउ

१ अविवेकदोष–सामायिकनु स्वरुप नहीं जाणवाथी मनमा एवो विचार करे के आथी शु फळ थवानु हतु ? आथी ते कोण तर्यु हशे ? एवा विकल्पनु नाम अविवेकदोष

२ यशोवांछादोष-पोते सामायिक करे छे एम बीजा मनुष्यो जाणे तो प्रशंसा करे एवी इच्छाए सामायिक करवु ते यशोवांछादोष

३ धनवांछादोष—धननी इच्छाए सामायिक करवु ते धनवांछादोष

४ गर्वदोष-मने लोको धर्मी कहे छे अने हुं सामायिक पण तेवुज करुं छउं ? एवो अध्यवसाय ते गर्वदोष

५ भयदोष-हुं श्रावककुल्मा जन्म्यो छउं, मने लोको मोटा तरीके मान दे छे, अने जो सामायिक नहीं करुं तो कहेशे के आटली क्रिया पण नथी करतो, एम निंदाना भयथी सामायिक करे ते भयदोष

६ निदानदोष—सामायिक करीने तेना फळथी धन, स्त्री, पुत्रादिक मळवानु इच्छे ते निदानदोष

७ संशयदोष-सामायिकनु फळ हशे के नहीं होय ? एवो विकल्प करे ते संशयदोष

८ कषायदोष-सामायिक क्रोधादिकथी करवा बेसी जाय, किंवा पछी क्रोध, मान, माया, लोभमा वृत्ति धरे ते कषायदोष

९ अविनयदोष-विनय वगर सामायिक करे ते अविनयदोष

१० अबहुमानदोष-भक्तिभाव अने उमंग पूर्वक सामायिक न करे ते अबहुमानदोष

शिक्षापाठ ३८ सामायिक विचार भाग २

मनना दश दोष कह्या हवे वचनना दश दोष कहु छउं.

१ कुबोलदोष–सामायिकमा कुवचन बोल्बु ते कुबोल्दोष.

२ सहसात्कारदोष—सामायिकमा साहसथी अविचारपूर्वक वाक्य बोल्वुं ते सहसात्कारदोष

३ असदारोपणदोष—बीजाने खोटो बोध आपे, ते असदारोपणदोष.

४ निरपेक्षदोष–सामायिकमा शास्त्रनी दरकार विना वाक्य बोले ते निरपेक्षदोष

५ सक्षेपदोष–सूत्रनापाठ इत्यादिक टुकामा बोली नाखे; अने यथार्थ भाखे नहीं ते सक्षेपदोष

६ क्लेशदोष–कोइथी ककाश करे ते क्लेशदोष

७ विकथादोष—चार प्रकारनी विकथा मांडी बेसे ते विकथादोष.

८ हास्यदोष—सामायिकमा कोइनी हासी मस्करी करे ते हास्यदोष.

९ अशुद्धदोष–सामायिकमा सूत्रपाठ न्यूनाधिक अने अशुद्ध बोले ते अशुद्धदोष

१० मुणमुणदोष–गडवडगोटाथी सामायिकमा सूत्रपाठ बोले जे पोते पण पूरु माड समजी शके ते मुणमुणदोष.

ए वचनना दश दोष कह्या, हवे कायाना बार दोष कहुं छउ

१ अयोग्यआसनदोष—सामायिकमा पगपर पग चढावी बेसे, ते श्रीगुरु आदि प्रत्ये अविनयरूपआसन ते पहेलो अयोग्यआसनदोष

२ चलासनदोष—डगडगते आसने बेसी सामायिक करे, अथवा वारंवार ज्याथी उठवु पडे तेवे आसने बेसे ते चलासनदोष

३ चलदृष्टिदोष—कायोत्सर्गमा आखो चचळ ए चलदृष्टिदोष

४ सावद्यक्रियादोष—सामायिकमा कइ पाप क्रिया के तेनी सज्ञा करे ते सावद्यक्रियादोष

५ आलंबनदोष—भीतादिकने ओठीगण दइ बेसे एथी सा नेत्रा जतु आदिकनो नाश थाय ने तेने पीडा थाय, तेमज पोताने प्रमादनी प्रवृत्ति थाय, ते आलंबनदोष

६ आकुचनप्रसारणदोष—हाथ पग सकोचे, लाबा करे ए आदि ते आकुचनप्रसारणदोष

७ आलसदोष—अग मरडे, टचाका वगाडे ए आदि ते आलसदोष

८ मोटनदोष—आगळी वगेरे वाकी करे, टचाका वगाडे ते मोटनदोष

९ मलदोष—घरडा घरड करी सामायिकमां चल करी मेल खखेरे ते मलदोष

१० विमासणदोष—गळामा हाथ नाखी बेसे इत्यादि ते

११ निद्रादोष—सामायिकमा उंघ आवे ते निद्रादोष

१२ वस्त्रसकोचन–सामायिकमा टाढ प्रमुखनी भीतिथी वस्त्रथी शरीर सकोचे ते वस्त्रसकोचनदोष

ए बत्रिश दूषणरहित सामायिक करवु पाच अतिचार टाळवा

शिक्षापाठ ३९ सामायिक विचार भाग ३

एकाग्रता अने सावधानी विना ए बत्रीश दोषमाना अमुक दोष पण आवी जाय छे विज्ञानवेताओए सामायिकनु जघन्य प्रमाण वे घडीनु बाध्यु छे ए व्रत सावधानी पूर्वक करवाथी परमशाति आपे छे. केटलाकनो ए बे घडीनो काळ, ज्यारे जतो नथी त्यारे तेओ बहु कटाळे छे सामायिकमा नवराश लइने बेसवाथी काळ जाय पण क्याथी ? आधुनिक काळमा सावधानीथी सामायिक करनारा बहुज थोडा छे प्रतिक्रमण सामायिकनी साथे करवानु होय छे सारे तो वखत जवो सुगम पडे छे जो के एवा पामरो प्रतिक्रमण लक्ष पूर्वक करी शकता नथी तोपण केवळ नवराश करता एमां जरुर कइक फेर पडे छे सामायिक पण पुरु जेओने आवडतु नथी तेओ बिचारा सामायिकमा पछी बहु मुझाय छे. केटलाक भारे कर्मियो ए अवसरमा व्यवहारना प्रपचो पण घडी राखे छे. आथी सामायिक बहु दोषित थाय छे

विधिपूर्वक सामायिक न थाय ए बहु खेदकारक अने कर्मनी बाहुल्यता छे साठ घडीना अहोरात्र व्यर्थ चाल्या जाय छे. असख्यात दिवसथी भरेला अनता काळचक्र व्यतीत करता पण जे

सार्थक न थयु ने जे घडीना विशुद्ध सामायिकथी थाय छे लक्षपूर्वक सामायिक थवा माटे तेमा प्रवेश कर्या पछी चार लोगस्सथी वधारे लोगस्सनो कायोत्सर्ग करी चित्तनी कइक स्वस्थता आणवी, पछी सूत्रपाठ के उत्तम ग्रथनु मनन करवु, वैराग्यना उत्तम काव्यो बोलवा, पाछळनु अध्ययन करेलु स्मरण करी जवु, नूतन अभ्यास थाय तो करवो कोइने शास्त्राधारथी बोध आपवो, एम सामायिकी काळ व्यतीत करवो मुनिराजनो जो समागम होय तो आगमवाणी सांभळवी अने ते मनन करवी, तेम न होय अने शास्त्र परिचय न होय तो विचक्षण अभ्यासी पासेथी वैराग्यबोधक कथन श्रवण करवुं, किंवा कइ अभ्यास करवो ए सघळी योगवाइ न होय तो केटलोक भाग लक्षपूर्वक कायोत्सर्गमा रोकवो, अने केटलोक भाग महापुरुषोना चरित्रकथामा उपयोगपूर्वक रोकवो, परंतु जेम बने तेम विवेकथी अने उत्साहथी सामायिकीकाळ व्यतीत करवो कंइ साहित्य न होय तो पच परमेष्ठिमत्रनो जापज उत्साहपूर्वक करवो पण व्यर्थ काळ काढी नाखवो नहीं धीरजथी, शांतिथी अने यतनाथी सामायिक करवुं जेम बने तेम सामायिकमां शास्त्रपरिचय वधारवो

साठघडीना अहोरात्रिमांथी बेघडी अवश्य बचावी सामायिक तो सद्भावथी करवु

शिक्षापाठ ४० प्रतिक्रमणविचार

प्रतिक्रमण एटले पाछु फरवुं—फरीथी जोई जवुं एम एनो अर्थ थई शके छे भावनी अपेक्षाए जे दिवसे जे वखते प्रतिक्रमण करवानुं थाय, ते वखतनी अगाउ अथवा ते दिवसे जे जे दोष

थया होय ते एक पछी एक अंतरात्माथी जोई जवा अने तेनो पश्चाताप करी ते दोषथी पाछुं वळवुं तेनुं नाम प्रतिक्रमण कहेवाय

उत्तम मुनियो अने भाविक श्रावको संध्याकाळे अने रात्रिना पाछळना भागमां दिवसे अने रात्रे एम अनुक्रमे थयेला दोषनो पश्चाताप करे छे के तेनी क्षमापना इच्छे छे एनुं नाम अहीं आगळ प्रतिक्रमण छे ए प्रतिक्रमण आपणे पण अवश्य करवुं कारण के आ आत्मा मन, वचन अने कायाना योगथी अनेक प्रकारनां कर्म बांधे छे प्रतिक्रमण सूत्रमां एनुं दोहन करेलुं छे, जेथी दिवस रात्रिना थयेला पापनो पश्चाताप ते वडे थई शके छे. शुद्धभाव वडे करी पश्चाताप करवाथी लेश पाप थता परलोकभय अने अनुकंपा छूटे छे; आत्मा कोमळ थाय छे त्यागवा योग्य वस्तुनो विवेक आवतो जाय छे भगवत्साक्षीए अज्ञान आदि जे जे दोष विस्मरण थया होय तेनो पश्चाताप पण थई शके छे आम ए निर्जरा करवानुं उत्तम साधन छे.

एनुं आवश्यक एवुं पण नाम छे आवश्यक एटले अवश्य करीने करवा योग्य, ए सत्य छे. ते वडे आत्मानी मलीनता खसे छे, माटे अवश्य करवा योग्य छे

सायंकाळे जे प्रतिक्रमण करवामां आवे छे तेनुं नाम 'देवसीयपडिक्कमण' एटले दिवस संबंधी पापनो पश्चाताप; अने रात्रिना पाछला भागमां प्रतिक्रमण करवामां आवे छे ते 'राइयपडिक्कमण' कहेवाय छे 'देवसीय' अने 'राइय' ए प्राकृत भाषाना शब्दो छे. पखवाडीए करवानुं प्रतिक्रमण ते पाक्षिक अने संवत्सरे करवानुं ते सांवत्सरिक (छमछरी) कहेवाय छे. सत्पुरुषोए योजनाथी बांधेलो ए सुंदर नियम छे

केटलाक सामान्य बुद्धिमानो एम कहे छे के दिवस अने रात्रिनु सवारे प्रायश्चित्तरूप प्रतिक्रमण कर्युं होय तो कइ खोटु नथी, परतु ए कहेवु प्रमाणिक नथी रात्रिये अकस्मात् अमुक कारण आवी पडे क काळधर्म प्राप्त थाय तो दिवस संबधी पण रही जाय

प्रतिक्रमण सूत्रनी योजना बहु सुदर छे एना मूळतत्व बहु उत्तम छे जेम बने तेम प्रतिक्रमण धीरजथी, समजाय एवी भाषाथी, शांतिथी, मननी एकाग्रताथी अने यतनापूर्वक करवु,

---

शिक्षापाठ ४१ भीखारीनो खेद भाग १

एक पामर भीखारी जगलमा भटकतो हतो त्या तेने भूख लागी एटले ते बिचारो लडथडीआ खातो खातो एक नगरमा एक सामान्य मनुष्यने घेर पहोच्यो त्या जइने तेणे अनेक प्रकारनी आजीजी करी, तेना कालावालाथी करुणा पामीने ते गृहस्थनी स्त्रीए तेने घरमाथी जमता वधेलु मिष्टान्न आणि आप्यु भोजन मळवाथी भीखारी बहु आनद पामतो पामतो नगरनी बहार आव्यो, आवीने एक झाड तळे बेठो, त्या जरा स्वच्छ करीने एक बाजुए अति जूनो थयेलो पोतानो जळनो घडो मूक्यो एक बाजुए पोतानी फाटीतुटी मलिन गोदडी मूकी अने एक बाजुए पोते ते भोजन लइने बेठो राजी राजी थता एणे ते भोजन खाइने पुरु कर्युं पछी ओशिके एक पथ्थर मूकीने ते सुतो भोजनना मदथी जरावारमा तेनी आंखो मिंचाइ गइ निद्रावश थयो एटले तेने एक स्वप्न आव्युं पोते जाणे महा राजरीद्धिने पाम्यो छे, सुदर वस्त्राभूषण धारण कर्यां छे, देश आखामां पोताना विजयनो डको वागी गयो

छे, समीपमा तेनी आज्ञा अवलंबन करता अनुचरो उभा थई रह्या छे, आजुबाजु छडीदारो खमा खमा पोकारे छे, एक रमणीय महेलमा सुदर पलगपर तेणे शयन कर्यु छे; देवागना जेवी स्त्रीओ तेना पग चापे छे; पखाथी एक बाजुएथी पखानो मद मद पवन ढोळाय छे; एवा स्वप्नमा तेनो आत्मा चढी गयो ते स्वप्नना भोग लेता तेना रोम उल्लसी गया एवामा मेघ महाराजा चढी आव्या; वीजळीना झबकारा थवा लाग्या, सूर्य वादळांथी ढकाइ गयो, सर्वत्र अधकार पथराइ गयो, मुशळधार वर्षाद थशे एवु जणायु अने एटलामा गाजवीजथी एक प्रबळ कडाको थयो कडाकाना अवाजथी भय पामीने ते पामर भीखारी जागी गयो

शिक्षापाठ ४२ भीखारीनो खेद भाग २

जुए छे तो जे स्थळे पाणीनो खोखरो घडो पड्यो हतो ते स्थळे ते घडो पड्यो छे, ज्या फाटी तुटी गोदडी पडी हती त्याज ते पडी छे. पोते जेवा मलिन अने फाटेला कपडा धारण कर्या हता तेवा ने तेवा ते वस्त्रो शरीर उपर छे नथी तलभार वध्यु के नथी जवभार घटयु नथी ते देश के नथी ते नगरी, नथी ते महेल के नथी ते पलग, नथी ते चामरछत्र धरनारा के नथी ते छडीदारो; नथी ते स्त्रीयो के नथी ते वस्त्रालकारो, नथी ते पखा के नथी ते पवन, नथी ते अनुचरो के नथी ते आज्ञा; नथी ते सुख विलास के नथी ते मदोन्मत्तता, भाइ तो पोते जेवा हता तेवाने तेवा देखाया एथी ते देखाव जोइने ते खेद पाम्यो स्वप्नमा में मिथ्या आडबर दीठो तेथी आनद मान्यो एमान तो अहीं कशुए

स्वप्नना भोग भोगव्या नही अने तेनुं परिणाम जे खेद ते हु भोगवु छउ ष्म ए पामर जीव पश्चातापमां पडी गयो.

अहो भव्यो! भीखारीना स्वप्न जेवा संसारना सुख अनित्य छे, स्वप्नमा जेम ते भीखारीए सुख समुदाय दीठो अने आनद मान्यो तेम पामर प्राणीओ ससार स्वप्नना सुख समुदायमा आनंद माने छे जेम ते सुख समुदाय जागृतिमा मिथ्या जणाया तेम ज्ञान प्राप्त थता ससारना सुख तेवा जणाय छे स्वप्नना भोग न भोगव्या छता जेम भीखारीने खेदनी प्राप्ति थइ, तेम मोहान्ध प्राणीओ ससारना सुख मानी बेसे छे, अने भोगव्या सम गणे छे परतु परिणामे खेद, दुर्गति अने पश्चाताप ले छे, ते चपळ अने विनाशी छता स्वप्नना खेद जेवु तेनु परिणाम रह्युं छे ए उपरथी बुद्धिमान पुरुषो आत्महितने शोधे छे ससारनी 'अनित्यतापर एक काव्य छे के —

उपजाति

विद्युत् लक्ष्मी प्रभुता पतग,
आयुष्य ते तो जळना तरग,
पुरदरी चाप अनगरग,
शुं राचिये सां क्षणनो प्रसग?

विशेपार्थ —लक्ष्मी वीजळी जेवी छे वीजळीनो झबकार जेम थइने ओल्वाइ जाय छे, तेम लक्ष्मी आवीने चाली जाय छे अधिकार पतगना रग जेवो छे, पतगनो रग जेम चार दिवसनी चटकी छे; तेम अधिकार मात्र थोडो काळ रही हाथमाथी जतो रहे छे आयुष्य पाणीनां मोजा जेवुं छे पाणीनो हिलोळो आव्यो

के गयो तेम जन्मपाम्या, अने एक देहमा रह्या के न रह्या त्या बीजा देहमा पडवु पडे छे. कामभोग आकाशमा उत्पन्न थता इन्द्रधनुष्य जेवा छे. इन्द्रधनुष्य वर्षाकाळमा थइने क्षणवारमा लय थइ जाय छे; तेम यौवनमा कामना विकार फळीभूत थई जरा वयमा जता रहे छे, टुकामा हे जीव! ए सघळी वस्तुओनो सबध क्षणभर छे एमा प्रेमबधननी साकळे बधाइने शु राचवु? तात्पर्य ए सघळा चपळ अने विनाशी छे, तु अखड अने अविनाशी छे; माटे तारा जेवी नित्य वस्तुने प्राप्त कर! ए बोध यथार्थ छे

शिक्षापाठ ४२ अनुपम क्षमा

क्षमा ए अतर्शत्रु जीतवामा खड्ग छे पवित्र आचारनी रक्षा करवामा बख्तर छे शुद्धभावे असह्य दुःखमा, समपरिणामथी क्षमा राखनार मनुष्य भवसागर तरी जाय छे

कृष्ण वासुदेवना गजसुकुमार नामना नाना भाइ महासुरूपवान, सुकुमार मात्र बार वर्षनी वये भगवान् नेमिनाथनी पासेथी ससारत्यागी थइ स्मशानमा उग्र ध्यानमा रह्या हता, त्यारे तेओ एक अद्भुत क्षमामय चरित्रथी महासिद्धिने पामी गया, ते अहीं कहु छउ

सोमल नामना ब्राह्मणनी सुरूपवर्णसपन्न पुत्री जोडे गजसुकुमारनु सगपण कर्यु हतु. परतु लग्न थया पहेला गजसुकुमार तो ससार त्यागी गया आथी पोतानी पुत्रीनु सुख जवाना द्वेषथी ते सोमल ब्राह्मणने भयकर क्रोध व्याप्यो. गजसुकुमारनी शोध करतो करतो ए स्मशानमां ज्या महामुनि गजसुकुमार एकाग्र

भावथी कायोत्सर्गमा छे, त्या आवी पहोंच्यो कोमळ गजसुकुमारना माथापर चीकणी माटीनी वाड करी, अने अन्दर धखधखता अंगारा भर्या, इंधन पूर्यु एटले महा ताप थयो एथी गजसुकुमारनो कोमळदेह बळवा मंड्यो एटले ते सोमल जतो रह्यो ते वखतना गजसुकुमारना असह्य दुःखनु वर्णन केम थई शके ? त्यारे पण तेओ समभाव परिणाममा रह्या किंचित क्रोध के द्वेष एना हृदयमा जन्म पाम्यो नहीं पोताना आत्माने स्थितिस्थापक करीने बोध दीधो के जो! तु एनी पुत्रीने परण्यो होत तो ए कन्यादानमा तने पाघडी आपत ए पाघडी थोडा वखतमा फाटी जाय तेवी अने परिणामे दु खदायक थात आ एनो बहु उपकार थयो के ए पाघडी बदले एणे मोक्षनी पाघडी बधावी. एवा विशुद्ध परिणामथी अडग रही समभावथी असह्य वेदना सहीने तेओ सर्वज्ञ सर्वदर्शी थई अनत जीवन सुखने पाम्या केवी अनुपम क्षमा अने केवु तेनु सुदर परिणाम! तत्त्वज्ञानीओनां वचन छे के, आत्मा मात्र स्वसद्भावमा आववो जोइए, अने ते आव्यो तो मोक्ष हथेळीमाज छे गजसुकुमारनी नामांकित क्षमा केवो शुद्ध बोध करे छे!

शिक्षापाठ ४४ राग

श्रमण भगवान् महावीरना अग्रेसर गणधर गौतमनु नाम तमे बहुवार सांभळ्यु छे गौतमस्वामीना बोधेला केटलाक शिष्यो, केवळज्ञान पाम्या छता गौतम पोते केवळज्ञान पाम्या नहोता, कारण के भगवान महावीरना अंगोपाग, वर्ण, वाणी, रूप ५१ हजु गौतमने मोह हतो निर्ग्रंथ प्रवचननो निष्पक्षपाती

न्याय एवो छे के, गमे ते वस्तुपरनो राग दु खदायक छे राग ए मोह अने मोह ए ससार ज छे. गौतमना हृदयथी ए राग ज्या सुधी खस्यो नही त्या सुधी तेओ केवळज्ञान पाम्या नहीं श्रमण भगवान ज्ञातपुत्र ज्यारे अनुपमेय सिद्धिने पाम्या, त्यारे गौतम नगरमाथी आवता हता भगवानना निर्वाणसमाचार साभळी तेओ खेद पाम्या विरहथी तेओ अनुराग वचनथी बोल्याः "हे महावीर' तमे मने साथे तो न राख्यो परतु सभार्योए नही मारी प्रीति सामी तमे दृष्टि पण करी नही! आम तमने छाजतु नहोतु. एवा विकल्पो थता थता तेनु लक्ष फर्यु, ने ते निरागश्रेणिए चड्या; हु बहु मूर्खता करु छउ ए वितराग, निर्विकारी अने निरागी ते मारामा केम मोह राखे? एनी शत्रु अने मित्रपर केवळ समान दृष्टि हती! हु ए निरागीनो मिथ्या मोह राखु छउ! मोह ससारनु प्रबळ कारण छे," एम विचारता विचारता तेओ शोक तजीने निरागी थया एटले अनतज्ञान प्रकाशित थयु, अने प्राते निर्वाण पधार्या

गौतममुनिनो राग आपणने बहु सूक्ष्म बोध आपे छे. भगवानपरनो मोह गौतम जेवा गणधरने दु'खदायक थयो, तो पछी ससारनो, ते वळी पामर आत्माओनो मोह केवु अनत दु'ख आपतो हशे! ससाररूपी गाडीने राग अने द्वेष ए बे रूपी बळद छे ए न होय तो ससारनु अटकन छे ज्या राग नथी त्या द्वेष नथी; आ मान्य सिद्धात छे राग तीव्र कर्मबधननु कारण छे, एना क्षयथी आत्मसिद्धि छे.

शिक्षापाठ ४५ सामान्य मनोरथ

सवैया

मोहिनिभाव विचार अधीन थई,
ना निरखुं नयने परनारी,
पत्थरतुल्य गणुं परवैभव,
निर्मळ तात्त्विक लोभ समारी!

द्वादश व्रत अने दीनता धरि,
सात्विक थाउं स्वरूप विचारी,
ए मुज नेम सदा शुभ क्षेमक,
नित्य अखंड रहो भवहारी १

ते त्रिशलातनये मन चिंतवि,
ज्ञान, विवेक, विचार वधारुं,
नित्य विशोध करी नव तत्त्वनो,
उत्तम बोध अनेक उच्चारुं

संशयबीज उगे नहिं अंदर,
जे जिननां कथनो अवधारुं
राज्य, सदा मुज एज मनोरथ,
धार, थशे अपवर्ग, उतारुं २

शिक्षापाठ ४६. कपिलमुनि भाग १

कौंसाबी नामनी एक नगरी हती त्याना राजदरबारमा राज्यना आभूषणरूप काश्यप नामनो एक शास्त्री रहेतो हतो. एनी स्त्रीनुं नाम श्रीदेवी हतु तेना उदरथी कपिल नामनो एक पुत्र जन्म्यो हतो ते पदर वर्षनो थयो सारे तेना पिता परधाम गया कपिल लाडपाडमा उछरेलो होवाथी कइ विशेष विद्वता पाम्यो नहतो, तेथी एना पितानी जगो कोइ बीजा विद्वानने मळी काश्यपशास्त्री जे पुजी कमाइ गया हता ते कमानामा अशक्त एवा कपिले खाइने पुरी करी श्रीदेवी एक दिवस घरना बारणामां उभी हती त्या बे चार नोकरो सहित पोताना पतिनी शास्त्रीयपदवी पामेलो विद्वान जतो तेना जोवामा आव्यो घणा मानथी जता आ शास्त्रीने जोइने श्रीदेवीने पोतानी पूर्व स्थितिनु स्मरण थइ आव्यु. ज्यारे मारा पति आ पदवीपर हता सारे हु केवुं सुख भोगवती हती! ए मारु सुख तो गयु परतु मारो पुत्र पण पुरु भण्यो नहीं. एम विचारमा डोलता डोलता तेनी आखमाथी दड दड आसु खरवा मड्या. एवामा फरतो फरतो कपिल सा आवी पहोच्यो; श्रीदेवीने रडती जोइ तेनु कारण पूछ्यु. कपिलना बहु आग्रहथी श्रीदेवीए जे हतु ते कही बताव्यु पछी कपिल बोल्यो "जो मा! हु बुद्धिशाळी छउ, परन्तु मारी बुद्धिनो उपयोग जेवो जोइए तेवो थइ शक्यो नथी. एटले विद्या वगर हु ए पदवी पाम्यो नहीं. तु कहे सां जइने हवे हु माराथी बनती विद्या साध्य करु; श्रीदेवीए खेद साथे कह्युः "ए ताराथी बनी शके नहीं, नही तो आर्यावर्त्तनी मर्यादापर आवेली श्रावस्ति नगरीमां इंद्रदत्त नामनो तारा पितानो मित्र रहे छे, ते अनेक विद्यार्थीयोने विद्यादान दे छे; जो ताराथी

त्यां जशो तो धारेली सिद्धि थाय नहीं" एक बे दिवस रोकाई सज्ज थई अस्तु कही कपिलजी पंथे पड्या

अवधे पहोंचतां कपिल श्रावस्तिए शास्त्रीजीने घेर आवी पहोंच्या प्रणाम करीने पोतानो इतिहास कही बताव्यो. शास्त्रीजीए मित्रपुत्रने विद्यादान आपवाने माटे बहु आनंद देखाड्यो, पण कपिल आगळ कंई पूंजी नहोती के ते तेमांथी खाय, अने अभ्यास करी शके, एथी करीने तेने नगरमां याचवा जवुं पडतुं हतुं याचतां याचतां बपोर थई जतां हतां, पछी रसोई करे, अने जमे त्यां सांजनो थोडो भाग रहेतो हतो, एटले कंई अभ्यास करी शकतो नहोतो पंडिते तेनुं कारण पूछ्युं त्यारे कपिले ते कही बताव्युं पंडित तेने एक गृहस्थ पासे तेडी गया ते गृहस्थे कपिलनी अनुकंपा खातर एने हमेशां भोजन मळे एवी गोठवण एक विधवा ब्राह्मणीने त्यां करी दीधी जेथी कपिलने ए एक चिंता ओछी थई

शिक्षापाठ ४७ कपिलमुनि भाग २

ए नानी चिंता ओछी थई त्यां बीजी मोटी जंजाळ उभी थई भद्रिक कपिल हवे युवान् थयो हतो, अने जेने त्यां ते जमवा जतो ते विधवा बाई पण युवान् हती तेनी साथे तेना घरमां बीजुं कोई माणस नहोतुं हमेशनो परस्परनो वातचितनो संबंध वध्यो वधीने हास्यविनोदरूपे थयो; एम करतां करतां बन्नेने प्रीति बंधाई. कपिल तेनाथी लुब्धायो! एकांत बहु अनिष्ट चीज छे!!

विद्या प्राप्त करवानु ते भूली गयो गृहस्थ तरफथी मळता सीधाथी वन्नेनु माड पुरु थतु हतु; पण लूगडालत्ताना वाग थया कपिले गृहस्थाश्रम माडी बेठा जेनु करी मूक्यु. गमे तेवो उता हलुकर्मी जीव होवाथी ससारनी विशेप लोताळनी तेने माहिती पण नहोती एथी पैसा केम पेदा करवा ते विचारो ते जाणतो पण नहोतो चचळ स्त्रीए तेने रस्तो वताव्यो के, मुझावामा कइ वळवानु नथी; परतु उपायथी सिद्धि छे आ गामना राजानो एवो नियम छे के, सवारमा पहेलो जइ जे ब्राह्मण आशिर्वाद आपे तेने बे मासा सोनु आपवु त्या जो जइ शको अने प्रथम आशिर्वाद आपी शको, तो ते बे मासा सोनु मळे. कपिले ए वातनी हा कही आठ दिवस सुधी आटा खाधा पण वखत वित्या पछी जाय एटले कइ वळे नही एथी तेणे एक दिवस एवो निश्चय कर्यो के, जो हु चोकमा सुउ तो चीवट राखीने उठाशे पछी ते चोकमा सुतो, अधरात भागता चद्रनो उदय थयो. कपिले प्रभात समीप जाणीने मुठीओ वाळीने आशिर्वाद देवा माटे दोडता जवा माड्यु रक्षपाळे चोर जाणीने तेने पकडी राख्यो एक करता बीजु थइ पड्यु. प्रभात थयो एटले रक्षपाळे तेने लइ जइने राजानी समक्ष उभो राख्यो कपिल नेभान जेवो उभो रह्यो, राजाने तेना चोरना लक्षण भास्या नही एथी तेने सघळु वृत्तात पूछ्यु चद्रना प्रकाशने सूर्य समान गणनारनी भद्रिकतापर राजाने दया आवी तेनी दरिद्रता टाळवा राजानी इच्छा थइ एथी कपिलने कह्यु, आशिर्वादने माटे थइ तारे जो एटली बधी तरखड थइ पडी छे तो हवे तारी इच्छा पुरतु तु मागी ले हु तने आपीश कपिल थोडी वार मूढ जेवो रह्यो एथी राजाए कह्यु, केम विप्र, कइ मागता नथी? कपिले उत्तर आप्यो; मारु मन हजु स्थिर थयु नथी, एटले

शुं मागवुं ते सुझतु नथी राजाए सामेना बागमा जइ त्यां बेसीन स्वस्थता पूर्वक विचार करी कपिलने मागवानु कहु एटले कपि ते बागमां जइने विचार करवा बेठो

शिक्षापाठ ४८ कपिलमुनि भाग ३

वे मासा सोनु लेवानी जेनी इच्छा हती ते कपिल हवे तृष्णातरगमां घसडायो पाच महोर मागवानी इच्छा करी तो सा विचार आव्यो के पांचथी कइ पुरु थनार नथी माटे पचवीश महोर मागवी ए विचार पण फर्यो पचवीश महोरथी कइ आखु वर्ष उतराय नही माटे सो महोर मागवी, त्या वळी विचार फर्यो सो महोरे बे वर्ष उतरी, वैभव भोगवीए, पाछा दु खना दु ख माटे एक हजार महोरनी याचना करवी ठीक छे, पण एक हजार महोर छोकराछैयाना बेचार खर्च आवे के एवु थाय तो पुरु पण शु थाय? माटे दश हजार महोर मागवी के जेथी जींदगी पर्यंत पण चिंता नही त्या वळी इच्छा फरी दश हजार महोर खवाई जाय एटले पछी मुडी वगग्ना थई रहेवु पडे माटे एक लाख महोरनी मागणी करु के जेना व्याजमा वधा वैभव भोगवु, पण जीव! लक्षाधिपति तो घणाय छे एमा आपणे नामाकित क्याथी थवाना? माटे करोड महोर मागवी के जेथी महान् श्रीमंतता कहेवाय वळी पाछो रग फर्यो महान् श्रीमततायी पण घेर अमल कहेवाय नहीं माटे राजानु अर्धु राज्य मागवुं, पण जो अर्धु राज्य मागीश तोय राजा मारा तुल्य गणाशे अने वळी हु एनो याचक पण गणाइश माटे मागवु तो आखु राज्य मागवु एम ए तृष्णामा डुब्यो,

परतु तुच्छ ससारी एटले पाछो वळ्यो, भला जीव! आपणे एवी कृतघ्नता शा माटे करवी पडे के जे आपणने इच्छा प्रमाणे आपवा तत्पर थयो तेनुज राज्य लई लेवु, अने तेनेज भ्रष्ट करवो? खर जोता तो एमा आपणीज भ्रष्टता छे. माटे अर्धु राज्य मागवु; परतु ए उपाधिए मारे नथी जोइती त्यारे नाणानी उपाधि पण क्या ओछी छे? माटे करोड लाख मूकीने सो रसें महोरज मागी लेवी. जीव, सो रसें महोर हमणा आवशे तो पछी विपयनेभनमाज वखत चाल्यो जशे, अने विद्याभ्यास पण धर्यो रहेशे; माटे पाच महोर हमणा तो लई जवी पछीनी वात पछी अरे! पाच महोरनीए हमणा कइ जरर नथी; मात्र बे मासा सोनु लेवा आव्यो हतो तेज मागी लेवु. आ तो जीव बहु थई तृष्णासमुद्रमां तें बहु गळका खाधा. आखु राज्य मागता पण तृष्णा छीपती नहोती, मात्र सतोप अने विवेकथी ते घटाडी तो घटी. ए राजा जो चक्रवर्त्ती होत तो पछी हुं एथी विशेप शु मागी शकत? अने विशेप ज्या सुधी न मळत सा सुधी मारी तृष्णा शमात पण नहीं; ज्या सुधी तृष्णा समात नहीं सा सुधी हु सुखी पण नहोत. एटलेथी ए मारी तृष्णा टळे नहीं तो पछी बे मासाथी करीने क्याथी टळे? एनो आत्मा सवळीए आव्यो अने ते बोल्यो, हवे मारे ए बे मासा सोनानु पण कइ काम नथी बे मासाथी वधीने हु केटले सुधी पहोंच्यो! सुख तो सतोपमाज छे तृष्णा ए ससार वृक्षनु बीज छे. एनो हे! जीव, तारे शु खप छे? विद्या लेतां तु विपयमा पडी गयो; विपयमा पडवाथी आ उपाधिमां पड्यो; उपाधि वडे करिने अनत तृष्णा समुद्रना तरगमा तु पड्यो एक उपाधिमाथी आ ससारमां एम अनत उपाधि वेठवी पडे छे. एथी एनो साग करवो उचित छे सस सतोप जेवुं निरुपाधि सुख एके नथी. एम विचारता

शुं मागवुं ते सूझतु नथी राजाए मामेना नागमा जइ त्या बेमीने स्वस्थता पूर्वक विचार करी कपिलने मागवानु कह्यु एटले कपिल ते नागमा जइने विचार करवा बेठो

शिक्षापाठ ४८ कपिलमुनि भाग ३

बे मासा सोनु लेवानी जेनी इच्छा हती ते कपिल हवे तृष्णातरगमा घसडायो पाच महोर मागवानी इच्छा करी तो त्यां विचार आव्यो के पाचथी कइ पुरु थनार नथी माटे पचवीश महोर मागवी ए विचार पण फर्यो पचवीश महोरथी कइ आखु वर्ष उतराय नहीं माटे सो महोर मागवी, त्या वळी विचार फर्यो सो महोरे बे वर्ष उतरी, वैभव भोगवीए, पाछा दु'खना दु ख माटे एक हजार महोरनी याचना करवी ठीक छे, पण एक हजार महोर छोकराछैयाना वेचार खर्च आवे वे एवु थाय तो पुरु पण शु थाय ? माटे दश हजार महोर मागवी के जेथी जींदगी पर्यंत पण चिंता नहीं त्या वळी इच्छा फरी दश हजार महोर खवाई जाय एटले पछी मुडी वगरना थई रहेवु पडे माटे एक लाख महोरनी मागणी करु के जेना व्याजमा बधा वैभव भोगवुं, पण जीव ! लक्षाधिपति तो घणाय छे एमा आपणे नामाकित क्याथी थवाना ? माटे करोड महोर मागवी के जेथी महान् श्रीमतता कहेवाय वळी पाछो रग फर्यो महान् श्रीमतताथी पण घेर अमल कहेवाय नहीं माटे राजानु अर्धु राज्य मागवुं, पण जो अधु राज्य मागीश तोय राजा मारा तुल्य गणाशे अने वळी हु एनो याचक पण गणाइश माटे मागवु तो आखुं राज्य मागवु एम ए तृष्णामा डुब्यो,

विचारता, तृष्णा शमाववाथी ते कपिलना अनेक आवरण क्षय थया तेनु अत.करण प्रफुल्लित अने बहु विवेकशील थयु विवेकमा ने विवेकमा उत्तम ज्ञानवडे ते स्वात्मनो विचार करी शक्यो अपूर्वश्रेणिए चढी ते कैवल्यज्ञानने पाम्यो

तृष्णा कवी कनिष्ट वस्तु छे! ज्ञानीओ एम कहे छे के तृष्णा आकाशना जेवी अनत छे, निरतर ते नवयौवन रहे छे कइक चाहना जेटलु मळ्यु एटले चाहना वधारी दे छे सतोष एज कल्पवृक्ष छे, अने एज मात्र मनोवांछितता पूर्ण करे छे

शिक्षापाठ ४९ तृष्णानी विचित्रता.

मनहर छद

(एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा)

हती दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने,
मळी पटेलाइ त्यारे ताकी छे शेठाइने,
सापडी शेठाइ त्यारे ताकी मंत्रिताइ अने,
आवी मत्रिताइ त्यारे ताकी नृपताइने
मळी नृपताइ त्यारे ताकी देवताइ अने,
दीठी देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने,
अहो! राज्यचंद्र मानो मानो शकराइ मळी,
वधे तृष्णाइ तोय जाय न मराइने १

(२)

करोचली पडी डाढी डाचातणो दाट वळ्यो,
काळी केशपटी विषे, श्वेतता छवाइ गइ;
सूंघवु, सांभळवु ने, देखवु ते माडी वळ्युं,
तेम दांत आवली ते, खरी, के खवाइ गइ.
वळी केड वांकी, हाड गयां, अंगरंग गयो,
उठवानी आय जतां लाकडी लेवाइ गइ;
अरे! राज्यचंद्र एम, युवानी हराइ पण,
मनथी न तोय रांड, ममता मराइ गइ   २

(३)

करोडोना करजना, शीरपर डंका वागे,
रोगथी रुंधाइ गयु, शरीर सूकाइने;
पुरपति पण माथे, पीडवाने ताकी रह्यो,
पेट तणी वेठ पण, शके न पुराइने.
पितृ अने परणी ते, मचावे अनेक धध,
पुत्र, पुत्री भाखे खाउ खाउ दुःखदाइने,
अरे! राज्यचंद्र तोय जीव झावा दावा करे,
जंजाळ छडाय नहीं तजी तृषनाइने.   ३

(४)

थइ क्षीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी,
जीवन दीपक पाम्यो केवळ झखाइने;
छेल्ली इसे पड्यो भाळी भाइए त्यां एम भाख्यु,
हवे टाढी माटी थाय तो तो ठीक भाइने

हाथने हलावी त्या तो खोजी बुढे मूचव्यु ए,
बोल्या विना नेस राळ तारी चतुराइने !
अरे राज्यचद्र देखो देखो आशापाश केवो ?
जता गइ नहीं डोशे ममता मगाइने !

शिक्षापाठ ५० प्रमाद

धर्मनी अनादरता, उन्माद, आळस, कषाय ए सघळां प्रमादनां लक्षण छे

भगवाने उत्तराध्ययन सूत्रमा गौतमने कह्यु के, हे! गौतम, मनुष्यनु आयुष्य डाभनी अणीपर पडेला जळना बिंदु जेवु छे जेम ते बिंदुने पडतां वार लागती नथी तेम आ मनुष्यायु जतां वार लागती नथी ए बोधना काव्यमां चोथी कडी स्मरणमां अवश्य राखवा जेवी छे 'समय गोयम मापमाए'–ए पवित्र वाक्यना बे अर्थ थाय छे एक तो हे गौतम! समय एटले अवसर पामीने प्रमाद न करवो अने बीजो ए के मेपानुमेपमां चाल्या जता असख्यातमा भागना जे समय कहेवाय छे तेटलो वखत पण प्रमाद न करवो कारण देह क्षणभगुर छे, काळशीकारी माथे धनुष्यबाण चढावीने उभो छे लीधो के लेशे एम जजाळ थइ रही छे, त्यां प्रमादथी धर्म कर्त्तव्य रही जशे

अति विचक्षण पुरुषो ससारनी सर्वोपाधि त्यागीने अहो रात्र धर्ममां सावधान थाय छे, पळनो पण प्रमाद करता नथी विचक्षण पुरुषो अहो रात्रना थोडा भागने पण निरतर धर्मकर्त्तव्यमां गाळे

छे, अने अवसरे अवसरे धर्मकर्त्तव्य करता रहे छे पण मूढ पुरुषो निद्रा, आहार, मोजशोख अने विकथा तेमज रगरागमां आयु व्यतीत करी नाखे छे एनु परिणाम तेओ अधोगति रूप पामे छे

जेम बने तेम यतना अने उपयोगथी धर्मने साध्य करवो योग्य छे साठघडीना अहो रात्रमा वीशघडी तो निद्रामा गाळीए छीए. बाकीनी चाळीश घडी उपाधि, टेल्टप्पा अने रखडवामा गाळीए छीए ए करता ए साठघडीना वखतमाथी बे चार घडी विशुद्ध धर्मकर्त्तव्यने माटे उपयोगमा लइए तो बनी शके एवु छे एनु परिणाम पण केवु सुदर थाय!

पळ ए अमूल्य चीज छे चक्रवर्त्ती पण एक पळ पामवा आखी रिद्धि आपे तो पण ते पामनार नथी एक पळ व्यर्थ खोवाथी एक भव हारी जवा जेवु छे एम तत्त्वनी दृष्टिए सिद्ध छे!

शिक्षापाठ ५१ विवेक एटले शुं?

लघु शिष्योः—भगवन्! आप अमने स्थळे स्थळे कहेता आवो छो के विवेक ए महान् श्रेयस्कर छे विवेक ए अधारामा पडेला आत्माने ओळखवानो दीवो छे विवेक वडे करीने धर्म टके छे विवेक नथी त्या धर्म नथी तो विवेक एटले शु? ते अमने कहो.

गुरुः—आयुष्यमनो! सत्यासत्यने तेने स्वरूपे करीने समजवा तेनु नाम विवेक

लघु शिष्यो'—सत्यने सत्य अने असत्यने असत्य कहेवानुं तो बधाय समजे छे त्यारे [illegible]! एओ धर्मनु मूळ पाम्या कहेवाय?

गुरु —तमे जे वात कहो छो तेनु एक दृष्टात आपो जोइए

लघु शिष्यो —अमे पोते कडवाने कडवुज कहीए छीए, मधुराने मधुर कहीए छीए झेरने झेर ने अमृतने अमृत कहीए छीए

गुरु —आयुष्यमानो! ए बधा द्रव्य पदार्थ छे, परतु आत्माने कइ कडवाश, कइ मधुराश, कयु झेर अने कयु अमृत छे? ए भावपदार्थोनी एथी कइ परीक्षा थइ शके?

लघु शिष्य —भगवन्! ए सबधी तो अमारु लक्ष पण नथी

गुरु —त्यारे एज समजवानु छे के ज्ञान-दर्शनरूप आत्माना सत्य भाव पदार्थने अज्ञान अने अदर्शन रूप असत् वस्तुए घेरी लीधा छे, एमा एटली बधी मिश्रता थइ गइ छे के परीक्षा करवी अति अति दुर्लभ छे; ससारना सुखो अनतिवार आत्माए भोगव्या छता, तेमाथी हजु पण मोह टल्यो नही, अने तेने अमृत जेवो गण्यो ए अविवेक छे, कारण ससार कडवो छे कडवा विपाकने आपे छे तेमज वैराग्य जे ए कडवा विपाकनु औषध छे, तेने कडवो गण्यो, आ पण अविवेक छे ज्ञान दर्शनादिगुणो अज्ञान दर्शने घेरी लइ जे मिश्रता करी नाखी छे ते ओळखी भाव अमृतमा आववु, एनु नाम विवेक छे कहो त्यारे हवे विवेक ए केवी वस्तु ठरी?

लघु शिष्य —अहो! विवेक एज धर्मनु मूळ अने धर्म रक्षक कहेवाय छे ते सत्य छे आत्म स्वरूपने विवेक विना ओळखी शकाय नहीं ए पण सत्य छे. ज्ञान, शील, धर्म, तत्व अने तप ए सघळा विवेक विना उदय पामे नहीं ए आपनु कहेवु यथार्थ छे जे विवेकी नथी ते अज्ञानी अने मद छे तेज पुरुष मत भेद अने मिथ्या दर्शनमां लपटाइ रहे छे आपनी विवेक सबंधीनी शिक्षा अमे निरतर मनन करीशु

शिक्षापाठ ५२ ज्ञानिओए वैराग्य शा माटे बोध्यो ?

ससारना स्वरुप सबधी आगळ केटलुक कहेवामा आव्यु छे. ते तमने लक्षमा हशे

ज्ञानिओए एने अनत खेदमय, अनत दुःखमय, अव्यवस्थित, चळविचळ, अने अनित्य कह्यो छे आ विशेपणो ल्गाडवा पहेला एमणे ससार सबधी सपूर्ण विचार करेलो जणाय छे अनत भवनु पर्यटन, अनतकाळनु अज्ञान, अनत जीवननो व्याघात, अनत मरण, अनत शोक ए वडे करीने ससारचक्रमा आत्मा भम्या करे छे ससारनी देखाती इद्रवारणा जेवी सुदर मोहिनीए आत्माने तटस्थ लीन करी नाख्यो छे. ए जेवु सुख आत्माने क्याय भासतु नथी मोहिनीथी सत्यसुख अने एनु स्वरुप जोवानी एणे आकाक्षा पण करी नथी पतगनी जेम दीपक प्रत्ये मोहिनी छे तेम आत्मानी ससार सबधे मोहिनी छे ज्ञानिओ ए ससारने क्षणभर पण सुखरूप कहेता नथी ए ससारनी तल जेटली जग्या पण झेर विना रही नथी एक भुडथी करीने एक चक्रवर्त्ती सुधी भावे करीने सरखापणु रह्यु छे एटले चक्रवर्त्तीनो ससार सबधमा जेटली मोहिनी छे, तेटलीज बल्के तेथी विशेष भुडने छे. चक्रवर्त्ती जेम समग्र प्रजापर अधिकार भोगवे छे, तेम तेनी उपाधि पण भोगवे छे भुडने एमानु कशुए भोगववु पडतु नथी. अधिकार करता उलटी उपाधि विशेष छे चक्रवर्त्तीनो पोतानी पत्नी प्रत्येनो जेटलो प्रेम छे, तेटलोज अथवा तेथी विशेष भुडनो पोतानी भुंडणी प्रत्ये प्रेम रह्यो छे. चक्रवर्त्ती भोगथी जेटलो रस ले छे, तेटलोज रस भुड पण मानी बेठु छे चक्रवर्त्तीनी [illegible] वहोळता छे, तेटलीज

ने भुंडने एना वैभवना प्रमाणमां ने बन्ने जन्म्या छे अने बन्ने मरवानां छे आम सूक्ष्म विचारे जोता क्षणिकताथी, रोगथी, जरा वगेरेथी बन्ने ग्राहित छे. द्रव्ये चक्रवर्त्ती समर्थ छे, महा पुण्यशाळी छे, मुख्यपणे सातावेदनीय भोगवे छे, अने भुंड बिचारुं असातावेदनीय भोगवी रह्युं छे बन्नेने असाता-सातापण छे, परतु चक्रवर्त्ती महा समर्थ छे पण जो ए जीवन पर्यंत मोहान्ध रह्यो तो सघळी बाजी हारी जवा जेवु करे छे भुंडने पण तेमज छे चक्रवर्त्ती शलाकापुरुष होवाथी भुंडथी ए रूपे एनी तुलयना नथी, परतु आ स्वरूपे छे भोग भोगववामां बन्ने तुच्छ छे, बन्नेना शरीर पर मांसादिकना छे, असाताथी पराधिन छे, ससारनी आ उत्तमोत्तम पद्वी आवी रही तेमा आवु दु'ख, आवी क्षणिकता, आवी तुच्छता, आवु अंधपणु ए रह्यु छे तो पछी बीजे सुख शा माटे गणवु जोइए? ए सुख नथी, छता सुख गणो तो जे सुख भयवाळ अने क्षणिक छे ते दु खज छे अनत ताप, अनत शोक, अनत दु ख जोइने ज्ञानिओए ए ससारने पुठ दीधी छे, ते सत्य छे ए भणी पाछु वाळी जोवा जेवुं नथी त्या दु ख दु खने दु'खज छे दु खनो ए समुद्र छे

वैराग्य एज अनत सुखमां लइ जनार उत्कृष्ट भोमियो छे.

शिक्षापाठ ९३ महावीरशासन

हमणा जे जिन शासन प्रवर्त्तमान छे ते भगवान महावीरनु प्रणीत करेलु छे भगवान महावीरने निर्वाण पधार्या २४०० वर्ष उपर थइ गया मगध देशना क्षत्रियकुड नगरमा सिद्धार्थ राजानी

राणी त्रिशलादेवी क्षत्रियाणीनी कुखे भगवान महावीर जन्म्या. महावीर भगवानना मोटा भाइनु नाम नंदीवर्द्धमान हतु. तेमनी स्त्रीनु नाम यशोदा हतु. त्रीश वर्ष तेओ गृहस्थाश्रममा रह्या एकांतिक विहारे साडाबार वर्ष एक पक्ष तपादिक सम्यकाचारे एमणे अशेष घनघाती कर्मने बाळीने भस्मीभूत कर्या; अनुपमेय केवळज्ञान अने केवळदर्शन ऋजुवालिका नदीने किनारे पाम्या, एकंदर बहोतेर वर्ष लगभग आयु भोगवी सर्व कर्म भस्मीभूत करी सिद्धस्वरुपने पाम्या. वर्त्तमान चोवीशीना ए छेल्ला जिनेश्वर हता

ऐओनु आ धर्मतीर्थ प्रवर्त्ते छे ते २१००० हजार वर्ष एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी प्रवर्त्तशे, एम भगवतीसूत्रमा कह्यु छे

आ काळ दश आश्चर्यथी युक्त होवाथी ए श्री धर्मतीर्थ प्रत्ये अनेक विपत्तिओ आवी गइ छे, आवे छे, अने आवशे

जैनसमुदायमा परस्पर मतभेद बहु पडी गया छे परस्पर निंदाग्रंथोथी जजाळ माडी बेठा छे मध्यस्थ पुरुषो मतमतांतरमा नहीं पडता विवेक विचारे जिनशिक्षाना मूळ तत्त्वपर आवे छे, उत्तम शीलवान मुनियोपर भाविक रहे छे, अने सत्य एकाग्रताथी पोताना आत्माने दमे छे

काळप्रभावने लीधे वखते वखते शासन कइ न्यूनाधिक प्रकाशमा आवे छे

'वक्र जडाय पच्छिमा' एवु उत्तराध्ययन सूत्रमा वचन छे, एनो भावार्थ ए छे के छेल्ला तीर्थंकर (महावीरस्वामी)ना शिष्यो वाका अने जड थशे अने तेनी सत्यता विषे कोइने बोलवु रहे तेम नथी आपणे क्या तत्त्वनो विचार करीए छीए? क्या उत्तम शीलनो

विचार करीए छीए? नियमित रात धर्ममां क्यां व्यतीत करीए छीए? धर्मतीर्थना उदयने माटे क्यां लक्ष राखीए छीए? क्यां दाझथी धर्मतत्त्वने शोधीए छीए? श्रावक कुळमां जन्म्या एथी करीने श्रावक, ए वात आपणे भावे करीने मान्य करवी जोइता नथी, एने माटे जोइता आचार-ज्ञान-शोध के एमानां कंइ विशेप लक्षणो होय तेने श्रावक मानिये तो ते यथायोग्य छे द्रव्यादिक चटगक प्रकारनी सामान्य दया श्रावकने घेर जन्मे छे अने ते पाळे छे, ए वात वखाणवा लायक छे, पण तत्त्वने कोइक ज जाणे छे, जाण्या करतां झाझी शंका करनारा अर्धदग्धो पण छे, जाणीने अहंपद करनार पण छे परंतु जाणीने तत्त्वना कांटामां तोळनारा कोइक विरल छे परंपर आम्नायथी केवळ, मन पर्यव अने परम अवधिज्ञान विच्छेद गयां दृष्टिवाद विच्छेद गयु, सिद्धांतनो घणो भाग पण विच्छेद गयो, मात्र थोडा रहेला भागपर सामान्य समजणथी शंका करवी योग्य नथी जे शंका थाय ते विशेष जाणनारने पूछवी, त्याथी मनमानतो उत्तर न मळे तोपण जिनवचननी श्रद्धा चळविचळ करवी योग्य नथी, केमके अनेकांत शैलीना स्वरूपने विरला जाणे छे

भगवानना कथन रूप मणिना घरमां केटलाक पामर प्राणीयो दोषरूप काणु शोधवानु मथन करी अधोगति जन्य कर्म बांधे छे लीलोतरीने बदले तेनी सुकवणी करी लेवानु कोणे केवा विचारथी शोधी काढ्यु हशे? आ विषय बहु मोटो छे अहीं आगळ ए संबंधी कंइ कहेवानी योग्यता नथी टुंकामां कहेवानु के आपणे आपणा आत्माना सार्थक अर्थ मतभेदमां पडवुं नहीं

उत्तम अने शांत मुनिओनो समागम, विमळआचार विवेक, तेमज दया, क्षमा आदिनु सेवन करवुं महावीर तीर्थने अर्थे बने

तो विवेकी योग्य कारण सहित आपवो तुच्छ बुद्धिथी शकित थवु नहीं, एमा आपणु परम मगळ छे ए विसर्जन करवु नहीं

शिक्षापाठ ५४ अशुचि कोने कहेवी?

जिज्ञासु–मने जैन मुनियोना आचारनी वात बहु रुची छे एओना जेवो कोइ दर्शनना सतोमा आचार नथी. गमे तेवा शियाळानी टाढमा अमुक वस्त्रवडे तेओने गेडववु पडे छे, उनाळामा गमे तेवो ताप तपता छता पगमा तेओने पगरखा के माथापर छत्री लेवाती नथी उनी रेतीमा आ तापना लेवी पडे छे. यावज्जीव उनु पाणी पीए छे गृहस्थने घेर तेओ बेसी शकता नथी. शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे छे फूटी बदाम पण पासे राखी शकता नथी. अयोग्य वचन तेनाथी बोली शकातु नथी वाहन तेओ लइ शकता नथी आवा पवित्र आचारो, खरे! मोक्षदायक छे परतु नव वाडमा भगवाने स्नान करवानी ना कही छे ए वात तो मने यथार्थ बेसती नथी

सत्य–शा माटे बेसती नथी

जिज्ञासु–कारण एथी अशुचि वधे छे.

सत्य–कइ अशुचि वधे छे?

जिज्ञासु–शरीर मलिन रहे छे ए

सत्य–भाइ, शरीरनी मलिनताने अशुचि कहेवी ए वात कइ विचार पूर्वक नथी शरीर पोते शानु बन्यु छे एतो विचार करो. रक्त, पित्त, मळ, मूत्र श्लेष्मनो ए भडार छे तेपर मात्र त्वचा

छे, उत्ता ए पवित्र क्रम थाय? वळी साधुए ण्युं केंइ संसार कर्तव्य कर्युं न होय क जथी तेओने स्नान करवानी आवश्यकता रहे

जिज्ञासु–पण स्नान करवाथी तेओने हानि शुं छे?

सत्य–ए तो स्थूळबुद्धिनुज प्रश्न छे नहावाथी कामाग्निनी प्रदीप्तता, व्रतनो भंग, परिणामनु बदलवुं, असंख्याता जंतुनो विनाश ए सघळी अशुचि उत्पन्न थाय छे अने एथी आत्मा महा मलिन थाय छे प्रथम एनो विचार करवो जोइए जीवहिंसायुक्त शरीरनी जे मलिनता छे ते अशुचि छे अन्य मलिनताथी तो आत्मानी उज्वळता थाय छे, ए तत्त्व विचारे समजवानु छे, नहावाथी व्रतभंग थई आत्मा मलिन थाय छे, अने आत्मानी मलिनता एज अशुचि छे

जिज्ञासु–मने तमे बहु सुंदर कारण बताव्युं सूक्ष्म विचार करता जिनेश्वरना कथनथी बोध अने अत्यानंद प्राप्त थाय छे वारु, गृहस्थाश्रमीओए सासारिक प्रवर्त्तनथी थयेली अनिच्छित जीवहिंसादियुक्त एवी शरीर संबंधी अशुचि टाळवी जोइए के नहीं?

सत्य–समजण पूर्वक अशुचि टाळवीज जोइए जैन जेवु एके पवित्र दर्शन नथी, यथार्थ पवित्रतानो बोधक ते छे परंतु शौचाशौचनुं स्वरूप समजवु जोईए

शिक्षापाठ ५५ सामान्य नित्यनियम

प्रभात पहेला जाग्रत थइ नमस्कारमत्रनु स्मरण करी मनविशुद्ध करवु पापव्यापारनी वृत्ति रोकी रात्रि सबधी थयेला दोषनु उपयोग पूर्वक प्रतिक्रमण करवु

प्रतिक्रमण कर्या पछी यथावसर भगवाननी उपासना स्तुति तथा स्वाध्यायथी करी मनने उज्वळ करवु

माता पितानो विनय करी ससारीकाममा आत्महितनो लक्ष भूलाय नही तेम व्यवहारिक कार्यमा प्रवर्त्तन करवु

पोते भोजन करता पहेला सत्पात्रे दान देवानी परम आतुरता राखी तेवो योग मळता यथोचित प्रवृत्ति करवी

आहारविहारादिमा नियम सहित प्रवर्त्तवु.

सत्शास्त्रना अभ्यासनो नियमित वखत राखवो

सायकाळे उपयोगपूर्वक सध्यावश्यक करवु

निद्रा नियमितपणे लेवी

सुता पेहेला अढार पापस्थानक, द्वादशव्रतदोष, अने सर्व जीव प्रत्ये क्षमावी, पच परमेष्टि मत्रनु स्मरण करी, समाधि पूर्वक शयन करवु

आ सामान्य नियमो बहु मगळकारी छे जे अही सक्षेपमा कह्या छे विशेष विचारवाथी अने तेम प्रवर्त्तवाथी ते विशेष मगळदायक अने आनदकारक थशे

शिक्षापाठ ५६ क्षमापना

हे भगवान्! हुं बहु भूली गयो, में तमारा अमूल्य वचनने लक्षमां लीधां नहीं में तमारां कहेलां अनुपम तत्त्वनो विचार कर्यो नहीं तमारा प्रणीत करेला उत्तम शीलने सेव्युं नहीं तमारां कहेलां दया, शांति, क्षमा अने पवित्रता में ओळख्यां नहीं हे भगवान्! हुं भूल्यो, आथड्यो-रझळ्यो अने अनंत संसारनी विटम्बनामां पड्यो छउं हुं पापी छउं हुं बहु मदोन्मत्त अने कर्म रजथी करीने मलिन छउं हे परमात्मा! तमारा कहेला तत्त्वविना मारो मोक्ष नथी हुं निरंतर प्रपंचमां पड्यो छउं, अज्ञानथी अंध थयो छउं, मारामां विवेकशक्ति नथी अने हुं मूढ छउं, हुं निराश्रित छउं, अनाथ छउं निरागी परमात्मा! हवे हुं तमारं, तमारा धर्मनुं अने तमारा मुनिनुं शरण ग्रहुं छउं मारा अपराध क्षय थई हुं ते सर्व पापथी मुक्त थउं ए मारी अभिलाषा छे आगळ करेला पापोनो हुं हवे पश्चात्ताप करू छउं जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी ऊंडो उतरुं छउं तेम तेम तमारा तत्त्वना चमत्कारो मारा स्वरूपनो प्रकाश करे छे तमे निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंदस्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी, अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो हुं मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहुं छउं एक पळ पण तमारां कहेलां तत्त्वनी शंका न थाय, तमारा कहेला रस्तामां अहोरात्र हुं रहुं, एज मारी आकांक्षा अने वृत्ति थाओ! हे सर्वज्ञ भगवान्! तमने हुं विशेष शुं कहुं? तमाराथी कंई अजाण्युं नथी. मात्र पश्चात्तापथी हुं कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छुं छउं—ॐ शांति शांति शांति

शिक्षापाठ ५७ वैराग्य ए धर्मनुं स्वरुप छे

एक वस्त्र लोहीनी मलिनताथी रगायु तेने जो लोहीथी धोइए तो ते उजलु थई शके नहीं; पण वधारे रगाय छे जो पाणीथी ए वस्त्रने धोइए तो ते मलिनता जवानो सभव छे. आ दृष्टातपरथी आत्मापर विचार लइए अनादिकाळथी आत्मा ससारम्पी लोहीथी मलिन थयो छे मलिनता प्रदेशे प्रदेशे व्यापी रही छे' ए मलिनता आपणे विषय शृगारथी टाळवी धारीए तो टळी शके नहीं. लोहीथी जेम लोही धोवातु नथी, तेम शृगारथी करीने विषयजन्य आत्ममलिनता टळनार नथी ए जाणे निश्चयरप छे आ जगतमा अनेक धर्ममतो चाले छे, ते सबधी अपक्षपाते विचार करता आगळथी आटलु विचारवु अवश्यनु छे के ज्या स्त्रीओ भोगववानो उपदेश कर्यो होय, लक्ष्मीलीलानी शिक्षा आपी होय, रग, राग, गुल्तान अने एशआराम करवानु तत्त्व बताव्यु होय त्या आपणा आत्मानी सत् शाति नथी, कारण ए धर्ममत गणीए तो आखो ससार धर्ममतयुक्तज छे प्रत्येक गृहस्थनु घर एज योजनाथी भरपूर होय छे छोकराछैया, स्त्री, रग, राग, तान त्या जाम्यु पड्यु होय छे अने ते घर धर्ममदिर कहेवु, तो पछी अधर्मस्थानक कयु? अने जेम वर्त्तिए छीए तेम वर्त्तवाथी खोटु पण शु? कोइ एम कहे के पेला धर्ममदिरमा तो प्रभुनी भक्ति थइ शके छे तो तेओने माटे खेदपूर्वक आटलोज उत्तर देवानो छे के ते परमात्मतत्त्व अने तेनी वैराग्यमय भक्तिने जाणता नथी गमे तेम हो पण आपणे आपणा मूळ विचारपर आववु जोइए तत्त्वज्ञानीनी दृष्टिए आत्मा ससारमा विषयादिक मलिनताथी पर्यटन करे छे ते मलिनतानो क्षय विशुद्ध भाव जळथी होवो [illegible] तत्त्वरूप साबु अने [illegible]

जळ वडे, उत्तम आचाररूप पथ्थरपर, आत्मतत्त्वने धोनार निर्ग्रंथ गुरु छे

आमा जो वैराग्यजळ न होय तो बीजा बधा साहित्यो कंई करी शकता नथी, माटे वैराग्यने धर्मनुं स्वरूप कही शकाय अर्हंतप्रणीत तत्त्व वैराग्यज बोधे छे, तो तेज धर्मनुं स्वरूप एम गणवुं

शिक्षापाठ ५८ धर्मना मतभेद भाग १

आ जगतमां अनेक प्रकारथी धर्मना मत पडेला छे तेवा मतभेद अनादिकाळथी छे, ए न्यायसिद्ध छे पण ए मत भेदो कंई कंई रूपातर पाम्या जाय छे ए संबंधी केटलोक विचार करीए

केटलाक परस्पर मळता अने केटलाक परस्पर विरुद्ध छे, केटलाक केवळ नास्तिकना पाथरेला पण छे केटलाक सामान्य नीतिने धर्म कहे छे केटलाक ज्ञाननेज धर्म कहे छ केटलाक अज्ञान एज धर्ममत कहे छे केटलाक भक्तिने कहे छे, केटलाक क्रियाने कहे छे, केटलाक विनयने कहे छे अने केटलाक शरीरने साचववुं एनेज धर्ममत कहे छे

ए धर्ममत स्थापकोए एम बोध कर्यो जणाय छे के अमे जे कहीए छीए ते सर्वज्ञवाणीरूप छे, के सत्य छे बाकीना सघळा मतो असत्य अने कुतर्कवादी छे, तथा परस्पर ते मत वादीओए योग्य के अयोग्य खंडन कर्युं छे वेदांतना उपदेशक एज बोधे छे, सांख्यनो पण एज बोध छे, बौधनो पण एज बोध छे न्यायमत-

वाळानो पण एज बोध छे; वैशेपिकनो एज बोध छे; शक्तिपथीनो एज बोध छे; वैष्णवादिकनो एज बोध छे; इस्लामीनो एज बोध छे. अने एज रीते क्राइस्टनो एम बोध छे के आ अमारुं कथन तमने सर्व सिद्धि आपशे. त्यारे आपणे हवे शु विचार करवो?

वादी प्रतिवादी बन्ने साचा होता नथी, तेम बन्ने खोटा होता नथी. बहु तो वादी कइक वधारे साचो; अने प्रतिवादी कइक ओछो खोटो होय अथवा प्रतिवादी कइक वधारे साचो, अने वादी कइक ओछो खोटो होय केवळ बन्नेनी वात खोटी होवी न जोइए. आम विचार करता तो एक धर्ममत साचो ठरे, अने बाकीना खोटा ठरे

जिज्ञासु—ए एक आश्चर्यकारक वात छे सर्वने असत्य के सर्वने सत्य केम कही शकाय? जो सर्वने असत्य एम कहीए तो आपणे नास्तिक ठरीए! अने धर्मनी सचाइ जाय आ तो निश्चय छे के धर्मनी सचाइ छे, तेम जगत्पर ते अवश्य छे एक धर्ममत सत्य अने बाकीना सर्व असत्य एम कहीए तो ते वात सिद्ध करी बताववी जोइए सर्व सत्य कहीए तो तो ए रेतीनी भीत जेवी वात करी, कारण के तो आटला बधा मतभेद केम पडे? जो कइ पण मतभेद न होय तो पछी जुदा जुदा पोतपोताना मतो स्थापवा शा माटे यत्न करे? एम अन्योन्यना विरोधथी थोडीवार अटकवु पडे छे.

तोपण ते सबधी अत्रे कइ समाधान करीशु. ए समाधान सत्य अने मध्यस्थभावनानी दृष्टिथी कर्यु छे एकातिक के मतातिक दृष्टिथी कर्यु नथी पक्षपाती के अविवेकी नथी; उत्तम अने विचारवा जेवु छे देखावे ए सामान्य लागशे, परतु सूक्ष्म विचारथी बहु भेदवाळु लागशे

शिक्षापाट ५९ धर्मना मतभेद भाग २

अाल्लु तो तमारे स्पष्ट मानवु के गमे ते एक धर्म आ लोकपर सपूर्णसत्यता धरावे छे हवे एक दर्शनने सत्य कहेता बाकीना धर्ममतने केवळ असत्य कहेवा पडे, पण हु एम कही न शकुं शुद्ध आ मतानदाता निश्चयनयवडे तो ते असत्यरूप ठरे, परतु व्यवहार-नये ते असत्य कही शकाय नही एक सत्य अने बाकीना अपूर्ण अने सदोष छे एम कहु छउ तेमज केटलाक कुतर्कवादी अने नास्तिक छे ते केवळ असत्य छे, परतु जेओ परलोक सबधी के पाप सबधी स्हपण बोध के भय बतावे छे ते बातना धर्ममतने अपूर्ण अने सदोष कही शकाय छे एक दर्शन जे निर्दोष अने पूर्ण कहेवानु छे ते विषेनी वात हमणा एक बाजु राखीए

हवे तमने शका थशे के सदोष अने अपूर्ण एवु कथन एना प्रवर्तके शा माटे बोध्यु हशे? तेनु समाधान थवु जोइए एनु समाधान एम छे के ते धर्ममतवाळाओनी ज्या सुधी बुद्धिनी गति पहोची त्या सुधी तेमणे विचारो कर्या अनुमान, तर्क अने उपमादिक आधारवडे तेओने जे कथन सिद्ध जणायु ते प्रत्यक्षरूपे जाणे सिद्ध छे एवु तेमणे दर्शाव्यु, जे पक्ष लीधो तेमा मुख्य एकांतिक वाद लीधो, भक्ति, विश्वास, नीति, ज्ञान, क्रियो आदि एक पक्षने विशेष लीधो, एथी बीजा मानवा योग्य विषयो तेमणे दूषित करी दीधा वळी जे विषयो तेमणे वर्णव्या ते सर्व भाव भेदे तेओए कर जाण्या नहोता, पण पोतानी बुद्धि अनुसार बहु वर्णव्या. तार्किक सिद्धात दृष्टाताडिकथी सामान्य बुद्धिवाळा आगळ के जडभरत आगळ तेओए सिद्ध करी बताव्यो कीर्ति, लोकहित, के भगवान मनावानी आकाक्षा एमानी एकादि पण एमना मननो

भ्रमणा होवाथी अत्युग्र उद्यमादिथी तेओ जय पाम्या. केटलाके शृगार अने लोकेच्छित साधनोथी मनुष्यना मन हरण कर्या दुनिआ मोहमा तो मूळे डुबी पडी छे; एटले ए इच्छित दर्शनथी गाडररूपे थइने तेओए राजी थइ तेनु कहेलु मान्य राख्यु केटलाके नीति, तथा कइ वैराग्यादि गुण देखी–इत्यादिक देखी ते कथन मान्य राख्यु. प्रवर्त्तकनी बुद्धि तेओ करता विशेष होवाथी तेने पछी भगवानरूपज मानी लीधा केटलाके वैराग्यथी धर्ममत फेलावी पाछळथी केटलाक सुखशीलिया साधननो बोध खोशी पोताना मतनी वृद्धि करी. पोतानो मत स्थापन करवानी महान भ्रमणाए अने पोतानी अपूर्णता इत्यादिक गमे ते कारणथी बीजानु कहेलु पोताने न रुच्यु एटले तेणे जुदोज राह काड्यो आम अनेक मतमतातरनी जाळ थती गइ चार पाच पेढी एकनो एक धर्ममत रह्यो एटले पछी ते कुळधर्म थइ पड्यो एम स्थळे स्थळे थतु गयु

शिक्षापाठ ६० धर्मना मतभेद भाग ३

जो एक दर्शन पूर्ण अने सत्य न होय तो बीजा धर्ममतने अपूर्ण अने असत्य कोइ प्रमाणथी कही शकाय नहीं, ए माटे थइने जे एक दर्शन पूर्ण अने सत्य छे तेना तत्त्वप्रमाणथी बीजा मतोनी अपूर्णता अने एकातिकता जोइए

ए बीजा धर्ममतोमा तत्त्वज्ञान सबधी यथार्थ सूक्ष्म विचारो नथी. केटलाक जगत्कर्त्तानो बोध करे छे, पण जगत्कर्त्ता प्रमाणवडे सिद्ध थइ [illegible] केटलाक ज्ञानथी मोक्ष

कहे छे ते एकांतिक छे, तेमज क्रियाथी मोक्ष छे एम कहेनारा पण एकांतिक छे ज्ञान, क्रिया ए बन्नेथी मोक्ष कहेनारा तेना यथार्थ स्वरूपने जाणता नथी, अने ए बन्नेना भेद श्रेणिबंध नथी कही शक्या एज एमनी सर्वज्ञतानी खामी जणाइ आवे छे ए धर्ममत-स्थापको सद्देवतत्त्वमा कहेला अष्टादश दूषणोथी रहित नहोता एम एओए उपदेशेला शास्त्रो अथवा तेमना चरित्रोपरथी पण तत्त्वनी दृष्टिए जोता जणाय छे केटलाक मतोमां हिंसा, अब्रह्मचर्य इत्यादि अपवित्र आचरणनो बोध छे ते तो सहजमा अपूर्ण अने सरागीना स्थापेला जोवामां आवे छे कोइए एमा सर्वव्यापक मोक्ष, कोइए कइ नहीं ए रूप मोक्ष, कोइए साकार मोक्ष अने कोइए अमुक काळ सुधी रही पतित थवु ए रूप मोक्ष मान्यो छे, पण एमाथी कोइ वात तेओनी सप्रमाण थइ शकती नथी एओना विचारोनुं अपूर्ण-पणु निष्पृहीतत्त्ववेत्ताओए दर्शाव्यु छे, ते यथावस्थित जाणवु योग्य छे

वेद शिवायना बीजा मतोना प्रवर्त्तकोना चरित्रो अने विचारो इत्यादिक जाणवाथी ते मतो अपूर्ण छे एम जणाई आवे छे वर्त्तमानमा जे वेदो छे ते घणा प्राचीन ग्रथो छे तेथी ते मतनु प्राचीनपणुं छे, परतु ते पण हिंसाए करीने दूषित होवाथी अपूर्ण छे, तेमज सरागीनां वाक्य छे एम स्पष्ट जणाय छे

जे पूर्ण दर्शन विषे अत्रे कहेवानु छे ते जैन एटले निरागीना स्थापन करेला दर्शन विषे छे एना बोधदाता सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी हता, काळभेद छे तोपण ए वात सिद्धांतिक जणाय छे दया, ब्रह्मचर्य, शील, विवेक, वैराग्य, ज्ञान, क्रियादि एना जेवां पूर्ण एकए वर्णव्यां नथी तेनी साथे शुद्ध आत्मज्ञान, तेनी कोटिओ,

जीवना च्यवन, जन्म, गति, विग्रहगति, योनिद्वार, प्रदेश, काळ, तेना स्वरप-ए विषे एवो सूक्ष्म बोध छे के जेवडे तेनी सर्वज्ञतानी नि.शकता थाय. काळभेदे परपराम्नायथी केवळज्ञानादि ज्ञानो जोवामा नथी आवता, छता जे जे जिनेश्वरना रहेला सिद्धातिक वचनो छे ते अखड छे तेओना केटलाक सिद्धातो एवा सूक्ष्म छे के जे एकेक विचारता आखी जीदगी वही जाय

जिनेश्वरना कहेला धर्मतत्त्वथी कोइ पण प्राणीने लेश खेद उत्पन्न थतो नथी. सर्व आत्मानी रक्षा अने सर्वात्म शक्तिनो प्रकाश एमा रह्यो छे ए भेदो वाचवाथी, समजवाथी अने ते पर अति अति सूक्ष्म विचार करवाथी आत्मशक्ति प्रकाश पामी जैनदर्शननी सर्वोत्कृष्टपणानी हा कहेवरावे छे बहु मननथी सर्व धर्ममत जाणी पछी तुलना करनारने आ कथन अवश्य सिद्ध थशे

निर्दोष दर्शनना मूळतत्त्वो अने सदोष दर्शनना मूळतत्त्वो विषे अहीं विशेष कही शकाय एटली जग्या नथी.

शिक्षापाठ ६१ सुखविषे विचार भाग १

एक ब्राह्मण दरिद्रावस्थाथी बहु पीडातो हतो तेणे कटाळीने छेवटे देवनु उपासन करी लक्ष्मी मेळववानो निश्चय कर्यो पोते विद्वान होवाथी उपासन करवा पहेलां विचार कर्यो के कदापि देव तो कोइ तुष्ट थशे; पण पछी ते आगळ सुख कयु मागवु? पछी मागवानु कइ [illegible] अथवा न्यूनाधिक सूजे [illegible]

पण निरर्थक जाय, माटे एक वखत आखा देशमां प्रवास करवो ससारना महत्पुरुषोना धाम, वैभव अने सुख जोवा एम निश्चय करी ते प्रवासमां नीकळी पड्यो भारतना जे जे रमणीय अने रीद्धिमान शहेरो हता ते जोयां युक्तिप्रयुक्तिए राजाधिराजनां अत पुर, सुख अने वैभव जोयां श्रीमतोना आवास, वहिवट, वागबगीचा अने कुंटुंब परिवार जोया, पण एथी तेनु कोइ रीते मन मान्यु नही कोइने स्त्रीनु दु'ख, कोइने पतिनुं दुःख, कोइने अज्ञानथी दु ख, कोइने वहालाना वियोगनु दु'ख, कोइने निर्धनतानु दु ख, कोइने लक्ष्मीनी उपाधिनु दु ख, कोइने शरीर सबधी दु'ख, कोइने पुत्रनु दु'ख, कोइने शत्रुनुं दु'ख, कोइने जडतानु दु ख, कोइने मावापनुं दु ख, कोइने वैधव्य दु ख, कोइने कुटुबनुं दु ख, कोइने पोताना नीचकुळनुं दु ख, कोइने प्रीतिनुं दु ख, कोइने इर्ष्यानु दु ख, कोइने हानिनु दु ख, एम एक, वे विशेष के वधा दु ख, स्थळे स्थळे ते विप्रना जोवामा आव्यां एथी करीने एनु मन कोइ स्थळे मान्यु नहीं, ज्यां जुए त्यां दु ख, तो खरेज कोइ स्थळे सपूर्ण सुख तेना जोवामां आव्यु नही हवे त्यारे शु मागवु? एम विचारता विचारता एक महाधनाढ्यनी प्रशसा सांभळीने ते द्वारिकामा आव्यो द्वारिका महारीद्धिमान, वैभवयुक्त, वागवगीचा-वडे करीने सुशोभित अने वस्तीथी भरपूर शहेर तेने लाग्यु सुदर अने भव्य आवासो जोतो, अने पूछतो पूछतो ते पेला महाधनाढ्यने घेर गयो श्रीमत मुखग्रहमां बेठा हता तेणे अतिथि जाणीने ब्राह्मणने सन्मान आप्यु, कुशळता पूछी अने तेओने माटे भोजननी योजना करावी जरा वार जवा दई धीरजथी शेठे ब्राह्मणने पूछ्यु, आपनुं आगमन कारण जो मने कहेवा जेवु होय तो कहो. ब्राह्मणे क्षमा आप-क्षमा राखो, आपनो सघळी जातनो वैभव,

ग्राम, बागबगीचा इत्यादि मने देखाडवु पडशे; ए जोया पछी आगमन कारण कहीश. शेठे एनु कइ मर्मरूप कारण जाणीने कह्यु, भले, आनंदपूर्वक आपनी इच्छा प्रमाणे करो जम्या पछी ब्राह्मणे शेठे पोते साथे आवीने धामादिक बतावधा विनति करी. धनाढये ते मान्य राखी; अने पोते साथे जई बागबगीचा, धाम, वैभव ए सघळु देखाड्यु शेठनी स्त्री अने पुत्रो पण त्यां ब्राह्मणना जोवामा आव्या तेओए योग्यतापूर्वक ते ब्राह्मणनो सत्कार कर्यो. एओना रूप, विनय अने स्वच्छता जोइने तेमज तेओनी मधुरवाणी शाभळीने ब्राह्मण राजी थयो पछी तेनी दुकाननो वहिवट जोयो. तेमां सोएक वहिवटिया त्या बेठेला जोया तेओ पण मायाळु, विनयि अने नम्र ते ब्राह्मणना जोवामा आव्या एथी ते बहु संतुष्ट थयो. एनु मन अहीं कइक संतोषायु सुखी तो जगतमा आज जणाय छे एम तेने लाग्यु

शिक्षापाठ ६२ सुखविषे विचार भाग २

केवां एना सुंदर घर छे! केवी सुंदर तेनी स्वच्छता अने जाळवणी छे! केवी शाणी अने मनोज्ञ तेनी सुशील स्त्री छे! केवा तेना कांतिमान अने कह्यागरा पुत्रो छे! केवु संपीलु तेनु कुटुंब छे! लक्ष्मीनी महेरपण एने त्या केवी छे! आखा भारतमा एना जेवो बीजो कोइ [illegible] हवे तप करीने जो हु मागुं तो आ महाधनाढ्य जेवुज [illegible] बीजी चाहना करु नहीं.

दीवस वीती गयो अने रात्रि थइ सुवानो वखत थयो धनाढ्य अने ब्राह्मण एकांतमां बेठा हता, पछी धनाढ्ये विप्रने आगमन कारण कहेवा विनति करी

विप्र–हुं घेरथी एवो विचार करी नीकळ्यो हतो के वधारी वगेरे सुखी कोण छे ते जोउं, अने तप करीने पछी एना जेवुं सुख संपादन करवुं आखा भारत ने तेना सघळा रमणीय स्थळो जोया, परंतु कोइ राजाधिराजने त्यां पण मने संपूर्ण सुख जोवामां आव्युं नहीं ज्यां जोयुं त्यां आधि, व्याधि अने उपाधि जोवामां आवी आप भणी आवतां आपनी प्रशंसा सांभळी एटले हुं अहीं आव्यो, अने संतोष पण पाम्यो आपना जेवी रीद्धि, सत्पुत्र, कमाइ, स्त्री, कुटुंब, घर वगेरे मारा जोवामां क्यांय आव्युं नथी आप पोते पण धर्मशील, सद्गुणी अने जिनेश्वरना उत्तम उपासक छो एथी हुं एम मानुं छउं के आपना जेवुं सुख बीजे नथी भारतमां आप विशेष सुखी छो उपासना करीने कदापि देव कने याचुं तो आपना जेवी सुखस्थिति याचुं

धनाढ्य—पंडितजी, आप एक बहु मर्मभरेला विचारथी नीकळ्या छो, एटले अवश्य आपने जेम छे तेम स्वानुभवी वात कहुं छउं, पछी जेम तमारी इच्छा थाय तेम करजो मारे त्यां आपे जे जे सुख जोयां ते ते सुख भारतवर्षमां क्यांय नथी एम आपे कह्युं तो तेम हशे, पण खरुं ए मने संभवतुं नथी, मारो सिद्धांत एवो छे के जगत्मां कोइ स्थळे वास्तविक सुख नथी जगत् दुःखथी करीने दाझतुं छे तमे मने सुखी जुओ छो परंतु वास्तविक रीते हुं सुखी नथी

विप्र–आपनु आ कहेवु कोइ अनुभवसिद्ध अने मार्मिक छे. में अनेक शास्त्रो जोया छे; छता आवा मर्मपूर्वक विचारो लक्षमा लेवा परिश्रमज लीधो नथी. तेम मने एवो अनुभव सर्वने माटे थइने थयो नथी. हवे आपने शु दुःख छे? ते मने कहो

धनाढ्य–पंडितजी आपनी इच्छा छे तो हु कहु छउ ते लक्षपूर्वक मनन करवा जेवु छे, अने ए उपरथी कइ रस्तो पामवा जेवु छे

शिक्षापाठ ६३ सुखविषे विचार भाग ३

जे स्थिति हमणा मारी आप जुवो छो तेवी स्थिति लक्ष्मी, कुटुब अने स्त्री संबधमा आगळ पण हती. जे वखतनी हु वात करु छउ, ते वखतने लगभग विश वर्ष थया व्यापार, अने वैभवनी वहोळाश ए सघळु वहिवट अवळो पडवाथी घटवा मड्यु. कोट्याधिपति कहेवातो हु उपराचापरी खोटना भार वहन करवाथी लक्ष्मी वगरनो मात्र त्रण वर्षमा थइ पड्यो. ज्या केवळ सवळु धारीने नाख्यु हतु त्या अवळु पड्यु एवामा मारी स्त्री पण गुजरी गइ ते वखतमा मने कइ संतान नहोतु जबरी खोटोने लीधे मारे अहींथी नीकळी जवु पड्यु मारा कुटुबीओए थती रक्षा करी, परतु ते आभ फाट्यानु थीगडु हतु अन्नने अने दातने वेर थयानी स्थितिए, हु बहु आगळ नीकळी पड्यो. ज्यारे हु त्याथी नीकळ्यो त्यारे मारा कुटुबीओ मने रोकी राखवा मड्या के तें गामनो दरवाजो पण दीठो नथी, माटे ... दइ शकाय नही ताारु ...

शरीर कंइ पण करी शके नहीं, अने तुं त्यां जा अने सुखी था तो पछी आव पण नहीं; माटे ए विचार तारे मांडी वाळवो घणा प्रकारथी तेओने समजाव्यो, त्यारे स्थितिमां आवीश त्यारे अवश्य अही आवीश, एम वचन दइ जावाबंदर हुं पर्यटने नकळी पड्यो

प्रारब्ध पाछा वळवानी तैयारी थइ दैवयोगे मारी कने एक दमडी पण रही नहोती एक के वे महीना उदर पोषण चाल्ले तेवुं साधन रह्यु नहोतु छतां जावामां हुं गयो, त्यां मारी बुद्धिए प्रारब्ध खील्व्या जे वहाणमा हुं बेठो हतो ते वहाणना नाविके मारी चपळता अने नम्रता जोइने पोताना शेठ आगळ मारां दु खनी वात करी ते शेठे मने नोकरी अमुक काममां गोठव्यो, जेमां हुं मारा पोषणथी चोगणु पेदा करतो हतो ए वेपारमां मारुं चित्त ज्यारे स्थिर थयु त्यारे भारतसाथे ए वेपार वधारवा में प्रयत्न कर्यु, अने तेमां फाव्यो वे वर्षमां पांच लाख जेटली कमाइ थइ पछी शेठ पासेथी राजी खुशीथी आज्ञा लइ में केटलोक माल खरीदी द्वारिकां भणी आववानुं कर्यु थोडे काळे त्यां आवी पहोच्यो त्यारे, बहु लोक सन्मान आपवा मने सामा आव्या हता हु मारां कुटुंबीओने आनदभावथी जइ मळ्यो तेओ मारा भाग्यनी प्रशसा करवा लाग्यां जावेथी लीधेला माले मने एकना पांच कराव्या पंडितजी! त्यां केटलाक प्रकारथी मारे पाप करवां पड्या हतां; पुरुं खावा पण हु पाम्यो नहोतो, परंतु एकवार लक्ष्मी साध्य करवानो जे प्रतिज्ञाभाव कर्यो हतो ते प्रारब्ध योगथी पळ्यो जे दु.खदायक स्थितिमां हु हतो ते दु'खमां शुं खामी हती? स्त्री, पुत्र एतो जाणे नहोताज, मावाप आगळथी परलोक पाम्यां हतां कुटुंबीओना वियोगवडे अने विना दमडीए जावे जे वखते हुं गयो ते वखतनी स्थिति अज्ञानदृष्टिथी आंखमां आंसु आणी दे तेवी छे, आ वखते

पण धर्ममां लक्ष राख्यु हतु. दिवसनो अमुक भाग तेमां रोकातो हतो; ते लक्ष्मी के एवी लालचे नहीं; परतु ससारदुःखथी ए तारनार साधन छे एम गणीने मोतनो भय क्षण पण दूर नथी, माटे ए कर्त्तव्य जेम बने तेम त्वराथी करी लेवु, ए मारी मुख्य नीति हती. दुराचारथी कइ सुख नथी; मननी तृप्ति नथी; अने आत्मानी मलिनता छे. ए तत्त्व भणी में मारु लक्ष दोरेलु हतु.

शिक्षापाठ ६४ सुखविषे विचार भाग ४

अही आव्या पछी हु सारा ठेकाणानी कन्या पाम्यो. ते पण सुलक्षणी अने मर्यादशील नीवडी, ए वडे करीने मारे त्रण पुत्र थया. वहिवट प्रबळ होवाथी अने नाणु नाणांने वधारतु होवाथी दश वर्षमा हु महाकोट्याधिपति थइ पड्यो. पुत्रना नीति, विचार, अने बुद्धि उत्तम रहेवा में बहु सुदर साधनो गोठव्या. जेथी, तेओ आ स्थिति पाम्या छे. मारां कुटुबीओने योग्य योग्य स्थळे गोठवी तेओनी स्थितिने सुधरती करी. दुकानना में अमुक नियमो बाध्या उत्तम धामनो आरभ पण करी लीधो आ फक्त एक ममत्व खातर कर्यु. गयेलु पाछु मेळव्यु; अने कुळ परपरानुं नामाकितपणु जतुं अटकाव्यु, एम कहेवरावा माटे आ सघळु कर्यु; एने हु सुख मानतो नथी जोके हु बीजा करता सुखी छउ; तोपण ए सातावेदनीय छे, सत्सुख नथी जगतमा बहुधा करीने असातावेदनीय छे में धर्ममां मारो काळ गाळवानो नियम राख्यो छे सत्शास्त्रोना ।। समागम,

महीनामा चार दिवस ब्रह्मचर्य, वनतुं गुप्तदान, ए आदिधर्ममये मारो काळ गाळु छु सर्व व्यवहार सबधीनी उपाधिमाथी केटलोक भाग बहु अशे में त्याग्यो छे पुत्रोने व्यवहारमा यथायोग्य करीने हु निर्ग्रंथ थवानी इच्छा राखु छउ हमणा निर्ग्रंथ थइ शकु तेम नथी, एमा ससारमोहिनी के एवु कारण नथी, परतु ते पण धर्मसबधी कारण छे गृहस्थधर्मना आचरण बहु कनिष्ट थइ गया छे, अने मुनियो ते सुधारी शकता नथी. गृहस्थ गृहस्थने विशेप बोध करी शके, आचरणथी पण असर करी शके, एटला माटे थइने धर्मसबधे गृहस्थ वर्गने हु घणे भागे बोधी यमनियममा आणु छउ दरसप्ताहिके आपणे त्या पाचसें जेटला सद्गृहस्थोनी सभा भराय छे आठ दिवसनो नवो अनुभव अने बाकीनो आगळनो धर्मानुभव एमने बे त्रण मुहूर्त्त बोधु छउ मारी स्त्री धर्मशास्त्रनो केटलोक बोध पामेली होवाथी ते पण स्त्री वर्गने उत्तम यमनियमनो बोध करी सप्ताहिक सभा भरे छे पुत्रो पण शास्त्रनो बनतो परिचय राखे छे विद्वानोनु सन्मान, अतिथिनो विनय, अने सामान्य सत्यता–एकज भाव–एवा नियमो बहुधा मारा अनुचरो पण सेवे छे एओ बधा एथी साता भोगवी शके छे लक्ष्मीनी साथे मारा नीति, धर्म, सद्गुण, विनय एणे जनसमुदायने बहु सारी असर करी छे राजासहित पण मारी नीतिवात अगीकार करे तेवु थयु छे आ सघळुं आत्मप्रशसा माटे हु कहेतो नथी, ए आपे स्मृतिमां राखवुं, मात्र आपना पूछेल्ा खुल्ासा दाखल आ सघळुं सक्षेपमां कहेतो जउ छउं

शिक्षापाठ ६५ सुखविषे विचार भाग ५

आ सघळा उपरथी हु सुखी छउ एम आपने लागी शकशे, अने सामान्य विचारे मने बहु सुखी मानो तो मानी शकाय तम छे धर्म, शील अने नीतिथी तेमज शास्त्रावधानथी मने जे आनद उपजे छे ते अवर्णनीय छे. पण तत्त्वदृष्टिथी हु सुखी न मनाउ. ज्या सुधी सर्व प्रकारे बाह्य अने अभ्यतर परिग्रह में साग्यो नथी, सा सुधी राग दोषनो भाव छे जो के ते बहु अशे नथी, पण छे, तो सा उपाधि पण छे सर्वसग परिसाग करवानी मारी सपूर्ण आकाक्षा छे, पण ज्या सुधी तेम थयु नथी सा सुधी कोइ प्रियजननो वियोग, व्यवहारमा हानि, कुटुबीनु दु ख ए थोडे अशे पण उपाधि आपी शके. पोताना देहपर मोत शिवाय पण नाना प्रकारना रोगनो सभव छे माटे केवळ निर्ग्रंथ, बाह्याभ्यतर परिग्रहनो साग, अल्पारभनो त्याग ए सघळु नथी थयु त्या सुधी, हु मने केवळ सुखी मानतो नथी हवे आपने तत्त्वनी दृष्टिए विचारता मालम पडशे के लक्ष्मी, स्त्री, पुत्र के कुटुब एवडे सुख नथी. अने एने सुख गणु तो ज्यारे मारी स्थिति पतित थइ हती त्यारे ए सुख क्या गयु हतु ? जेनो वियोग छे, जे क्षणभगुर छे अने ज्या अव्याबाध पणु नथी ते सपूर्ण के वास्तविक सुख नथी एटला माटे थइने हु मने सुखी कही शकतो नथी हु बहु विचारी विचारी व्यापार वहिवट करतो हतो, तोपण मारे आरभोपाधि, अनीति अने लेश पण कपट सेववु पडयु नथी, एम तो नथीज अनेक प्रकारना आरभ, अने कपट मारे सेववा पड्या हता आप जो धारता हो के देवोपासनथी लक्ष्मी प्राप्त करवी, तो ते जो पुण्य न होय तो काढे मळनार नथी   पुण्यथी मेळवेली लक्ष्मीवडे

अने मानप्रमुख वधारवा ते महापापना कारण छे; पाप नरकमां नाखे छे पापथी आत्मा महान् मनुष्यदेह एळे गुमावी दे छे एकतो जाणे पुण्यने खाइ जवां, वाकी वळी पापनुं बंधन करवुं, लक्ष्मीनी अने ते वडे आखा संसारनी उपाधि भोगववी ते हुं धारुं छउं के विवेकी आत्माने मान्य न होय में जे कारणथी लक्ष्मी उपार्जन करी हती, ते कारण में आगळ आपने जणाव्युं हतुं जेम आपनी इच्छा होय तेम करो आप विद्वान् छो हुं विद्वानने चाहुं छउं आपनी अभिलाषा होय तो धर्मध्यानमां प्रसक्त थइ सहकुटुंब अही भले रहो आपनी उपजीविकानी सरळ योजना जेम कहो तेम हुं रुचिपूर्वक करावी आपुं अही शास्त्राध्ययन अने सद्वस्तुनो उपदेश करो मिथ्यारंभोपाधिनी लोलुपतामां हुं धारुं छउं के न पडो, पछी आपनी जेवी इच्छा

पंडित—आपे आपना अनुभवनी बहु मनन करवा जेवी आख्यायिका कही. आप अवश्य कोइ महात्मा छो पुण्यानुबंधी पुण्यवान जीव छो, विवेकी छो, आपनी विचारशक्ति अद्भुत छे, हुं दरिद्रताथी कंटाळीने जे इच्छा राखतो हतो ते एकांतिक हती. आवा सर्व प्रकारना विवेकी विचार में कर्या नहोता आवो अनुभव—आवी विवेकशक्ति हुं गमे तेवो विद्वान् छउं छतां मारामां नथी, ए वात हुं सत्यज कहुं छउं आपे मारे माटे जे योजना दर्शावी ते माटे आपनो बहु उपकार मानुं छउं, अने नम्रतापूर्वक ए हुं अंगीकार करवा हर्ष बतावुं छउं हुं उपाधिने चाहतो नथी लक्ष्मीनो फंद उपाधिज आपे छे आपनुं अनुभवसिद्ध कथन मने बहु रुच्युं छे संसार बळतोज छे एमां सुख नथी आपे निरुपाधि मुनिसुखनी प्रशंसा कही ते सत्य छे ते सन्मार्ग परिणामे सर्वोपाधि,

आथि व्याधिथी तेमज सर्व अज्ञानभावथी रहित एवा शाश्वत मोक्षनो हेतु छे

शिक्षापाठ ६६ सुखविषे विचार भाग ६.

धनाढ्य—आपने मारी वात रुची एथी हु निरभिमानपूर्वक आनद पामु छउ. आपने माटे हु योग्य योजना करीश. मारा सामान्य विचारो कथानुरुप अही कहेवानी हु आज्ञा लउ छउ

जेओ मात्र लक्ष्मीने उपार्जन करवामां कपट, लोभ अने मायामा मुझाया पड्या छे ते बहु दुःखी छे तेनो ते पुरो उपयोग के अधुरो उपयोग करी शकता नथी मात्र उपाधिज भोगवे छे ते असख्यात पाप करे छे. तेने काळ अचानक लइने उपाडी जाय छे. अधोगति पामी ते जीव अनंतससार वधारे छे मळेलो मनुष्य देह निर्माल्य करी नाखे छे जेथी ते निरतर दु खीज छे

जेओए पोताना उपजीविका जेटला साधनमात्र अल्पारभथी राख्या छे, शुद्ध एक पत्नीव्रत्त, सतोष, परात्मानी रक्षा, यम, नियम, परोपकार, अल्पराग, अल्पद्रव्यमाया अने सत्य तेमज शास्त्राध्ययन राखेल छे, जे सत्पुरुषोने सेवे छे, जेणे निर्ग्रंथतानो मनोरथ राख्यो छे, बहु प्रकारे करीने ससारथी जे त्यागी जेवा छे, जेना वैराग्य अने विवेक उत्कृष्ट छे तेवा पुरुषो पवित्रतामा सुखपूर्वक काळ निर्गमन करे छे.

सर्व प्रकारना आरभ अने परिग्रहथी जेओ रहित थया छे, द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी जेओ अप्रतिबधपणे विचरे

छे, शत्रु-मित्र प्रत्ये जे समान दृष्टिवाळा छे अने शुद्ध आत्मध्यानमा जेमनो काळ निर्गमन थाय छे, अथवा स्वाध्याय ध्यानमा जे लीन छे, एवा जितेंद्रिय अने जितकषाय ते निर्ग्रंथो परम सुखी छे

सर्व घनघाती कर्मनो क्षय जेमणे कर्यो छे, चार कर्म पातळा जेना पड्या छे जे मुक्त छे, जे अनंतज्ञानी अने अनंतदर्शी छे ते तो संपूर्ण सुखीज छे मोक्षमां तेओ अनंत जीवनना अनंतसुखमा सर्व कर्मविरक्ततायी विराजे छे.

आम सत्पुरुषोए कहेलो मत मने मान्य छे. पहेलो तो मने त्याज्य छे बीजो हमणा मान्य छे, अने घणे भागे ए ग्रहण करवानो मारो बोध छे त्रीजो बहु मान्य छे अने चोथो तो सर्वमान्य अने सच्चिदानंद स्वरूप छे

एम पंडितजी आपनी अने मारी सुखसंबंधी वातचित थइ प्रसंगोपात ते वात चर्चता जइशु तेपर विचार करीशु आ विचारो आपने कह्याथी मने बहु आनंद थयो छे आप तेवा विचारने अनुकूळ थया एथी वळी आनंदमा वृद्धि थइ छे एम परस्पर वातचित करता करता हर्षभेर पछी तेओ समाधिभावथी शयन करी गया

जे विवेकीओ आ सुखसंबंधी विचार करशे तेओ बहु तत्त्व अने आत्मश्रेणिनी उत्कृष्टताने पामशे एमां कहेला अल्पारंभी, निरारंभी अने सर्वमुक्त लक्षणो लक्षपूर्वक मनन करवा जेवा छे जेम बने तेम अल्पारंभी थइ समभावथी जनसमुदायना हित भणी वळवु, परोपकार, दया, शांति, क्षमा अने पवित्रतानु सेवन करवु ए बहु सुखदायक छे निर्ग्रंथता विषे तो विशेष कहेवानु नथी मुक्तात्मा अनंत सुखमयज छे

शिक्षापाठ ६७ अमूल्य तत्त्वविचार

हरिगीत छंद

बहु पुण्यकेरा पुंजथी शुभ देह मानवनो मळ्यो,
तोये अरे! भवचक्रनो आंटो नहि एक्के टळ्यो;
सुख प्राप्त करतां सुख टळे छे लेश ए लक्षे लहो;
क्षण क्षण भयंकर भावमरणे कां अहो राची रहो? १

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो?
शुं कुटुंब के परिवारथी वधवापणुं, ए नय ग्रहो
वधवापणुं संसारनुं नर देहने हारी जवो,
एनो विचार नहीं अहोहो! एक पळ तमने हवो!!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमे त्यांथी भले,
ए दिव्यशक्तिमान् जेथी जंजिरेथी नीकळे!!
परवस्तुमां नहि मुंझवो, एनी दया मुजने रही,
ए त्यागवा सिद्धांत के पश्चात्दुःख ते सुख नहीं ३

हुं कोण छुं? क्यांथी थयो? शुं स्वरूप छे मारुं खरुं?
कोना संबंधे वळगणा छे? राखुं के ए परिहरुं?
एना विचार विवेक पूर्वक शांत भावे जो कर्या,
तो सर्व आत्मिकज्ञानना सिद्धांततत्त्व अनुभव्यां. ४

ते प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य केवळ मानवुं?
निर्दोष नरनुं कथन मानो तेह जेणे अनुभव्युं
रे! आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओळखो,
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो. ५

शिक्षापाठ ६८ जितेंद्रियता

ज्यां सुधी जीभ स्वादिष्ट भोजन चाहे छे, ज्यां सुधी नासिका सुगंध चाहे छे, ज्यां सुधी कान वारांगना आदिनां गायन अने वाजित्र चाहे छे, ज्यां सुधी आंख वनोपवन जोवानुं लक्ष राखे छे ज्यां सुधी त्वचा सुगंधीलेपन चाहे छे, त्यां सुधी ते मनुष्य निरागी, निर्ग्रंथ, निःपरिग्रही, निरारंभी अने ब्रह्मचारी थइ शकतो नथी मनने वश करवुं ए सर्वोत्तम छे एना वडे सघळी इंद्रियो वश करी शकाय छे मन जीतवुं बहु दुर्घट छे एक समयमां असंख्याता योजन चालनार अश्व ते मन छे एने थकाववुं बहु दुर्लभ छे एनी गति चपळ अने न झाली शकाय तेवी छे महा ज्ञानिओए ज्ञानरूपी लगामवडे करीने एने स्थंभित राखी सर्व जय कर्यो छे

उत्तराध्ययन सूत्रमां नमिराज महर्षिए शक्रेंद्रप्रत्ये एम कह्युं के दश लाख सुभटने जीतनार कइंक पड्या छे, परंतु स्वात्माने जीतनारा बहु दुर्लभ छे, अने ते दश लाख सुभटने जीतनार करता अत्युत्तम छे

मनज सर्वोपाधिनी जन्मदाता भूमिका छे मनज बंध अने मोक्षनुं कारण छे मनज सर्व संसारनी मोहिनी रूप छे ए वश थतां आत्मस्वरूपने पामवुं लेश मात्र दुर्लभ नथी

मनवडे इंद्रियोनी लोलुपता छे भोजन, वाजित्र, सुगंधी, स्त्रीनुं निरीक्षण, सुंदर विलेपन ए सघळुं मनज मागे छे ए मोहिनी आडे ते धर्मने संभारवा पण देतुं नथी संभार्या पछी सावधान थवा देतुं नथी सावधान थया पछी पतितता करवामां प्रवृत्त थाय छे एमां नथी फावतुं त्यारे सावधानीमां कइ न्यूनता पहोंचाडे छे जेओ ए

न्यूनता पण न पामता अडग्ग रहीने ते मनने जीते छे तेओ सर्वथा सिद्धिने पामे छे

मन कोइथीज अकस्मात् जीती शकाय छे, नहीं तो गृहस्थाश्रमे अभ्यासे करीने जीताय छे, ए अभ्यास निर्ग्रंथतामा बहु थइ शके छे, छता सामान्य परिचय करवा मागीए तो तेनो मुख्य मार्ग आ छे के ते जे दुरिच्छा करे तेने भूली जवी; तेम करवु नहीं ते ज्यारे शब्दस्पर्शादि विलास इच्छे, त्यारे आपवा नही टुकामा आपणे एथी दोरावु नही पण आपणे एने दोरवु, मोक्षमार्ग चिंतव्यामा रोकवुं. जितेंद्रियता विना सर्व प्रकारनी उपाधि उभीज रही छे त्यागे न त्याग्या जेवो थाय छे, लोक लज्जाए तेने सेववो पडे छे. माटे अभ्यासे करीने पण मनने स्वाधीनतामा लई अवश्य आत्महित करवु.

शिक्षापाठ ६९ ब्रह्मचर्यनी नव वाड

ज्ञानीओए थोडा शब्दोमा केवा भेद अने केवु स्वरुप बतावेल छे? ए वडे केटली बधी आत्मोन्नति थाय छे! ब्रह्मचर्य जेवा गभिर विषयनु स्वरुप सक्षेपमा अति चमत्कारिक रीते आप्यु छे. ब्रह्मचर्यरुपी एक सुदर झाड अने तेने रक्षा करनारी जे नव विधियो तेने वाडनु रुप आपी आचार पाळवामा विशेष स्मृति रही शके एवी सरळता करी छे ए नव वाड जेम छे तेम अहीं कही जउ छउ

१ वसति—ब्रह्मचारी साधुए स्त्री, पशु के पडग एथी सयुक्त वसतिमां रहेवु [illegible] बे प्रकारनी [illegible]

अने देवांगना ए प्रत्येकना पाळा ने वे भेद छे. एकनो मूळ अने बीजी स्रीनी मूर्ति के चित्र एमांथी गमे ते प्रकारनी स्त्री ज्यां होय त्यां ब्रह्मचारी साधुए न रहेवु, केमके ए विकार हेतु छे पशु एटले तिर्यंचिणी गाय भेंस इत्यादिक जे स्थळे होय ते स्थळे न रहेवु अने पडग एटले नपुंसक एनो वास होय त्यां पण न रहेवु एवा प्रकारनो वास ब्रह्मचर्यनी हानि करे छे तेओना कामचेष्टा हावभाव इत्यादिक विकारो मनने भ्रष्ट करे छे

२ कथा—मात्र एकली स्त्रियोनेज के एकज स्त्रीने धर्मोपदेश ब्रह्मचारीए न करवो कथा ए मोहनी उत्पत्ति रूप छे ब्रह्मचारीए स्त्रीना रूप कामविलास संबंधी ग्रंथो वांचवा नहीं, तेमज जेथी चित्त चळे एवा प्रकारनी गमे ते शृंगार संबंधी कथा ब्रह्मचारीए करवी नहीं

३ आसन—स्त्रियोनी साथे एक आसने न बेसवुं, तेमज ज्यां स्त्री बेठी होय त्यां बे घडी सुधीमां ब्रह्मचारीए न बेसवु ए स्त्रियोनी स्मृतिनुं कारण छे, एथी विकारनी उत्पत्ति थाय छे एम भगवाने कह्यु छे

४ इंद्रियनिरिक्षण—स्त्रीओनां अंगोपांग ब्रह्मचारी साधुए न जोवां, न निरखवां. एनां अमुक अंगपर दृष्टि एकाग्र थवाथी विकारनी उत्पत्ति थाय छे

५ कुड्यांतर—भींत, कनात के त्राटानो अंतरपट राखी स्त्री-पुरुष ज्यां मैथुन सेवे त्यां ब्रह्मचारीए रहेवु नहीं कारण शब्द, चेष्टादिक विकारना कारण छे

६ पूर्वक्रिडा—पोते गृहस्थावासमां गमे तेवी जातना शृंगारथी विषयक्रीडा करी होय तेनी स्मृति करवी नहीं, तेम करवाथी ब्रह्मचर्य भंग थाय छे

७ प्रणीत—दूध, दहीं, घृतादि मधुरा अने चीकाशवाळा पदार्थोनो बहुधा आहार न करवो एथी वीर्यनी वृद्धि अने उन्माद थाय छे अने तेथी कामनी उत्पत्ति थाय छे. माटे ब्रह्मचारीए तेम करवु नही.

८ अतिमात्राहार—पेट भरीने अतिमात्राहार करवो नही, तेम अति मात्रानी उत्पत्ति थाय तेम करवु नही एथी पण विकार वधे छे

९ विभूषण—स्नान, विलेपन करवा नही, तेमज पुष्पादिक ब्रह्मचारीए ग्रहण करवु नही एथी ब्रह्मचर्यने हानि उत्पन्न थाय छे

एम विशुद्ध ब्रह्मचर्यने माटे भगवते नव वाड कही छे बहुधा ए तमारा साभळवामा आवी हशे, परतु गृहस्थावासमा अमुक अमुक दिवस ब्रह्मचर्य धारण करवामा अभ्यासीओने लक्षमा रहेवा अही आगळ कइक समजपूर्वक कही छे.

शिक्षापाठ ७० सनत्कुमार भाग १

चक्रवर्त्तीना वैभवमा शी खामी होय? सनत्कुमार ए चक्रवर्त्ती हता. तेना वर्ण अने रूप अत्युत्तम हता. एक वेळा सुधर्मसभामा ते रूपनी स्तुति थइ; कोइ ने देवोने ते वात रुची नही; पछी तेओ ते शका टाळवाने विप्ररूप सनत्कुमारना अतःपुरमा गया सनत्कुमारनो देह ते वेळा खेळथी भर्यो हतो तेने अग मर्दनादिक पदार्थोनु मात्र विलेपन हतु तेणे एक नानु पचीयु पहेर्यु हतु ॰ ते स्नान मज्जन करवा माटे बेठा हता. विप्ररूपे आवेला

मनोहर मुख, कंचनवर्णी काया, अने चंद्र जेवी कांति जोईने बहु आनंद पाम्या, अने माथु धुणाव्यु आ जोईने चक्रवर्त्तीए पृछ्यु, तमे माथु शा माटे धुणाव्यु? देवोए कह्यु, अमे तमारु रुप अने वर्ण निरखवा माटे बहु अभिलाषी हता स्थळे स्थळे तमारा वर्ण रुपनी स्तुति सांभळी हती, आजे अमे ते प्रत्यक्ष जोयु, जेथी अमने पूर्ण आनंद उपज्यो माथु धुणाव्यु एनु कारण ए के जेवु लोकोमां कहेवाय छे तेवुज रुप छे एथी विशेष छे पण ओछु नथी सनत्कुमार स्वरुपवर्णनी स्तुतिथी प्रभुत्व लावी बोल्यो, तमे आ वेळा मारुं रुप जोयु ते भले, परतु हु राजसभामां वस्त्रालंकार धारण करी, केवळ सज्ज थईने ज्यारे सिंहासनपर बेसु छउं त्यारे, मारु रुप अने मारो वर्ण जोवा योग्य छे अत्यारे तो हु खेळभरी कायाए बेठो छउ जो ते वेळा तमे मारा रुप वर्ण जुओ तो अद्भुत चमत्कारने पामो अने चकित थइ जाओ देवोए कह्युं, त्यारे पछी अमे राजसभामां आवीशु, एम कहीने त्याथी चाल्या गया सनत्कुमारे त्यार पछी उत्तम वस्त्रालंकारो धारण कर्या अनेक उपचारथी जेम पोतानी काया विशेष आश्चर्यता उपजावे तेम करीने ते राजसभामां आवी सिंहासनपर बेठो आजुबाजु समर्थ मंत्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य सभासदो योग्य आसने बेसी गया हता राजेश्वर चामर छत्रथी विंझाता अने खमा खमाथी वधावतां विशेष शोभी रह्या छे, त्यां पेल्या देवताओ पाछा विप्ररुपे आव्या अद्भुत रुपवर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पाम्या छे एवा स्वरुपमा तेओए माथुं धुणाव्यु चक्रवर्त्तीए पूछ्यु, अहो ब्राह्मणो! गइ वेळा करतां आ वेळा तमे जुदा रुपमां माथुं धुणाव्यु एनु शु कारण छे, ते मने कहो अवधिज्ञानानुसार विप्रे कह्यु के हे, महाराजा! ते रुपमां अने आ रुपमां भूमि आकाशनो फेर पडी गयो छे चक्रवर्त्तीए ते स्पष्ट

समजाववाने कह्यु ब्राह्मणोए कह्यु, अधिराज! तमारी काया प्रथम अमृततुल्य हती; आ वेळा झेर तुल्य छे ज्यारे अमृततुल्य अंग हतु त्यारे आनद पाम्या, अने आ वेळा झेर तुल्य छे त्यारे खेद पाम्या अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो तमे ताबुल थुको, तत्काळ ते पर माखी बेसशे अने ते परलोक पहोची जशे.

शिक्षापाठ ७१ सनत्कुमार भाग २

सनत्कुमारे ए परीक्षा करी तो सत्य ठरी पूर्वित कर्मना पापनो जे भाग तेमा आ कायाना मद सबधीनु मेळवण थवाथी ए चक्रवर्त्तीनी काया झेरमय थइ गइ हती. विनाशी अने अशुचिमय कायानो आवो प्रपच जोइने सनत्कुमारने अतःकरणमा वैराग्य उत्पन्न थयो. आ ससार केवळ तजवा योग्य छे आवीने आवी अशुचि स्त्री, पुत्र, मित्रादिकना शरीरमा रही छे ए सघळु मोह मान करवा योग्य नथी, एम विचारीने ते छ खडनी प्रभुता त्यागी चाली नीकळ्या साधुरुपे ज्यारे विचरता हता त्यारे तेओने महारोग उत्पन्न थयो तेना सत्यत्वनी परीक्षा लेवाने कोइ देव त्या वैदरुपे आव्यो साधुने कह्यु, हु बहु कुशळ राजवैद छउ तमारी काया रोगनो भोग थयेली छे जो इच्छा होय तो तत्काळ हु ते रोगने टाळी आपु. साधु बोल्या, हे वैद्य! कर्मरूपी रोग महोन्मत्त छे; ए रोग टाळवानी तमारी जो समर्थता होय तो भले मारो ए रोग टाळो, ए समर्थता न होय तो आ रोग भले रह्यो देवता बोल्यो. ए रोग टाळवानी समर्थता नथी साधुए पोतानी

मनळरडे थुकवाळी अंगुलि करी ते रोगने खरडी के तत्काळ ते रोगनो नाश थयो, अने काया पाछी हती तेवी बनी गइ पछी ते देव पोतानु स्वरुप प्रकाश्युं, धन्यवाद गाइ वंदन करी ते पोताने स्थानक गयो

रक्तपीत्त जेवा, सदैव लोही परुथी गदगदता, महारोगनी उत्पत्ति जे कायामा छे, पळमा वणसी जवानो जेनो स्वभाव छे, जे प्रत्येक रोमे पोणा बब्बे रोगवाळी होइ रोगनो भडार छे, अन्न वगरनी न्यूनाधिकताथी जे प्रत्येक कायामा देखाव दे छे, मळमूत्र, नर्क, हाड, मांस, परु अने श्लेष्मथी जेनु बधारण टक्यु छे, त्वचाथी मात्र जेनी मनोहरता छे ते कायानो मोह खरे विभ्रमज छे सनत्‌कुमारे जेनु लेशमात्र मान कयु ते पण जेथी सखायुं नही ते कायामां अहो पामर! तु शु मोहे छे? ए मोह मगळदायक नथी

शिक्षापाठ ७२ बत्रिश योग

सत्पुरुषो नीचेना बत्रिश योगनो सग्रह करी आत्माने उज्ज्वळ करवानु कहे छे

१ मोक्षसाधकयोग माटे शिष्ये आचार्य प्रत्ये आलोचना करवी

२ आचार्ये आलोचना बीजा पासे प्रकाशवी नही

३ आपत्तिकाळे पण धर्मनुं दृढपणुं त्यागवु नही

४ आ लोक, परलोकना सुखनां फळनी वांछनाविना तप करवु

२३ मूळ गुणे पंचमहाव्रत विशुद्ध पाळवां
२४ उत्तर गुणे पंचमहाव्रत विशुद्ध पाळवां
२५ उत्साहपूर्वक कायोत्सर्ग करवो
२६ प्रमादरहित ज्ञान ध्यानमां प्रवर्त्तन करवुं
२७ हमेशां आत्मचारित्रमां सूक्ष्म उपयोगथी वर्त्तवुं
२८ ध्यान, जितेंद्रियता अर्थे एकाग्रतापूर्वक करवुं
२९ मरणांत दुःखथी पण भय पामवो नहीं
३० स्त्रियादिकनां संगने त्यागवो
३१ प्रायश्चित विशुद्धि करवी
३२ मरणकाळे आराधना करवी

ए एकेका योग अमूल्य छे सघळा संग्रह करनार परिणामे अनंत सुखने पामे छे

शिक्षापाठ ७३ मोक्ष सुख

आ जगत् मंडळपर केटलीक एवी वस्तुओ अने मनेच्छा रही छे के जे केटलाक अंशे जाणता छतां कही शकाती नथी छतां ए वस्तुओ कंइ संपूर्ण शाश्वत के अनंत भेदवाळी नथी एवी वस्तुनुं ज्यारे वर्णन न थइ शके त्यारे अनंत सुखमय मोक्ष संबंधी तो उपमा क्याथीज मळे? भगवानने गौतमस्वामीए मोक्षना अनंत सुखविषे

प्रश्न कर्युं सारे भगवाने उत्तरमां कह्युं, गौतम ! ए अनंतसुख हुं जाणुं छउं, पण ते कही शकाय एवी अहीं आगळ कइ उपमा नथी जगतमां ए सुखना तुल्य कोइपण वस्तु के सुख नथी, एम वदी एक भीलनुं दृष्टांत नीचेना भावमां आप्युं हतुं

एक जंगलमां एक भद्रिक भील तेनां बाळबच्चां सहित रहेतो. हतो शहेर वगेरेनी समृद्धिनी उपाधिनुं तेने लेश भान पण नहोतुं. एक दिवस कोइ राजा अश्वक्रीडा माटे फरतो फरतो त्यां नीकळी आव्यो; तेने बहु तृषा लागी हती; जेथी करीने सानवडे भील आगळ पाणी माग्युं भीले पाणी आप्युं शीतळ जळथी राजा संतोषायो पोताने भील तरफथी मळेला अमूल्य जळदाननो प्रत्युपकार करवा माटे भीलने समजावीने साथे लीधो. नगरमां आव्या पछी तेणे भीलने तेनी जींदगीमां नहीं जोयेली वस्तुमां राख्यो सुंदर महेलमां, कने अनेक अनुचरो, मनोहर छत्रपलंग, अने स्वादिष्ट भोजनथी मंदमंद पवनमां, सुगंधी विलेपनमां तेने आनंद आनंद करी आप्यो विविध जातिनां हीरामाणेक, मौक्तिक, मणिरत्न अने रंग बेरंगी अमूल्य चीजो निरंतर ते भीलने जोवा माटे मोकल्या करे, बागबगीचामां फरवा हरवा मोकले. एम राजा तेने सुख आप्या करतो हतो कोइ रात्रे बधां सूइ रह्यां हतां, सारे ते भीलने बाळबच्चां सांभरी आव्यां एटले ते त्यांथी कइ लीधा कर्याविगर एकाएक नीकळी पड्यो. जइने पोताना कुटुंबीने मळ्यो. ते बधाये मळीने पूछ्युं के तुं क्यां हतो? भीले कह्युं, बहु सुखमां, त्यां में बहु वखाणवा लायक वस्तुओ जोइ

कुटुंबीओ—पण ते केवी? ते तो अमने कहे

भील—शुं कहुं, अंहीं एवी एके वस्तुज नथी

कुटुंबीओ—एम होय के? आ शब्दों, छीप, कोडां वेग्रा मजाना पड्या छे, त्या कोइ एवी जोवा लायक वस्तु हती?

भील—नही, भाइ, एवी चीज तो अहीं एके नथी एना सोमा भागनी के हजारमा भागनी पण मनोहर चीज अहीं नथी

कुटुंबीओ—त्यारे तो तुं बोल्या विना बेठो रहे तने भ्रमणा थइ छे, आथी ते पछी सारुं शुं हशे?

हे गौतम! जेम ए भील राजवैभवसुख भोगवी आव्यो हतो, तमज जाणतो हतो; छता उपमा योग्य वस्तु नही मळवाथी ते क कही शकतो नहतो, तेम अनुपमेय मोक्षने, सच्चिदानंद स्वरूपमय निर्विकारी मोक्षना सुखना असंख्यातमा भागने पण योग्य उपमेय नहीं मळवाथी हु तने कही शकतो नथी

मोक्षना स्वरूप विषे शंका करनारा तो कुतर्कवादी छे, एओने क्षणिक सुखसंबंधी विचार आडे सतसुखनो विचार क्याथी आवे? कोइ आत्मिकज्ञानहीन एम पण कहे छे के आथी कोइ विशेष सुखनु साधन त्यां रहु नहि एटले अनत अव्याबाध सुख कही दे छे, आ एनु कथन विवेकी नथी निद्रा प्रत्येक मानवीने प्रिय छे, पण तेमा तेओ कइ जाणी के देखी शकता नथी, अने जाणवामा आवे तो मात्र स्वप्नोपाधिनु मिथ्यापणु आवे, जेनी कंइ असर पण थाय ए स्वप्न वगरनी निद्रा जेमा सूक्ष्मस्थूळ सर्व जाणी अने देखी शकाय, अने निरुपाधिथी शात उंघ लइ शकाय तो तेनु ते वर्णन शुं करी शके? एने उपमा पण शी आपे? आ तो स्थूळ दृष्टात छे, पण बाळविवेकी ए परथी कइ विचार करी शके ए माटे कह्यु छे

भीलनु दृष्टात, समजाववा रूपे भाषाभेद फेरफारथी तमने कही बताव्यु

शिक्षापाठ ७४ धर्मध्यान भाग १

भगवाने चार प्रकारना ध्यान कह्यां छे आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्ल पहेला बे ध्यान त्यागवा योग्य छे पाछळना बे ध्यान आत्मसार्थकरूप छे श्रुतज्ञानना भेद जाणवा माटे, शास्त्र विचारमा कुशळ थवा माटे, निर्ग्रंथप्रवचननु तत्त्व पामवा माटे, सत्पुरुषोए सेववा योग्य, विचारवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य धर्मध्यानना मुख्य सोळ भेद छे पहेला चार भेद कहु छउ १ आणाविजय (आज्ञाविचय.) २ आवायविजय (अपायविचय) ३ विवागविजय (विपाकविचय) ४ सठाणविजय (सस्थानविचय.) १ आज्ञा-विचय–आज्ञा एटले सर्वज्ञ भगवाने धर्मतत्त्व सबधी जे जे कह्यु छे ते ते सत्य छे; एमा शका करवा जेवु नथी, काळनी हीनताथी, उत्तम ज्ञानना विच्छेद जवाथी, बुद्धिनी मदताथी के एवा अन्य कोइ कारणथी मारा समजवामा ते तत्त्व आवतु नथी परतु अर्हंत भगवंते अश मात्र पण माया युक्त के असत्य कह्यु नथीज, कारण एओ निरागी, त्यागी, अने निस्पृही हता मृषा कहेवानु कइ कारण एमने हतु नहीं तेम एओ सर्वज्ञ सर्वदर्शी होवाथी अज्ञानथी पण मृषा कहे नही, ज्या अज्ञानज नथी, त्या ए सबधी मृषा क्याथी होय ? एवु जे चिंतन करवु ते 'आज्ञाविचय' नामनो प्रथम भेद छे २ अपायविचय–राग, द्वेष, काम, क्रोध ए वगेरेथीज जीवने जे दुःख उत्पन्न थाय छे तेथीज तेने भवमां भटकवु पडे छे. तेनु जे चिंतवन करवु ते 'अपायविचय' नामे बीजो भेद छे. अपाय एटले दुःख ३ विपाकविचय–हु क्षणे क्षणे जे जे दु ख सहन करु छउ, भवाटविमा पर्यटन करु छउ, अज्ञानादिक पामु छउ, ते कर्मनां फळना उदय वडे छे, एम चिंतववु ते धर्म ध्याननो

कर्मविपाक चिंतन भेद छे ४ संस्थानविचय–त्रणलोकनुं स्वरूप चितववुं ते लोकस्वरूप सुप्रतिष्टितने आकारे छे, जीव अजीवे करीने संपूर्ण भरपुर छे असंख्यात योजननी कोटानुकोटीए तिर्च्छो लोक छे, ज्यां असंख्याता द्वीप—समुद्र छे असंख्याता ज्योतिषिय, वाणव्यंतरादिकना निवास छे उत्पाद, व्यय अने ध्रुवतानी विचित्रता एमां लागी पडी छे अढीद्वीपमां जघन्य तीर्थंकर २०, उत्कृष्टा एकसो सीत्तेर होय तेओ तथा केवळी भगवान अने निर्ग्रंथ मुनिराज विचरे छे, तेओने "वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, समाणेमि, कल्लाण, मंगळ, देवय, चेइयं, पज्जुवासामि" एम तेमज त्यां वसतां श्रावक, श्राविकाना गुणग्राम करीए ते तिर्छालोकथकी असंख्यात गुणो अधिक उर्द्ध लोक छे त्यां अनेक प्रकारना देवताओना निवास छे. पछी इषत् प्राग्भारा छे ते पछी मुक्तात्माओ विराजे छे. तेने "वंदामि, यावत् पज्जुवासामि" ते उर्द्ध लोकथी कइंक विशेष अधो लोक छे, त्यां अनंत दु:खथी भरेला नर्कावास अने भुवन पतिनां भुवनादिक छे ए त्रण लोकनां सर्व स्थानक आ आत्माए सम्यकत्व रहितकरणीथी अनंतिवार जन्ममरण करी स्पर्शी मूक्यां छे, एम जे चिंतन करवुं ते संस्थान विचय नामे धर्मध्याननो चोथो भेद छे ए चार भेद विचारीने सम्यक्त्व सहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करवी जेथी ए अनंत जन्म मरण टळे ए धर्मध्यानना चार भेद स्मरणमां राखवा

शिक्षापाठ ७५ धर्मध्यान भाग २

धर्मध्यानना चार लक्षण कहु छउं. आज्ञारुचि–एटले वीतरागे भगवाननी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे ते. २ निसर्ग रुचि–आत्मा स्वाभाविकपणे जातिस्मरणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म धरवानी रुचि पामे तेने निसर्ग रुचि कही छे. ३ सूत्र रुचि–श्रुतज्ञान, अने अनंत तत्त्वना भेदने माटे भाखेला भगवानना पवित्र वचनोनुं जेमां गुंथन थयुं छे, ते सूत्र श्रवण करवा, मनन करवा, अने भावथी पठन करवानी रुचि उपजे ते सूत्र रुचि ४ उपदेश रुचि–अज्ञाने करीने उपार्जेला कर्म ज्ञाने करीने खपावीए, तेमज ज्ञानवडे करीने नवा कर्म न बांधीए मिथ्यात्वे करीने उपार्ज्या कर्म ते सम्यग्भावथी खपावीए, सम्यग्भावथी नवा कर्म न बांधीए. अवैराग्य करीने उपार्ज्या कर्म ते वैराग्ये करीने खपावीए अने वैराग्यवडे करीने पाछां नवां कर्म न बांधीए कषाये करी उपार्ज्या कर्म ते कषाय टाळीने खपावीए, क्षमादिथी नवां कर्म न बांधीए अशुभ योगे करी उपार्ज्या कर्म ते शुभ योगे करी खपावीए, शुभ योगे करी नवां कर्म न बांधीए. पांच इंद्रियना स्वादरुप आश्रवे करी उपार्ज्या कर्म ते संवरे करी खपावीए, तपरुप (इच्छारोध) संवरे करी नवां कर्म न बांधीए ते माटे अज्ञानादिक आश्रवमार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवर मार्ग ग्रहण करवा माटे तीर्थंकर भगवंतनो उपदेश सांभळवानी रुचि उपजे तेने उपदेश रुचि कहीए ए धर्मध्यानना चार लक्षण कहेवायां

धर्मध्यानना चार आलंबन कहु छउं १ वाचना २ पृच्छना ३ परावर्त्तना ४ धर्मकथा. १ वाचना–एटले विनय सहित निर्जरा–तथा ज्ञान पामवाने माटे सूत्र [illegible] मर्मना जाणनार

सत्पुरुष समीपे सूत्र तत्त्वनुं वांचन लइए तेनुं नाम वांचना आलंबन २ पृच्छना अपूर्व ज्ञान पामवा माटे, जिनेश्वर भगवंतनो मार्ग दीपाववाने तथा शंकाशल्य निवारवाने माटे तेमज अन्यना तत्त्वनी मध्यस्थ परीक्षाने माटे यथायोग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए तेने पृच्छना कहीए ३ परावर्त्तना-पूर्वे जिनभाषित सूत्रार्थ जे भण्या होइए ते स्मरणमां रहेवा माटे, निर्जराने अर्थे शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध सूत्रार्थनी वारवार सज्झाय करीए तेनुं नाम परावर्त्तनालंबन ४ धर्मकथा-वीतराग भगवाने जे भाव जेवा प्रणीत कर्या छे ते भाव तेवा लइने, ग्रहीने, विशेषे करीने, निश्चय करीने, शंका, कंखा अने वितिगिछा रहितपणे, पोतानी निर्जराने अर्थे सभामध्ये ते भाव तेवा प्रणीत करीए के जेथी साभळनार सद्दहनार बन्ने भगवंतनी आज्ञाना आराधक थाय, ए धर्मकथालंबन कहीए ए धर्मध्यानमां चार आलंबन कहेवाया धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा कहुं छउं १ एकत्वानुप्रेक्षा २ अनित्यानुप्रेक्षा ३ अशरणानुप्रेक्षा ४ संसारानुप्रेक्षा. ए चारेनो बोध बार भावनाना पाठमां कहेवाइ गयो छे ते तमने स्मरणमां हशे

शिक्षापाठ ७६ धर्मध्यान भाग ३

धर्मध्यान पूर्वाचार्योए अने आधुनिक मुनीश्वरोए पण विस्तार-पूर्वक बहु समजाव्युं छे ए ध्यानवडे करीने आत्मा मुनित्वभावमां निरंतर प्रवेश करे छे

जे जे नियमो एटले भेद, लक्षण, आलंबन अने अनुप्रेक्षा कह्या ते बहु मनन करवा जेवा छे अन्य मुनीश्वरोना कहेवा प्रमाणे में

सामान्य भाषामां ते तमने कह्या; ए साथे निरंतर लक्ष राखवानी आवश्यकता छे के एमाथी आपणे कयो भेद पाम्या, अथवा कया भेद भणी भावना राखी छे? ए सोळ भेदमानो गमे ते भेद हितकारी अने उपयोगी छे, परतु जेवा अनुक्रमथी लेवो जोइए ते अनुक्रमथी लेवाय तो ते विशेष आत्मलाभनु कारण थइ पडे

सूत्रसिद्धांतना अध्ययनो केटलाक मुखपाठे करे छे; तेना अर्थ, तेमा कहेला मूळतत्त्वो भणी जो तेओ लक्ष पहोचाडे तो कइक सूक्ष्मभेद पामी शके. केळना पत्रमा, पत्रमा पत्रनी जेम चमत्कृति छे तेम सूत्रार्थने माटे छे ए उपर विचार करता निर्मळ अने केवळ दयामय मार्गनो जे वीतरागप्रणीत तत्त्वबोध तेनु बीज अतःकरणमा उगी नीकळशे. ते अनेक प्रकारना शास्त्रावलोकनथी, प्रश्नोत्तरथी, विचारथी अने सत्पुरुषना समागमथी पोषण पामीने वृद्धि थई वृक्षरुपे थशे. जे पछी निर्जरा अने आत्मप्रकाशरूप फळ आपशे

श्रवण, मनन अने निदिध्यासनना प्रकारो वेदातवादियोए बताव्या छे; पण जेवा आ धर्मध्यानना पृथक् पृथक् सोळ भेद कह्या छे तेवा तत्त्वपूर्वक भेद कोई स्थळे नथी, ए अपूर्व छे. एमाथी शास्त्रने श्रवण करवानो, मनन करवानो, विचारवानो, अन्यने बोध करवानो, शकाकंखा टाळवानो, धर्मकथा करवानो, एकत्व विचारवानो, अनित्यता विचारवानो, अशरणता विचारवानो, वैराग्य पामवानो, ससारना अनत दुःख मनन करवानो, अने वीतराग भगवंतनी आज्ञावडे करीने आखा लोकालोकना विचार करवानो अपूर्व उत्साह मळे छे भेदे भेदे करीने एना पाछा अनेक भाव समजाव्या छे

एमांना केटलाक भाव समजवाथी तप, शाति, क्षमा, दया, वैराग्य अने ज्ञाननो बहु बहु उदय थशे.

तमे कदापि ए सोळ भेदनु पठन करी गया हशो तो पण फरी फरी तेनुं पुनरावर्त्तन करजो

शिक्षापाठ ७७ ज्ञान संबधी बे बोल भाग १

जेवडे वस्तुनुं स्वरुप जाणीए ते ज्ञान ज्ञान शब्दनो आ अर्थ छे हवे यथामति विचारवानु छे के ए ज्ञाननी कंइ आवश्यकता छे? जो आवश्यकता छे तो ते प्राप्तिनां कंइ साधन छे? जो साधन छे तो तेने अनुकुळ द्रव्य, देश, काळ, भाव छे? जो देशकाळादिक अनुकुळ छे तो क्यां सुधी अनुकुळ छे? विशेष विचारमां ए ज्ञानना भेद केटला छे? जाणवारुप छे शु? एना वळी भेद केटला छे? जाणवाना साधन क्यां क्यां छे? कयि कयि वाटे ते साधनो प्राप्त कराय छे? ए ज्ञाननो उपयोग के परिणाम शुं छे? ए जाणवु अवश्यनु छे

१. ज्ञाननी शी आवश्यकता छे? ते विषे प्रथम विचार करीए आ चतुर्दश रज्ज्वात्मक लोकमा, चतुर्गतिमां अनादिकाळथी सकर्मस्थितिमां आ आत्मानु पर्यटन छे मेषानुमेष पण सुखनो ज्यां भाव नथी एवां नर्कनिगोदादिक स्थानक आ आत्माए बहु बहु काळ वारवार सेवन कर्या छे, असह्य दु खोने पुन पुन' अने कहो तो अनतिवार सहन कर्यां छे ए उतापथी निरंतर तपतो आत्मा मात्र स्वकर्म विपाकथी पर्यटन करे छे. पर्यटननु कारण अनंत दु खद ज्ञानावरणीयादि कर्मो छे, जेवडे करीने आत्मा स्वस्वरुपने पामी शकतो नथी, अने विषयादिक मोहबधनने स्वस्वरूप मानी रह्यो छे

ए सरव्यानु परिणाम मात्र उपर कह्युं तेज छे के अनंत दुःख अनंत भावे करीने सहेवु; गमे तेटलु अप्रिय, गमे तेटलु खेददायक अने गमे तेटलु रौद्र छता जे दुःख अनंतकाळथी अनंतिवार सहन करवु पड्युं; ते दुःख मात्र सयु ते अज्ञानादिक कर्मथी, माटे ए अज्ञानादिक टाळवा माटे ज्ञाननी परिपूर्ण आवश्यकता छे

शिक्षापाठ ७८ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग २

२. हवे ज्ञानप्राप्तिना साधनो विषे कइ विचार करीए अपूर्ण पर्याप्तिवडे परिपूर्ण आत्मज्ञान साध्य थतु नथी ए माटे थइने छ पर्याप्तियुक्त जे देह ते आत्मज्ञान साध्य करी शके. एवो देह ते एक मानवदेह छे. आ स्थळे प्रश्न उठशे के मानवदेह पामेला अनेक आत्माओ छे, तो ते सघळा आत्मज्ञान का पामता नथी? एना उत्तरमा आपणे मानी शकीशु के जेओ सपूर्ण आत्मज्ञानने पाम्या छे तेओना पवित्र वचनामृतनी तेओने श्रुति नहीं होय श्रुतिविना सस्कार नथी. जो सस्कार नथी तो पछी श्रद्धा क्याथी होय? अने ज्या ए एके नथी त्या ज्ञानप्राप्ति शानी होय? ए माटे मानवदेहनी साथे सर्वज्ञ वचनामृतनी प्राप्ति अने तेनी श्रद्धा ए पण साधनरुप छे सर्वज्ञ वचनामृत अकर्म भूमि के केवळ अनार्यभूमिमा मळता नथी तो पछी मानवदेहनु उपयोगनो? ए माटे थइने कर्मभूमि अने तेमा पण आर्यभूमि ए पण साधनरुप छे तत्त्वनी श्रद्धा उपजवा अने बोध थवा माटे निर्ग्रंथ गुरुनी अवश्य छे द्रव्ये करीने जे कुल मिथ्यात्वी छे, ते कुळमा थयेलो जन्म पण आत्मज्ञान प्राप्तिनी हानि रुपज छे कारण

ए अति दुःखमाराहे छे. परंपराथी पूर्वेनीय ग्रहण करेलुं जे दर्शन तेमाज गयभावना वैराग्य छे, पर्यां करीने पण आत्मज्ञान भगवे छे. ए माटे भलुं कुळ पण जाणवुं छे. ए सदर्शा प्राप्त करवा माटे गणे भाग्यशाळी थवुं तेमां सत्पुण्य एटले पुण्यानुबंधी पुण्य इत्यादि उत्तम साधनो छे. ए द्वितीय साधन भेद कह्यो.

३. जो साधन छे तो तेने अनुकूळ देश काळ छे? ए त्रीजा भेदना विचार करीए. भरत, महाविदेह इत्यादि कर्मभूमि अने तेमां पण आर्यभूमि ए देश भावे अनुकूळ छे. जिज्ञासु भव्य! तम सघळा आ काळे भरतमां छो, अने भारत देश अनुकूळ छे. काळभाव प्रमाणे मति अने श्रुत प्राप्त करी शकाय एटली अनुकूळता छे. कारण आ दुःषम पंचमकाळमां परमावधि, मनःपर्यव अने केवळ ए पवित्र ज्ञान परंपरा आम्नाय जोतां विच्छेद छे. एटले काळनी परिपूर्ण अनुकूळता नथी.

४. देशकाळादि जो थोडां पण अनुकूळ छे तो ते क्यां सुधी छे? एनो उत्तर, के शेष रहेलुं सिद्धांतिक मति ज्ञान, श्रुतज्ञान सामान्यमतथी ज्ञान, काळ भावे एकवीश हजार वर्ष रहेवानुं, तेमांथी अढी हजार गयां, बाकी साडा अढार हजार वर्ष रह्यां, एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी काळनी अनुकूळता छे. देशकाळ ते लेइने अनुकूळ छे.

शिक्षापाठ ७९ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ३

हवे विशेष विचार करीए

१. आवश्यकता शी छे? ए महद् विचारनु आवर्त्तन पुनः विशेषताथी करीए. मुख्य अवश्य स्वस्वरूपस्थितिनी श्रेणिए चढवु ए छे अनत दु.खनो नाश, दुःखना नाशथी आत्मानु श्रेयिक सुख ए हेतु छे, केमके सुख निरतर आत्माने प्रियज छे, पण जे स्वस्वरूपिक सुख छे ते देशकाळ भावने लेइने श्रद्धा, ज्ञान इत्यादि उत्पन्न करवानी आवश्यकता अने सम्यग् भाव सहित उच्चगति, त्याथी महाविदेहमा मानवदेहे जन्म, त्या सम्यग् भावनी पुनः उन्नति, तत्त्वज्ञाननी विशुद्धता अने वृद्धि, छेवटे परिपूर्ण आत्मसाधन ज्ञान अने तेनु सत्य परिणाम केवळ सर्व दु'खनो अभाव एटले अखड, अनुपम अनत शाश्वत पवित्र मोक्षनी प्राप्ति ए सघळा माटे ज्ञाननी आवश्यकता छे?

२. ज्ञानना भेद केटला छे एनो विचार कहु छउ ए ज्ञानना भेद अनत छे पण सामान्य दृष्टि समजी शके एटला माटे सर्वज्ञ भगवाने मुख्य पाच भेद कह्या छे, ते जेम छे तेम कहु छउ. प्रथम मति, द्वितीय श्रुत, तृतीय अवधि, चतुर्थ मनःपर्यव अने पाचमु सपूर्ण स्वरूप केवळ. एना पाछा प्रतिभेद छे तेनी वळी अतींद्रिय स्वरूपे अनत भगजाळ छे.

३ शु जाणवारूप छे? एनो हवे विचार करीए वस्तुनु स्वरूप जाणवु तेनु नाम ज्यारे ज्ञान; त्यारे वस्तुओ तो अनत छे, एने कयि पक्तिथी जाणवी? सर्वज्ञ थया पछी सर्व दर्शिताथी ते सत्पुरुष, ते अनत ... सर्व भेदे करी जाणे छे

छे, परंतु तेओ ए सर्वज्ञ श्रेणिने पाम्या कयि कयि वस्तुने जाणवाथी? अनंत श्रेणिओ ज्यांसुधी जाणी नथी त्यांसुधी कयि वस्तुने जाणता जाणता ते अनंत वस्तुओ अनंत रुपे जाणीए? ए शंकानु समाधान हवे करीए? जे अनंत वस्तुओ मानी ते अनंत भंगे करीने छे परंतु मुख्य वस्तुत्व स्वरुपे तेनी बे श्रेणिओ छे. जीव अने अजीव विशेष वस्तुत्व स्वरुपे नवतत्त्व किंवा षड्द्रव्यनी श्रेणिओ जाणवा रुप थइ पडे छे जे पंक्तिए चढता चढता सर्व भावे जणाइ लोकालोक स्वरुप हस्तामलकवत् जाणी देखी शकाय छे एटला माटे थइने जाणवारुप पदार्थ ते जीव अने अजीव छे ए जाणवा रुप मुख्य बे श्रेणिओ कहेवाइ.

शिक्षापाठ ८० ज्ञान संबधी बे बोल भाग ४

८. एना उपभेद संक्षेपमा कहु छउं 'जीव' ए चैतन्य लक्षणे एक रुप छे देहस्वरुपे अने द्रव्य स्वरुपे अनतानंत छे देहस्वरुपे तेना इंद्रियादिक जाणवा रुप छे, तेनी गति, विगति इत्यादिक जाणवा रुप छे, तेनी संसर्ग रीद्धि जाणवा रुप छे तेमज 'अजीव' तेना रुपी अरुपी पुद्‌गळ आकाशादिक विचित्र भाव काळचक्र इत्यादि जाणवा रुप छे जीवाजीव जाणवानी प्रकारांतरे सर्वज्ञ सर्वदर्शीए नव श्रेणि रुप नवतत्त्व कह्या छे

जीव,	अजीव,	पुण्य,
पाप,	आश्रव,	संवर,
निर्जरा,	बंध,	मोक्ष

एमाना केटलाक ग्राह्यरुप, केटलाक सागवारुप छे. सघळा ए तत्त्वो जाणवारुप तो छेज.

५. जाणवाना साधन. सामान्य विचारमा ए साधनो जो के जाण्या छे, तोपण विशेष कइक विचारिये भगवाननी आज्ञा अने तेनु शुद्ध स्वरुप यथातथ्य जाणवु स्वय कोइकज जाणे छे नहीं तो निर्ग्रंथज्ञानी गुरु जणावी शके निरागी ज्ञाता सर्वोत्तम छे एटला माटे श्रद्धानु बीज रोपनार के तेने पोपनार गुरु ए साधन रुप छे; ए साधनादिकने माटे ससारनी निवृत्ति एटले शम, दम, ब्रह्मचर्यादिक अन्य साधनो छे ए साधनो प्राप्त करवानी वाट कहीए तोपण चाले

६ ए ज्ञाननो उपयोग के परिणामना उत्तरनो आशय उपर आवी गयो छे; पण काळभेदे कइ कहेवानु छे अने ते एटलुज के दिवसमा बेघडीनो वखत पण नियमित राखीने जिनेश्वर भगवानना कहेला तत्त्वबोधनी पर्यटना करो वीतरागना एक सिद्धातिक शब्दपरथी ज्ञानावरणीयनो बहु क्षयोपशम थशे एम हु विवेकथी कहु छउ

शिक्षापाठ ८१ पंचमकाळ

काळचक्रना विचारो अवश्य करीने जाणवा योग्य छे श्री जिनेश्वरे ए काळचक्रना बे मुख्य भेद कह्या छे, १ उत्सर्पिणी २ अवसर्पिणी एकेका भेदना छ छ आरा छे आधुनिक वर्त्तन करी रहेलो आरो . कहेवाय छे, अने ते

काळनो पाचमो आरो छे अवसर्पिणी एटले उतरतो काळ, ए उतरता काळना पाचमा आरामा केवु वर्तन आ भरतक्षेत्रे थवु जोइए तेने माटे सत्पुरुषोए केटलाक विचारो जणाव्या छे; ते अवश्य जाणवा जेवा छे

एओ पचमकाळनु स्वरूप मुख्य आ भावमा कहे छे निर्ग्रंथ प्रवचनपरथी मनुष्योनी श्रद्धा क्षीण थती जशे धर्मना मूळतत्त्वोमा मतमतातर वधशे पाखडी अने प्रपची मतोनु मडन थशे जनसमूहनी रुचि अधर्म भणी वळशे सत्य दया हळवे हळवे पराभव पामशे मोहादिक दोषोनी वृद्धि थती जशे दभी अने पापिष्ट गुरुओ पूज्यरूप थशे दुष्टवृत्तिना मनुष्यो पोताना फदमा फावी जशे मीठा पण धूर्तवक्ता पवित्र मनाशे शुद्ध ब्रह्मचर्यादिक शीलयुक्त पुरुषो मलिन कहेवाशे आत्मिकज्ञानना भेदो हणाता जशे, हेतु वगरनी क्रिया वधती जशे अज्ञानक्रिया बहुधा सेवाशे, व्याकुळ करे एवा विषयोना साधनो वधता जशे एकातिक पक्षो सत्ताधीश थशे शृगारथी धर्म मनाशे

खरा क्षत्रियो विना भूमि शोकग्रस्त थशे निर्माल्य राजवशीओ वेश्याना विलासमा मोह पामशे, धर्म, कर्म अने खरी राजनीति भूली जशे, अन्यायने जन्म आपशे जेम लूटाशे तेम प्रजाने लूटशे पोते पापिष्ट आचरणो सेवी प्रजा आगळ ते पळावता जशे राजबीजने नामे शून्यता आवती जशे नीच मत्रियोनी महत्ता वधती जशे एओ दीनप्रजाने चूसीने भडार भरवानो राजाने उपदेश आपशे शीयळभग करवानो धर्म राजाने अगीकार करावशे शौर्यादिक सद्गुणोनो नाश करावशे. मृगयादिक पापमां अध बनावशे राज्याधिकारीओ पोताना अधिकारथी हजारगुणी अह-

पढता राखशे विप्रो लालचु अने लोभी थइ जशे सद्विद्याने दाटी देशे; ससारी साधनोने धर्म ठरावशे वैश्यो मायावी, केवळ स्वार्थी अने कठोर हृदयना थता जशे. समग्र मनुष्य वर्गनी सद्वृत्तियो घटती जशे. अकृत अने भयकर कृयो करता तेओनी वृत्ति अटकशे नहीं विवेक, विनय, सरळता इत्यादि सद्गुणो घटता जशे. अनुकपाने नामे हीनता थशे माता करता पत्नीमा प्रेम वधशे; पिता करता पुत्रमा प्रेम वधशे. पातिव्रत्य नियमपूर्वक पाळनारी सुन्दरीओ घटी जशे स्नानथी पवित्रता गणाशे; धनथी उत्तमकुळ गणाशे गुरुथी शिष्यो अवळा चालशे भूमिनो रस घटी जशे सक्षेपमा कहेवानो भावार्थ के उत्तम वस्तुनी क्षीणता छे, अने कनिष्ट वस्तुनो उदय छे पचमकाळनु स्वरूप आमानु प्रसग [illegible] पण केटलु बधु करे छे ?

मनुष्य सद्धर्मतत्त्वमा परिपूर्ण श्रद्धावान नहीं थइ [illegible] तत्त्वज्ञान नही पामी शके; जबुस्वामीना निर्वाण पछी [illegible] वस्तु आ भरतक्षेत्रथी व्यवच्छेद गइ

पचमकाळनु आवु स्वरूप जाणीने विवेकी [illegible] करशे; काळानुसार धर्मतत्त्वश्रद्धा पामीने [illegible] मोक्ष साधशे निर्ग्रंथप्रवचन, निर्ग्रंथ गुरु इत्यादि [illegible] साधनो छे. एनी आराधनाथी कर्मनी विराधना [illegible]

शिक्षापाठ ८२ तत्त्वावबोध भाग १

दशवैकालिक सूत्रमां कथन छे के जेणे जीवाजीवना भाव नथी जाण्या ते अबुध संयममां स्थिर केम रही शकशे? ए वचनामृतनुं तात्पर्य एम छे के तमे आत्मा, अनात्माना स्वरूपने जाणो, ए जाणवानी परिपूर्ण आवश्यकता छे

आत्मा अनात्मानुं सत्य स्वरूप निर्ग्रंथप्रवचनमांथीज प्राप्त थइ शके छे अनेक अन्य मतोमां ए बे तत्त्वो विषे विचारो दर्शाव्या छे पण ते यथार्थ नथी महा प्रज्ञावंत आचार्योए करेला विवेचन सहित प्रकारांतरे कहेला मुख्य नवतत्त्वने विवेक बुद्धिथी जे ज्ञेय करे छे, ते सत्पुरुष आत्मस्वरूपने ओळखी शके छे

स्याद्वादशैली अनुपम, अने अनंत भावभेदथी भरेली छे, ए शैलीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शीज जाणी शके, छतां एओना वचनामृतानुसार आगम उपयोगथी यथामति नव तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं अवश्यनुं छे ए नवतत्त्व प्रिय श्रद्धा भावे जाणवाथी परम विवेकबुद्धि, शुद्ध सम्यक्त्व अने प्रभाविक आत्मज्ञाननो उदय थाय छे नव तत्त्वमां लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरूप आवी जाय छे जे प्रमाणे जेनी बुद्धिनी गति छे, ते प्रमाणे तेओ तत्त्वज्ञान संबंधी दृष्टि पहोंचाडे छे, अने भावानुसार तेओना आत्मानी उज्ज्वळता थाय छे ते वडे तेओ आत्मज्ञाननो निर्मळ रस अनुभवे छे जेनुं तत्त्वज्ञान उत्तम अने सूक्ष्म छे, तेमज सुशीलयुक्त जे तत्त्वज्ञानने सेवे छे ते पुरुष महद्भागी छे

ए नवतत्त्वनां नाम आगळना शिक्षापाठमां हुं कही गयो छउं, एनुं विशेष स्वरूप प्रज्ञावंत आचार्योना महान् ग्रंथोथी अवश्य

मेळववु, कारण सिद्धातमा जे जे कह्यु छे, ते ते विशेष भेदथी समजवा माटे सहायभूत महावत आचार्यविरचित ग्रथो छे ए गुरुगम्यरूप पण छे नय, निक्षेपा अने प्रमाणभेद नवतत्त्वना ज्ञानमा अवश्यना छे, अने तेनी यथार्थ समजण ए महावतोए आपी छे

शिक्षापाठ ८३ तत्त्वावबोध भाग २

सर्वज्ञ भगवाने लोकालोकना सपूर्ण भाव जाण्या अने जोया तेनो उपदेश भव्य लोकोने कर्यो भगवाने अनत ज्ञानवडे करीने लोकालोकना स्वरूप विषेना अनत भेद जाण्या हता; परतु सामान्य मानवियोने उपदेशथी श्रेणिए चढवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेओए दर्शाव्या. एथी लोकालोकना सर्व भावनो एमा समावेश थइ जाय छे निर्ग्रंथप्रवचननो जे जे सूक्ष्म बोध छे; ते तत्त्वनी दृष्टिए नवतत्त्वमा समाइ जाय छे; तेमज सघळा धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नवतत्त्वविज्ञानना एक देशमा आवी जाय छे आत्मानी जे अनत शक्तियो ढकाइ रही छे तेने प्रकाशित करवा अर्हत भगवाननो पवित्र बोध छे; ए अनत शक्तियो त्यारे प्रफुल्लित थइ शके के ज्यारे नवतत्त्व विज्ञानमा पारावार ज्ञानी थाय

सूक्ष्म द्वादशांगी ज्ञान पण ए नवतत्त्व स्वरूप ज्ञानने सहायरूप छे. भिन्न भिन्न प्रकारे ए नवतत्त्वस्वरूप ज्ञाननो बोध करे छे, एथी आ निःशक मानवा योग्य छे के नवतत्त्व जेणे अनत भाव भेदे जाण्या ते सर्वज्ञ अने स[illegible]

ए नवतत्त्व त्रिपदीना भावे ऐवा योग्य छे हेय, ज्ञेय अने उपादेय एटले त्याग करवा योग्य जाणवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य एम त्रण भेद नवतत्त्व स्वरूपना विचारमां रहेला छे

प्रश्न —जे त्यागवारूप छे तेने जाणीने करवु शुं? जे गाम न जवुं तेनो मार्ग शा माटे पूछवो?

उत्तर —ए तमारी शंका सहजमां समाधान थइ शके तेवी छे त्यागवारूप पण जाणवा अवश्य छे सर्वज्ञ पण सर्व प्रकारना प्रपंचने जाणी रह्या छे त्यागवारूप वस्तुने जाणवानु मूळतत्त्व आ छे के जो ते जाणी न होय तो अत्याज्य गणी कोइ वखत सेवी जवाय; एक गामथी बीजे पहोंचता सुधी वाटमा जे जे गाम आववानां होय तेनो रस्तो पण पूछवो पडे छे, नहीं तो ज्यां जवानु छे त्यां न पहोंची शकाय ए गाम जेम पूछ्या पण त्यां वास कर्यो नहीं तेम पापादिक तत्त्वो जाणवां पण ग्रहण करवा नही जेम वाटमा आवता गामनो त्याग कर्यो तेम तेनो पण त्याग करवो अवश्यनो छे

शिक्षापाठ ८४ तत्त्वावबोध भाग ३

नवतत्त्वनुं काळभेदे जे सत्पुरुषो गुरुगम्यताथी श्रवण, मनन अने निदिध्यासन पूर्वक ज्ञान लेछे, ते सत्पुरुषो महा पुण्यशाळी तेमज धन्यवादने पात्र छे प्रत्येक सुज्ञपुरुषोने मारो विनयभावभूषित एज बोध छे के नवतत्त्वने स्वबुद्धयनुसार यथार्थ जाणवां

महावीर भगवंतनां शासनमां बहु मतमतांतर पडी गया छे, तेनुं मुख्य कारण तत्त्वज्ञान भणीथी उपासक वर्गनु लक्ष गयु ए छे

मात्र क्रियाभावपर राचता रह्या; जेनु परिणाम दृष्टिगोचर छे वर्त्तमान शोधमा आवेली पृथ्विनी वसति लगभग दोढ अबजनी गणाइ छे; तेमा सर्व गच्छनी मळीने जैनप्रजा मात्र वीश लाख छे ए प्रजा ते श्रमणोपासक छे एमाथी हु धारु छउ के नवतत्त्वने पठनरूपे बे हजार पुरुषो पण माड जाणता हशे; मनन अने विचार पूर्वक तो आगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण जाणता नही हशे. ज्यारे आवी पतित स्थिति तत्त्वज्ञान सबधी थइ गइ छे त्यारेज मतमतातर वधी पड्या छे. एक लौकिक कथन छे के "सो शाणे एक मत" तेम अनेक तत्त्वविचारक पुरुषोना मतमा भिन्नता बहुधा आवती नथी, माटे तत्त्वाववोध परम आवश्यक छे.

ए नवतत्त्व विचार सबधी प्रत्येक मुनिओने मारी विज्ञप्ति छे के विवेक अने गुरुगम्यताथी एनु ज्ञान विशेष वृद्धिमान करवु, एथी तेओना पवित्र पच महाव्रत दृढ थशे, जिनेश्वरना वचनामृतना अनुपम आनदनी प्रसादि मळशे, मुनित्वआचार पाळवामा सरळ थइ पडशे; ज्ञान अने क्रिया विशुद्ध रहेवाथी सम्यक्त्वनो उदय थशे; परिणामे भवात थइ जशे.

शिक्षापाठ ८९ तत्त्वाववोध भाग ४

जे जे श्रमणोपासक नवतत्त्व पठनरूपे पण जाणता नथी तेओए ते अवश्य जाणवा जाण्या पछी बहु मनन करवा समजाय तेटला गभिर आशय गुरुगम्यताथी सद्भावे करीने समजवा एथी आत्मज्ञान उज्ज्वळता पामशे, अने यमनियमादिकनु बहु पालन

नवतत्त्व एटले तेनु एक सामान्यगुथनयुक्त पुस्तक होय ते नहीं, परतु जे जे स्थळे जे जे विचारो ज्ञानीओए प्रणीत कर्या छे, ते ते विचारो नवतत्त्वमाना अमुक एक ने के विशेष तत्त्वना होय छे केवळी भगवाने ए श्रेणिओथी सकळ जगन्मडळ दर्शावी दीधु छे, एथी जेम जेम नयादि भेदथी ए तत्त्वज्ञान मळशे तेम तेम अपूर्व आनद अने निर्मळतानी प्राप्ति थशे, मात्र विवेक, गुरुगम्यता अने अप्रमाद जोइए ए नवतत्त्वज्ञान मने बहु प्रिय छे एना रसानुभवियो पण मने सदैव प्रिय छे

काळभेदे करीने आ वखते मात्र मति अने श्रुत ए बे ज्ञान भरतक्षेत्रे विद्यमान छे, बाकीना त्रण ज्ञान व्यवच्छेद छे, छता जेम जेम पूर्णश्रद्धाभावथी ए नवतत्त्वज्ञानना विचारोनी गुफामा उतराय छे, तेम तेम तेना अदर अद्भुत आत्मप्रकाश, आनद, समर्थ तत्त्वज्ञाननी स्फुरणा, उत्तम विनोद अने गभिर चळकाट दिग् करी दइ, शुद्ध सम्यग् ज्ञानना ते विचारो बहु उदय करे छे स्याद्वाद वचनामृतना अनत सुदर आशय समजवानी शक्ति आ काळमां आ क्षेत्रथी विच्छेद गयेली छता ते परत्वे जे जे सुदर आशयो समजाय छे ते ते आशयो अति अति गभिर तत्त्वथी भरेला छे पुन पुन' ते आशयो मनन कराय तो चार्वाकमतिना चचळ मनुष्यने पण सद्धर्ममा स्थिर करी दे तेवा छे सक्षेपमा सर्व प्रकारनी सिद्धि, पवित्रता, महाशील निर्मळ उडा अने गभिर विचार, स्वच्छ वैराग्यनी भेट ए तत्त्वज्ञानथी मळे छे

शिक्षापाठ ८६. तत्त्वावबोध भाग ५

एकवार एक समर्थ विद्वानसाथे निर्ग्रंथप्रवचननी चमत्कृति सबंधी वातचित थइ: तेना सबंधमा ते विद्वाने जणाव्यु के आटलु हु मान्य राखु छउ के महावीर ए एक समर्थ तत्त्वज्ञानी पुरुष हता; एमणे जे बोध कर्यो छे, ते झीली लइ प्रज्ञावत पुरुषोए अंग उपांगनी योजना करी छे, तेना जे विचारो छे ते चमत्कृत्ति भरेला छे, परतु ए उपरथी लोकालोकनु ज्ञान एमा रह्यु छे एम हु कही न शकु एम छता जो तमे कइ ए सबंधी प्रमाण आपता हो तो हु ए वातनी कइ श्रद्धा लावी शकु एना उत्तरमा में एम कह्यु के हु कइ जैन वचनामृतने यथार्थ तो शु पण विशेष भेदे करीने पण जाणतो नथी, पण जे सामान्य भावे जाणु छउ एथी पण प्रमाण आपी शकु खरो पछी नवतत्त्वविज्ञान सबंधी वातचित नीकळी. मे कह्यु एमा आखी सृष्टिनु ज्ञान आवी जाय छे, परतु यथार्थ समजवानी शक्ति जोइए पछी तेओए ए कथननु प्रमाण माग्यु, त्यारे आठ कर्म में कही वताव्या, तेनी साथे एम सूचव्यु के ए शिवाय एनाथी भिन्न भाव दर्शावे एवु नवमु कर्म शोधी आपो; पापनी अने पुण्यनी प्रकृतियो कहीने कह्यु आ शिवाय एक पण वधारे प्रकृति शोधी आपो एम कहेता अनुक्रमे वात लीधी प्रथम जीवना भेद कही पृछ्यु एमां कइ न्यूनाधिक कहेवा मागो छो? अजीवद्रव्यना भेद कही पृछ्यु कइ विशेष कहो छो? एम नवतत्व सबंधी वातचित थइ त्यारे तेओए थोडीवार विचार करीने कह्यु आतो महावीरनी कहेवानी अद्भुत चमत्कृति छे के जीवनो एक नवो भेद मळतो नथी, तेम पापपुण्यादिकनी एक मळती नथी, [illegible] कर्म पण मळतु नथी

तत्त्वज्ञानना सिद्धांतो जैनमा छे ए मारु लक्ष नहोतु आमा आखी सृष्टिनु तत्त्वज्ञान केटलेक अंशे आवी शके खरु

शिक्षापाठ ८७ तत्त्वावबोध भाग ६

एनो उत्तर आ प्रणीथी एम थयो के हजु आप आटलु कहो छो ते पण जैनना तत्त्वविचारो आपना हृदये आव्या नथी सामुरी, परतु हु मध्यस्थताथी सत्य कहु छउ के एमा जे विशुद्धज्ञान बताव्यु छे ते क्याये नथी, अने सर्व मतोए जे ज्ञान बताव्यु छे ते महावीरना तत्त्वज्ञानना एक भागमा आवी जाय छे एनु कथन स्याद्वाद छे, एक पक्षी नथी

तमे कह्यु के केटलेक अंशे सृष्टिनु तत्त्वज्ञान एमा आवी शके खरु, परतु ए मिश्रवचन छे अमारी समजाववानी अल्पज्ञताथी एम बने खरुं, परतु एथी ए तत्त्वोमा कइ अपूर्णता छे एमतो नथीज आ कइ पक्षपाती कथन नथी विचार करी आखी सृष्टिमाथी ए शिवायनु एक दशमु तत्त्व शोधता कोइ काळे ते मळनार नथी ए सबधी प्रसगोपात आपणे ज्यारे वातचित अने मध्यस्थ चर्चा थाय सारे नि शका थाय

उत्तरमा तेओए कह्यु के आ उपरथी मने एम तो नि शकता छे के जैन अद्भुत दर्शन छे श्रेणिपूर्वक तमे मने केटलाक नवतत्त्वना भाग कही बताव्या एथी हु एम वेधडक कही शकु छउ के महावीर गुप्तभेदने पामेला पुरुष हता एम सहजसाज वात करीने "उपन्नेवा" "विग्नेवा" "धुवेवा" ए लब्धिवाक्य मने तेओए कह्यु ते कही

बताव्या पछी तेओए एम जणाव्यु के आ शब्दोना सामान्य अर्थमा तो कइ चमत्कृति देखाती नथी; उपजवु, नाश थवु अने अचळता, एम ए त्रण शब्दोना अर्थ छे. परतु श्रीमन् गणधरोए तो एम दर्शित कर्यु छे के ए वचनो गुरुमुखथी श्रवण करता आगळना भाविक शिष्योने द्वादशागीनु आशय भरित ज्ञान थतु हतु? ए माटे में कइक विचारो पहोचाडी जोया छता मने तो एम लाग्यु के ए बनवु असभवित छे, कारण अति अति सूक्ष्म मानेलु सिद्धातिक ज्ञान एमा क्याथी शमाय? ए सबधी तमे कइ लक्ष पहोचाडी शको?

शिक्षापाठ ८८ तत्त्वावबोध भाग ७

उत्तरमा में कह्यु के आ काळमा त्रण महाज्ञान भारतथी विच्छेद छे; तेम छता हु कइ सर्वज्ञ के महा प्रज्ञावत नथी छता मारु जेटलु सामान्य लक्ष पहोचे तेटलु पहोचाडी कइ समाधान करी शकीश, एम मने सभव रहे छे. त्यारे तेमणे कह्यु जो तेम सभव थतो होय तो ए त्रिपदी जीवपर "ना" ने "हा" विचारे उतारो ते एम के जीव शु उत्पत्तिरूप छे? तो के ना जीव शु विप्रतारूप छे? तो के ना जीव शु ध्रुवतारूप छे? तो के ना आम एक वखत उतारो अने बीजी वखत जीव शु उत्पत्तिरूप छे? तो के हा जीव शु विप्रतारूप छे? तो के हा जीव शु ध्रुवतारूप छे? तो के हा आम उतारो आ विचारो आखा मडळे एकत्र करी योज्या छे. ए जो यथार्थ कही न शकाय तो अनेक प्रकारथी दूषण आवी शके. विप्ररूपे होय [illegible] पहेची शका,

उत्पत्ति, विनता अने ध्रुवता नथी तो जीव कया प्रमाणथी सिद्ध करशो? ए बीजी शंका विनता अने ध्रुवताने परस्पर विरोधाभास ए त्रीजी शंका जीव केवळ ध्रुव छे तो उत्पत्तिमा हा कही ए असत्य ए चोथो विरोध उत्पन्न जीवनो ध्रुव भाव कहो तो उत्पन्न कोणे कर्यो? ए पांचमी शंका अने विरोध अनादिपणु जतु रहे छ ए छट्ठी शंका केवळ ध्रुव विनरूपे छे एम कहो तो चार्वाकमिश्र वचन थयु ए सातमो दोष उत्पत्ति अने विनरूप कहेशो तो केवळ चार्वाकनो सिद्धात ए आठमो दोष उत्पत्तिनी ना, विनतानी ना अने ध्रुवतानी ना कही पछी त्रणेनी हा कही एना वळी पाछा छ दोष एटले सर्वाळे चौद दोष केवळ ध्रुवता जतां तीर्थंकरना वचन त्रुटी जाय ए पदरमो दोष उत्पत्ति ध्रुवता लेता कर्त्तानी सिद्धि थाय जेथी सर्वज्ञ वचन त्रुटी जाय ए सोळमो दोष उत्पत्ति विनतारूपे पापपुण्यादिकनो अभाव एटले धर्माधर्म सघळु गयु ए सत्तरमो दोष उत्पत्ति विनता अने सामान्य स्थितिथी (केवळ अचळ नही) त्रिगुणात्मक माया सिद्ध थाय छे ए अढारमो दोष.

शिक्षापाठ ८९ तत्त्वावबोध भाग ८

एटला दोष ए कथनो सिद्ध न थता आवे छे एक जैनमुनिए मने अने मारा मित्रमंडळने एम कह्यु हतु के जैनसप्तभगी नय अपूर्व छे, अने एथी सर्व पदार्थ सिद्ध थाय छे नास्ति, अस्तिना एमा अगम्य भेद रह्या छे आ कथन सांभळी अमे बधा घेर आव्या पछी योजना करतां करतां आ लब्धिवाक्यनी जीवपर योजना करी

हु धार छउ के एवी नास्ति अस्तिना नयेभाय जीवपर नही उतरी
शक लब्धिवाक्यो पण क्लेशरुप थइ पडशे. तोपण ए भणी मारो
रुं तिरस्कारनी दृष्टि नथी.

आना उत्तरमा में कयु के आपे जे नास्ति अने अस्ति नय
जीवपर उतारवा गयों ते सनिक्षेप शैलीथी नथी, एटले वस्तुने
एमाथी एकातिक पक्ष लेइ जवाय; तेम वळी हु कइ स्याद्वाद शैलीनो
यथार्थ जाणनार नथी, मदमतिथी लेश भाग जाणु छउ नास्ति
अस्ति नय पण आपे यथार्थ शैली पूर्वक उतार्यो नथी एटले हु
तर्कथी जे उत्तर दइ शकु ते आप साभळो.

उत्पत्तिमा "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ
शके के "जीव अनादि अनत छे"

विप्रतामा "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ
शके के "एनो कोइ काळे नाश नथी"

ध्रुवतामा "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ
शके के "एक देहमा ते सदैवने माटे रहेनार नथी"

शिक्षापाठ ९० तत्त्वावबोध भाग ९

उत्पत्तिमा "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ
शके के "जीवनो मोक्ष थया सुधी एक देहमाथी च्यवी फरी
बीजा देहमा उपजे छे"

विगतामा "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ गइ के "न जे देहमाथी आव्यो साथी विग पाम्यो, वा क्षण क्षण प्रति एनी आत्मिक ऋद्धि विषयादिक मरणवडे रुधाइ रही छे, ए रूप विगता योजी शकाय छे"

ध्रुवतामा "हा" एवी जे योजना कही छे ते एम यथार्थ थइ गइ के "द्रव्ये करी जीव कोइ काळे नाश रूप नथी, त्रिकाळ सिद्ध छे"

हवे एथी करीने एटले ए अपेक्षाओ लक्षमा राखता योजेला दोष पण हु धारु छउ के टळी जशे

१ जीव विग्ररूपे नथी माटे ध्रुवता सिद्ध थइ ए पहेलो दोष टळ्यो

२ उत्पत्ति, विग्रता अने ध्रुवता ए भिन्न भिन्न न्याये सिद्ध थइ, एटले जीवनुं सत्यत्व सिद्ध थयु ए बीजो दोष गयो

३ जीवना सत्यस्वरूपे ध्रुवता सिद्ध थइ एटले विग्रता गइ ए त्रीजो दोष गयो

४ द्रव्य भावे जीवनी उत्पत्ति असिद्ध थइ ए चोथो दोष गयो

५ अनादि जीव सिद्ध थयो एटले उत्पत्ति सबधीनो पाचमो दोष गयो

६ उत्पत्ति असिद्ध थइ एटले कर्त्ता सबधीनो छट्ठो दोष गयो

७ ध्रुवता साथे विग्रता लेता अबाध थयु एटले चार्वाकमिश्र-वचननो सातमो दोष गयो

८ उत्पत्ति अने विनता प्रथक् प्रथक् देहे सिद्ध थइ माटे स्थळ चार्वाकसिद्धांत ए नामनो आठमो दोष गयो

१४ शकानो परस्परनो विरोधाभास जता चौद मुधीना दोष गया.

१५ अनादि अनतता सिद्ध थता स्याद्वादवचन सत्य थयु ए पदरमो दोष गयो

१६ कर्त्ता नथी ए सिद्ध थता जिनवचननी सत्यता रही ए साळमो दोष गयो.

१७ धर्माधर्म. देहादिक पुनरावर्त्तन सिद्ध थता सत्तरमो दोष गयो.

१८ ए सर्व वात सिद्ध थता निगुणात्मक माया असिद्ध थइ ए अढारमो दोष गयो.

शिक्षापाठ ९१ तत्त्वावबोध भाग १०

आपनी योजेली योजना हु धारु छउ के आथी समाधान पामी हशे. आ कइ यथार्थ शैली उतारी नथी, तोपण एमा कइ पण विनोद मळी शके तेम छे ए उपर विशेष विवेचनने माटे घणो वखत जोइए एटले वधारे कहेतो नथी; पण एक बे टुकी वात आपने कहेवानी छे ते जो आ समाधान योग्य थयु होय तो कहु पछी तेओ तरफथी मनमानतो उत्तर मल्यो, अने एक बे वात जे कहेवानी होय ते सहर्ष कहो एम तेओए

पछी मे मारी वात सजीवन करी लब्धि संबंधी कह्यु आप ए लब्धि संबंधी शंका करो के एने लेशरूप कहो तो ए वचनोने अन्याय मळे छे एमां अति अति उज्ज्वळ आत्मिक शक्ति गुरुगम्यता अने वैराग्य जोइए छीए ज्यां सुधी तेम नथी, त्यां सुधी लब्धि विषे शंका रहे खरी, पण हु धारु छउं के आ वेळा ए संबंधी कहेला बे बोल निरर्थक नही जाय ते ए के जेम आ योजना नास्ति अस्तिपर योजी जाइ, तेम एमां पण बहु सूक्ष्म विचार करवाना छे देहे देहनी पृथक् पृथक् उत्पत्ति, च्यवन, विश्राम, गर्भाधान, पर्याप्ति, इंद्रिय, सत्ता, ज्ञान, संज्ञा, आयुष्य, विषय इत्यादि अनेक कर्मप्रकृति प्रत्येक भेदे लेता जे विचारो ए लब्धिथी नीकळे ते अपूर्व छे ज्यां सुधी लक्ष पहोंचे त्यां सुधी सघळा विचार करे छे परंतु द्रव्यार्थिक भावार्थिक नये आखी सृष्टिनु ज्ञान ए त्रण शब्दोमा रह्यु छे, तेनो विचार कोइज करे छे, ते सद्गुरु मुखनी पवित्र लब्धिरूपे ज्यारे आवे त्यारे द्वादशांगी ज्ञान शा माटे न थाय? जगत् एम कहेताज मनुष्य एक घर, एक वास, एक गाम, एक शहेर, एक देश, एक खंड, एक पृथ्वि ए सघळु मूकी दइ असंख्यात द्वीप समुद्रादिथी भरपूर वस्तु केम समजी जाय छे? एनु कारण मात्र एटलुज के ते ए शब्दनी बहोळताने समज्यु छे, किंवा एनु लक्ष एवी अमुक बहोळताए पहोंच्यु छे; जेथी जगत् एम कहेता एवडो मोटो मर्म समजी शके छे, तेमज ऋजु अने सरळ सत्पात्र शिष्यो निर्ग्रंथ गुरुथी ए त्रण शब्दोनी गम्यता लइ द्वादशांगी ज्ञान पामता हता आवी रीते ते लब्धि अल्पज्ञता छतां विवेके जोता क्लेशरूप नथी

शिक्षापाठ ९२ तत्त्वावबोध भाग ११

एमज नवतत्त्व सबंधी छे जे मध्य वयना क्षत्रियपुत्रे जगत् अनादि छे, एम बेधडक कही कर्त्ताने उडाड्यो हशे, ते ते पुरुषे शु कई सर्वज्ञताना गुप्त भेद विना कर्यु हशे? तेम एनी निर्दोषता विषे ज्यारे आप वाचशो त्यारे निश्चय एवो विचार करशो के ए परमेश्वर हता. कर्त्ता नहोता अने जगत् अनादि हतु तो तेम कह्यु एना अपक्षपाती अने केवळ तत्त्वमय विचारो आपे अवश्य विशोधवा योग्य छे जैन दर्शनना अवर्णवादीओ जैनने नथी जाणता एटले एने अन्याय आपे छे, ते ममत्वथी अधोगति मेळवशे

आ पछी केटलीक वातचित थइ प्रसंगोपात ए तत्त्व विचारवानु वचन लइने सहर्ष हु त्याथी उठ्यो हतो

तत्त्वावबोधना संबंधमा आ कथन कहेवायु अनंतभेदथी भरेला ए तत्त्व विचारो काळभेदथी जेटला ज्ञेय थाय तेटला जाणवा, ग्राह्य थाय तेटला ग्रहवा, अने त्याज्य देखाय तेटला त्यागवा

ए तत्त्वोने जे यथार्थ जाणे छे, ते अनंत चतुष्टयथी विराजमान थाय छे ए सत्य समजवु, ए नव तत्त्वना क्रमवार नाम मुकवामा पण भरेलु सूचवन जीवने मोक्षनी निकटतानु जणाय छे!

शिक्षापाठ ९३ तत्त्वावबोध भाग १२

एतो तमारा लक्षमां छे के जीव अजीव ए अनुक्रमथी छेवटे मोक्ष नाम आवे छे हवे ते एक पछी एक मूकी जइए तो जीव अने मोक्षने अनुक्रमे आद्यंत रहेवुं पडशे

१ जीव	२ अजीव	३ पुण्य
४ पाप	५ आश्रव	६ संवर
७ निर्जरा	८ बंध	९ मोक्ष

में आगळ कह्युं हतुं के ए नाम मुकवामां जीव अने मोक्षने निकटता छे छतां आ निकटता तो न थइ पण जीव अने अजीवने निकटता थइ वस्तुत एम नथी अज्ञानवडे तो ए बन्नेनेज निकटता रही छे, पण ज्ञानवडे जीव अने मोक्षने निकटता रही छे जेमके.–
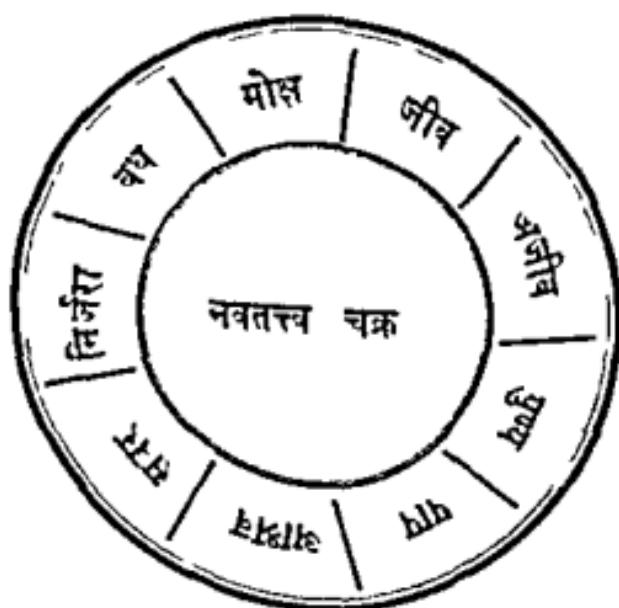
हवे जुओ ए बन्नेने कइ निकटता आवी छे ? हा कहेली निकटता आवी गई छे पण ए निकटता तो द्रव्यरूप छे ज्यारे भाव निकटता आवे त्यारे सर्व सिद्ध थाय ए द्रव्य निकटतानु साधन सत्परमात्मतत्त्व, सद्गुरुतत्त्व अने सद्धर्मतत्त्व ओळखी सर्दहवु ए छे भावनिकटता एटले केवळ एकज रूप थवा ज्ञान, दर्शन अने चारित्र साधनरूप छे.

ए चक्रथी एवी पण आशका थाय के ज्यारे बन्ने निकट छे त्यारे शु बाकीना त्यागवा ? उत्तरमा एम कहु छु के जो सर्व त्यागी शकता हो तो त्यागी द्यो, एटले मोक्षरूपज थशो नहितो हेय, ज्ञेय, उपादेयनो बोध ल्यो, एटले आत्मसिद्धि प्राप्त थशे

शिक्षापाठ ९४ तत्त्वावबोध भाग १३

जे जे हु कही गयो ते ते कइ केवळ जैनकुळथी जन्म पामेला पुरुषने माटे नथी, परतु सर्वने माटे छे. तेम आ पण निःशक मानजो के हु जे कहु छउ ते अपक्षपाते अने परमार्थ बुद्धिथी कहु छउ.

तमने जे धर्मतत्त्व कहेवानु छे, ते पक्षपात के स्वार्थबुद्धिथी कहेवानु मने कइ प्रयोजन नथी; पक्षपात के स्वार्थथी हु तमने अधर्मतत्त्व बोधी अधोगतिने शामाटे साधु? वारवार तमने हु निर्ग्रंथनां वचनामृतो माटे कहु छउं, तेनु कारण ते वचनामृतो तत्त्वमां परिपूर्ण छे, ते छे जिनेश्वरोने एवु कोइपण कारण नहोतुं के ते निमित्ते तेओ पक्षपाती बोधे; तेम एओ
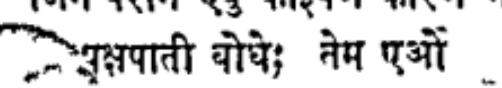
नहता, त एथी मृषा नीगइ जवाय आशका करशो के ए अज्ञानी नहोता ए शा उपरथी जणाय? तो तेना उत्तरमा एओना पवित्र सिद्धांतोना रहस्यने मनन करवानु कहु छउ अने एम जे करशे त तो पुन आशका ल्श पण नहीं करे जैनमतप्रवर्तकोप्रति मारे कइ राग बुद्धि नथी, के एमाटे पक्षपाते हु कइपण तमने कहु, तेमज अन्यमत प्रवर्त्तकोप्रति मारे कइ वेरबुद्धि नथी के मिथ्या एनु खडन करु, बन्नेमा हुतो मध्यस्थरूप छउ बहु बहु मननथी अने मारी मति ज्या सुधी पहोची त्या सुधीना विचारथी हु विनयथी कहु छउ, के प्रिय भव्यो! जैन जेवु एके पूर्ण अने पवित्र दर्शन नथी, वीतराग जेवो एके देव नथी, तरीने अनत दुःखथी पार पामवु होय तो ए सर्वज्ञ दर्शनरूप कल्पवृक्षने सेवो

शिक्षापाठ ९५ तत्त्वावबोध भाग १४

जैन ए एटली बधी सूक्ष्म विचार सकलनाथी भरेलु दर्शन छे के एमा प्रवेश करता पण बहु वखत जोइए उपर उपरथी के कोइ प्रतिपक्षीना कहेवाथी अमुक वस्तु सबधी अभिप्राय बाधवो के आपवो ए विवेकीनु कर्त्तव्य नथी एक तळाव सपूर्ण भर्यु होय तेनु जळ उपरथी समान लागे छे, पण जेम जेम आगळ चालीए छीए तेम तेम वधारे वधारे उडापणु आवतु जाय छे, छतां उपर तो जळ सपाटज रहे छे, तेम जगतना सघळा धर्ममतो एक तळाव रूप छे, तेने उपरथी सामान्य सपाटी जोइने सरखा कही देवा ए उचित नथी एम कहेनारा तत्त्वने पामेला पण नथी जैनना एकेका

शास्त्र सिद्धांतपर विचार करता आयुष्य पूर्ण थाय, तोपण पार मान नहा तेम रह्यु छे. बाकीना सघळा धर्ममतोना विचार जिनप्रणीत वचनामृतसिंधु आगळ एक बिंदुरूप पण नथी जैनमत जे प्राप्यो, अने सेव्यो ते केवळ विरागी अने सर्वज्ञ थइ जाय ? एना प्रवर्तको केवा पवित्र पुरुषो हता ! एना सिद्धांतो केवा अखंड संपूर्ण अने दयामय छे ! एमा दूषणतो कांइ छेज नहि ! सर्वथा निर्दोष तो मात्र जैनु दर्शन छे ! एवो एके पारमार्थिक विषय नथी के जे जैनमा नही होय अने एवु एके तत्त्व नथी के जे जैनमा नथी, एक विषयने अनंत भेदे परिपूर्ण कहेनार ते जैनदर्शन छे प्रयोजनभूततत्त्व एना जेवु क्याय नथी एक देहमा बे आत्मा नथी, तेम आखी सृष्टिमा बे जैन एटले जैनना तुल्य बीजु दर्शन नथी आम कहेवानु कारण शु ? तो मात्र तेनी परिपूर्णता, वीतरागीता, सत्यता अने जगत् हितैषिता

शिक्षापाठ ९६ तत्त्वावबोध भाग १५

न्यायपूर्वक आटलु मारे पण मान्य राखवु जोइए के ज्यारे एक दर्शनने परिपूर्ण कही वात सिद्ध करवी होय त्यारे प्रतिपक्षनी मध्यस्थ बुद्धिथी अपूर्णता दर्शाववी जोइए पण ए बे बातपर विवेचन करवा जेटली अहीं जग्यो नथी, तोपण थोडु थोडु कहेतो आव्यो छउ मुख्यत्वे कहेवानु के ए वात जेने रुचिकर थती न होय के असंभवित लागती होय तेणे जैनतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो अने अन्यतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो मध्यस्थ बुद्धिथी मनन करी

तोल्न करतु ए उपरथी अवश्य एटलु महावाक्य नीकळशे, के आगळ नगारापर डाडी ठोकीने कहेवायु हतुं ते सत्य छे.

जगत् गाडरियो प्रवाह छे धर्मना मतभेद सबधीना शिक्षापाठमां दर्शाव्या प्रमाणे अनेक धर्ममतनी जाळ लागी पडी छे विशुद्ध आत्मा कोइकज थाय छे विवेकथी तत्त्वने कोइकज शोधे छे एटले जैन तत्त्वने अन्यदर्शनियो शामाटे जाणता नथी ए खेद के आशका करवा जेवुज नथी

छता मने बहु आश्चर्य लागे छे के केवळ शुद्ध परमात्मतत्त्वने पामेला, सकळ दूषणरहित, मृषा कहेवानु जेने कइ निमित्त नथी एवा पुरुषना कहेला पवित्रदर्शनने पोते तो जाण्यु नहीं, पोताना आत्मानु हित तो कर्युं नहीं, पण अविवेकथी मतभेदमा आवी जइ केवळ निर्दोष अने पवित्र दर्शनने नास्तिक शा माटे कह्यु हशे? पण ए कहेनारा एनां तत्त्वने जाणता नहोता वळी एनां तत्त्वने जाणवाथी पोतानी श्रद्धा फरशे, त्यारे लोको पछी पोताना आगळ कहेला मतने गांठशे नही, जे लौकिक मतमा पोतानी आजीविका रही छे, एवा वेदादिनी महत्ता घटाडवाथी पोतानी महत्ता घटशे, पोतानु मिथ्या स्थापित करेलु परमेश्वर पद चालशे नहीं एथी जैनतत्त्वमा प्रवेश करवानी रुचिने मूळथीज बध करवा लोकोने एवी भ्रमभुरकी आपी के जैन नास्तिक छे लोको तो बिचारा गभरगाडर छे, एटले पछी विचार पण क्याथी करे? ए कहेवु केटलु मृषा अने अनर्थकारक छे ते जेणे वीतराग प्रणीत सिद्धांतो विवेकथी जाण्या छे, ते जाणे मारु कहेवु मदबुद्धिओ वखते पक्षपातमा लइ जाय

शिक्षापाठ ९७ तत्त्वावबोध भाग १६

पवित्र जैन दर्शनने नास्तिक कहेवरावनाराओ एक मिथ्या दलीलथी फाववा इच्छे छे, के जैनदर्शन आ जगत्ना कर्त्ता परमेश्वरने मानतु नथी अने जगत्कर्त्ता परमेश्वरने जे नथी मानता ते तो नास्तिकज छे, एवी मानी लीधेली वात भद्रिकजनोने शीघ्र चोटी रहे छे कारण तेओमा यथार्थ विचार करवानी प्रेरणा नथी पण जो ए उपरथी एम विचारमां आवे के त्यारे जैन जगत्ने अनादि अनत कहे छे ते कया न्यायथी कहे छे? जगत्कर्त्ता नथी एम कहेनामा एमनु निमित्त शु छे? एम एक पछी एक भेदरूप विचारथी तेओ जैननी पवित्रतापर आवी शके जगत रचवानी परमेश्वरने जरूर शी हती? रच्यु तो सुख दु ख मूकवानु कारण शु हतु? रचीने मोत शा माटे मूक्यु? ए लीला कोने बतावबी हती? रच्यु तो क्यां कर्मथी रच्यु? ते पहेला रचवानी इच्छा का नहोती? इश्वर कोण? जगत्ना पदार्थ कोण? अने इच्छा कोण? रच्यु तो जगत्मा एकज धर्मनु प्रवर्त्तन राखवु हतु, आम भ्रमणमा नाखवानी जरूर शी हती? कदापि एम मानो के ए विचारानी भूल थइ! हशे! क्षमा करीए! पण एवु दोढ डहापण क्याथी सूज्यु के एनेज मूळथी उखेडनार एवा महावीर जेवा पुरुषोने जन्म आप्यो? एना कहेलां दर्शनने जगत्मा विद्यमानता का आपी? पोताना पगपर हाथे करीने कुहाडो मारवानी एने शु अवश्य हती? एक तो जाणे ए प्रकारे विचार, अने बाकी बीजा प्रकारे ए विचार के जैनदर्शन प्रवर्त्तकोने एनाथी कई द्वेष हतो? जगत्कर्त्ता होत तो एम कहेवाथी एओना लाभने कइ हानि पहोंचती हती? जगत्कर्त्ता नथी अनादि अनत [illegible] मा एमने कइ महत्ता मळी

आवा अनेक विचारो विचारता जणाइ आवशे के जगतनु स्वरुप
ते तेमज ने पवित्र पुरुषोए कयु छे एवा भिन्नभाव कहेवानु एमने
लेशमात्र प्रयोजन नहोतु सूक्ष्ममांसूक्ष्म जतुनी रक्षा जेणे प्रणीत
करी छे, एक रजकणथी करीने आखा जगतना विचारो जेणे सर्व
भेदे कथा छे तेवा पुरुषोना पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेनारा कयि
गतिने पामशे ए विचारतां दया आवे छे ?

शिक्षापाठ ९८ तत्त्वावबोध भाग १७

जे न्यायथी जय मेळवी शकतो नथी, ते पछी गाळो भाडे छे,
तम पवित्र जैनना अखड तत्त्वसिद्धातो शकराचार्य, दयानद सन्यासी
वगेरे ज्यारे तोडी न शक्या त्यारे पछी जैन नास्तिक है सो
चार्वाकमेंसे उत्पन्न हुआ है एम कहेवा माड्यु पण ए स्थळे
प्रश्न करे, के महाराज! ए विवेचन तमे पछी करो एवा
कहेवामा कइ वखत विवेक के ज्ञान जोइतु नथी, पण आनो
आपो के जैन वेदथी कयि वस्तुमा उतरतो छे, एनु ज्ञान
बोध, एनु रहस्य, अने एनु सत्शील केवु छे ते ५५०
आपना वेद विचारो कयी बाबतमा जैनथी चढे छे?
मर्मस्थानपर आवे त्यारे मोनता शीवाय बेओ पासे बीजु
रहे नहीं जे सत्पुरुषोना वचनामृत अने योगबळथी
सत्यदया, तत्त्वज्ञान अने महाशील उदय पामे छे, ते
जे पुरुषो शृंगारमा राच्या पड्या छे, सामान्य
जाणता, जेनो आचार पण पूर्ण नथी, तेने
नामे स्थापवा अने सत्यस्वरुपनी

स्वरूप पामेल्याने नास्तिक कहेशा, ए एमनी केटली वधी कर्मनी वहोल्तानु सूचवन करे छे ? परतु जगत् मोहाध छे; मतभेद छे सा अधार छे ममत्व के राग छे सा सस तत्त्व नथी ए वात आपणे शा माटे न विचारवी ?

हु एक मुख्य वात तमने कहु छउ के जे ममत्वरहितनी अने न्यायनी छे. ते ए छे के गमे ते दर्शनने तमे मानो, गमे तो पछी तमारी द्रष्टिमा आवे तेम जैनने कहो, सर्व दर्शनना शास्त्रतत्त्वने जुओ, तेम जैनतत्त्वने पण जुओ स्वतत्र आत्मिकशक्तिए जे योग्य लागे ते अगीकार करो मारु के बीजा गमे तेनु भले एकदम तमे मान्य न करो पण तत्त्वने विचारो ?

शिक्षापाठ ९९ समाजनी अगत्य

आग्लभौमियो ससार सबधी अनेक कळा कौशल्यमा शाथी विजय पाम्या छे ? ए विचार करता आपणने तत्काल जणाशे के तेओनो बहु उत्साह अने ए उत्साहमा अनेकनु मळवु कळाकौशल्यना ए उत्साही काममा ए अनेक पुरुषोनी ऊभी थएली सभा के समाजे परिणाम शु मेळव्यु ? तो उत्तरमा एम आवशे के लक्ष्मी, कीर्ति अने अधिकार ए एमना उदाहरण उपरथी ए जातिना कळाकौशल्यो शोधवानो हु अही बोध करतो नथी, परतु सर्वज्ञ भगवाननु कहेलु गुप्त तत्त्व प्रमाद स्थितिमा आवी पडयु छे, तेने प्रकाशित करवा तथा पूर्वाचार्योना गुथेला महान शास्त्रो एकत्र करवा, पडेला गच्छना मतमतातरने टाळवा तेमज धर्मविद्याने प्रफुल्लित करवा सदाचरणी

आरा अनेक विचारो विचारता जणाइ आवशे के जगतनु स्वरुप जे तमज ते पवित्र पुरुषोए कह्यु छे एमा भिन्नभाव कहेवानु एमने लेशमात्र प्रयोजन नहोतु सूक्ष्ममासूक्ष्म जतुनी रक्षा जेणे प्रणीत करी छे, एक रजकणथी करीने आखा जगतना विचारो जेणे सर्व भेदे कह्या छे तेवा पुरुषोना पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेनारा कयि गतिने पामशे ए विचारतां दया आवे छे ?

शिक्षापाठ ९८ तत्त्वावबोध भाग १७

जे न्यायथी जय मेळवी शकतो नथी, ते पछी गाळो भाडे छे, तेम पवित्र जैनना अखड तत्त्वसिद्धातो शंकराचार्य, दयानद सन्यासी वगेरे ज्यारे तोडी न शक्या त्यारे पछी जैन नास्तिक है, सो चार्वाकमेंसे उत्पन्न हुआ है एम कहेता मांडयुं पण ए स्थळे कोइ प्रश्न करे, के महाराज ! ए विवेचन तमे पछी करो एवा शब्दो कहेवामा कट वखत विवेक के ज्ञान जोइतु नथी, पण आनो उत्तर आपो के जैन वेदथी कयि वस्तुमा उतरतो छे, एनु ज्ञान, एनो बोध, एनु रहस्य, अने एनु सत्शील केवु छे ते एकवार कहो ? आपना वेद विचारो कयी बाबतमां जैनथी चढे छे ? आम ज्यारे मर्मस्थानपर आवे त्यारे मौनता शीवाय तेओ पासे बीजु कइ साधन रहे नही जे सत्पुरुषोना वचनामृत अने योगबळथी आ सृष्टिमा सत्य, दया, तत्त्वज्ञान अने महाशील उदय पामे छे ते पुरुषो करता जे पुरुषो शृगारमा रच्या पड्या छे, सामान्य तत्त्वज्ञानने पण नथी जाणता, जेनो आचार पण पूर्ण नथी, तेने चढता कहेवा परमेश्वरने नामे स्थापवा अने सत्यस्वरुपनी अवर्ण भाषा बोल्वी, ए॰॰

९ मर्यादा उपरान्त काम	१० आपवडाइ
११ तुच्छवस्तुथी आनंद	१२ रसगारवलुब्धता
१३ अति भोग.	१४ पारकु अनिष्ट इच्छवु
१५ कारण विनानु रळवु.	१६ झाझानो स्नेह.
१७ अयोग्यस्थळे जवु	१८ एके उत्तम नियम साध्य न करवो

ज्या सुधी आ अष्टादश विषयी मननो संबंध छे, त्या सुधी अष्टादश पापस्थानक क्षय थवाना नथी आ अष्टादश दोष जवाथी मनोनिग्रहता अने धारेली सिद्धि थइ शके छे. ए दोष ज्या सुधी मनथी निकटता धरावे छे त्या सुधी कोइपण मनुष्य आत्मसार्थक करवानो नथी अति भोगने स्थळे सामान्य भोग नहीं, पण केवळ भोग त्यागव्रत जेणे धर्यु छे, तेमज ए एके दोषनु मूळ जेना हृदयमा नथी ते सत्पुरुष महद्भागी छे

शिक्षापाठ १०१ स्मृतिमा राखवायोग महावाक्यो

१ एक भेदे नियम ए आ जगतनो प्रवर्त्तक छे

२ जे मनुष्य सत्पुरुषोना चरित्ररहस्यने पामे छे ते मनुष्य परमेश्वर थाय छे

३ चचळ चित्त ए सर्व विषम दुःखनु मुळियु छे

श्रीमत अने धीमत बन्नेए मळीने एक महान समाज स्थापन करवानी अवश्य छे, एम दर्शावुं छउं पवित्र स्याद्वादमतनुं ढंकायलुं तत्त्व प्रसिद्धिमां आणवा ज्यां सुधी प्रयोजन नथी, त्यां सुधी शासननी उन्नति पण नथी लक्ष्मी, कीर्ति अने अधिकार संसारी कळा-काशल्यथी मळे छे, परंतु आ धर्मकळाकौशल्यथी तो सर्व सिद्धि सांपडशे महान् समाजना अंतर्गत उपसमाज स्थापवा वाडामां बेसी रहेवा करतां मतमतांतर तजी एम करवुं उचित छे. हुं इच्छुं छउं के ते कृतनी सिद्धि थई जैनांतर्गच्छ मतभेद टळो, सत्य वस्तु उपर मनुष्यमंडळनुं लक्ष आवो, अने ममत्व जाओ!

शिक्षापाठ १०० मनोनिग्रहनां विघ्न

वारंवार जे बोध करवामां आव्यो छे तेमांथी मुख्य तात्पर्य नीकळे छे ते ए छे के आत्माने तारो अने तारवा माटे तत्त्वज्ञाननो प्रकाश करो, तथा सत्शीलने सेवो ए प्राप्त करवा जे जे मार्ग दर्शाव्या ते ते मार्ग मनोनिग्रहताने आधीन छे मनोनिग्रहता थवा लक्षनी बहोळता करवी जरूरनी छे बहोळतामां विघ्नरूप नीचेना दोष छे

१	आळस	२	अनियमित उंघ
३	विशेष आहार	४	उन्माद प्रकृति
५	मायाप्रपंच	६	अनियमित काम
७	अकरणीय विलास	८	मान

प्र०—रूपी कया न्यायथी अने अरूपी कया न्यायथी ते कहो ?

उ०—देह निमित्ते रूपी अने स्वस्वरूपे अरूपी.

प्र०—देह निमित्त शाथी छे ?

उ०—स्वकर्मना विपाकथी.

प्र०—कर्मनी मुख्य प्रकृतियो केटली छे ?

उ०—आठ.

प्र०—कयि कयि ?

उ०—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र अने अतराय.

प्र०—ए आठे कर्मनी सामान्य समज कहो ?

उ०—ज्ञानावरणीय, एटले आत्मानी ज्ञान सबधीनी जे अनतशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवु ते दर्शनावरणीय एटले आत्मानी जे अनत दर्शनशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवु ते. वेदनीय एटले देहनिमित्ते साता असाता बे प्रकारना वेदनीय कर्म एथी अव्याबाध सुखरूप आत्मानी शक्ति रोकाइ रहेवी ते मोहनीय कर्म एटले आत्मचारित्र रूप शक्ति रोकाइ रहेवी ते आयुकर्म एटले अक्षय स्थिति गुण रोकाइ रहेवो ते नामकर्म एटले अमूर्त्तिरूप दिव्य शक्ति रोकाइ रहेवी ते गोत्रकर्म एटले अटल अवगाहनारूप आत्मिकशक्ति रोकाइ रहेवी ते अतराय कर्म एटले अनत दान, लाभ, वीर्य, भोगोपभोग शक्ति रोकाइ रहेवी ते

८ ज्ञानीनो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बन्ने समान दुःखदायक छे

५ समस्वभाविनु मळवु एने ज्ञानीओ एकात कहे छे

६ इन्द्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करता तेने तमे जीतवामाज सुख, आनद अने परमपद प्राप्त करशो

७ रागविना ससार नथी अने ससारविना राग नथी

८ युवावयनो सर्व सग परित्याग परमपदने आपे छे

९ ते वस्तुना विचारमा पहोचो के जे वस्तु अतीद्रिय स्वरूप छे

१० गुणीना गुणमा अनुरक्त थाओ

शिक्षापाठ १०२ विविध प्रश्नो भाग १

आजे तमने हु केटलाक प्रश्नो निग्रथप्रवचनानुसार उत्तर आपवा माटे पूछु छउ कहो धर्मनी अगत्य शी छे?

उ०—अनादि काळथी आत्मानी कर्मजाळ टाळवा माटे

प्र०—जीव पहेलो के कर्म?

उ०—बन्ने अनादि छे जीव पेहेलो होय तो ए विमळ वस्तुने मळ वळगवानु कंइ निमित्त जोइए कर्म पेहेलां कहो तो जीव विना कर्म कर्या कोणे? ए न्यायथी बन्ने अनादि छे

प्र०—जीव रूपी के अरूपी?

उ०—रूपी पण खरो, अने अरूपी पण खरो

४ ज्ञानीनो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बन्ने समान दुःखदायक छे

५ ममस्वभाविनु मळवु एने ज्ञानीओ एकान कहे छे

६ इंद्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करता तेने तमे जीतवामाज सुख, आनद अने परमपद प्राप्त करशो

७ रागविना ससार नथी अने ससारविना राग नथी

८ युवावयनो सर्व सग परित्याग परमपदने आपे छे

९ ते वस्तुना विचारमा पहोचो के जे वस्तु अतीन्द्रिय स्वरूप छे

१० गुणीना गुणमा अनुरक्त थाओ

शिक्षापाठ १०२ विविध प्रश्नो भाग १

आजे तमने हु केटलाक प्रश्नो निग्रथप्रवचनानुसार उत्तर आपवा माटे पूछु छउ कहो धर्मनी अगत्य शी छे?

उ०—अनादि काळथी आत्मानी कर्मजाळ टाळवा माटे

प्र०—जीव पहेलो के कर्म ?

उ०—बन्ने अनादि छे जीव पेहेलो होय तो ए विमळ वस्तुने मळ वळगवानु कंइ निमित्त जोइए कर्म पेहेलां कहो तो जीव विना कर्म कर्या कोणे? ए न्यायथी बन्ने अनादि छे

प्र०—जीव रूपी के अरूपी ?

उ०—रूपी पण खरो, अने अरूपी पण खरो

शिक्षापाठ १०४ विविध प्रश्नो भाग ३

प्र०—केवळी अने तीर्थंकर ए बन्नेमां फेर शो ?

उ०—केवळी अने तीर्थंकर शक्तिमां समान छे; परंतु तीर्थंकरे पूर्वे तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं छे; तेथी विशेषमां बार गुण अने अनेक अतिशय प्राप्त करे छे

प्र०—तीर्थंकर पर्यटन करीने शा माटे उपदेश आपे छे? ए तो निरागी छे?

उ०—तीर्थंकर नामकर्म जे पूर्वे बांध्युं छे ते वेदवा माटे तेओने अवश्य तेम करवुं पडे छे

प्र०—हमणा प्रवर्त्ते छे ते शासन कोनुं छे?

उ०—श्रमण भगवान् महावीरनुं

प्र०—महावीर पहेलां जैनदर्शन हतुं?

उ०—हा.

प्र०—ते कोणे उत्पन्न कर्युं हतुं?

उ०—ते पहेलांना तीर्थंकरोए

प्र०—तेओना अने महावीरना उपदेशमां कंइ भिन्नता खरी के?

उ०—तत्त्वस्वरूपे एकज छे भिन्न भिन्न पात्रने लइने उपदेश होवाथी अने कइक काळभेद होवाथी सामान्य मनुष्यने भिन्नता लागे खरी, परंतु न्यायथी जोतां ए भिन्नता नथी

शिक्षापाठ १०३ विविध प्रश्नो भाग २

प्र०—ए कर्मो टळवाथी आत्मा क्यां जाय छे?

उ०—अनंत अने शाश्वत मोक्षमां

प्र०—आ आत्मानो मोक्ष कोइवार थयो छे?

उ०—ना

प्र०—कारण?

उ०—मोक्ष थयेलो आत्मा कर्ममल रहित छे एथी पुनर्जन्म एने नथी

प्र०—केवळीनां लक्षण शुं?

उ०—चार घनघाती कर्मनो क्षय करी शेष चार कर्मने पातळां पाडी जे पुरुष त्रयोदश गुणस्थानकवर्ती विहार करे छे ते

प्र०—गुणस्थानक केटलां?

उ०—चौद

प्र०—तेनां नाम कहो?

उ०—१ मिथ्यात्व गुणस्थानक २ सास्वादन (सासादन) गुणस्थानक ३ मिश्रगुणस्थानक ४ अविरतिसम्यगद्रष्टि गुणस्थानक ५ देशविरति गुणस्थानक ६ प्रमत्तसयत गुणस्थानक ७ अप्रमत्तसंयत गुणस्थानक ८ अपूर्वकरण गुणस्थानक ९ अनिवृत्तिबादर गुणस्थानक १० सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानक ११ उपशांतमोह गुणस्थानक १२ क्षीणमोह गुणस्थानक १३ संयोगीकेवळी गुणस्थानक १४ अयोगीकेवळी गुणस्थानक

प्र०—एओनो मुख्य उपदेश शु छे?

उ०—आत्माने तारो; आत्मानी अनतशक्तियोनो प्रकाश करो, एन कर्मरूप अनत दु:खथी मुक्त करो ए

प्र०—ए माटे तेओए कया साधनो दर्शाव्या छे?

उ०—व्यवहारनयथी सद्देव, सद्धर्म, अने सद्गुरुनु स्वरूप जाणवु, सद्देवना गुणग्राम करवा, त्रिविध धर्म आचरवो अने निर्ग्रंथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी ते

प्र०—त्रिविध धर्म कयो?

उ०—सम्यग्ज्ञानरूप, सम्यग्दर्शनरूप अने सम्यकचारित्ररूप

शिक्षापाठ १०५ विविध प्रश्नो भाग ४

प्र०—आवु जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे त्यारे सर्व आत्माओ एना बोधने का मानता नथी?

उ०—कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वना जामेला दळियाथी, अने सत्समागमना अभावथी

प्र०—जैनना मुनियोना मुख्य आचाररूप शु छे?

उ०—पाच महाव्रत, दशविधि यतिधर्म, सप्तदशविधि सयम, दशविधि वैयावृत्य, नवविधि ब्रह्मचर्य, द्वादश प्रकारनो तप, क्रोधादिक चार प्रकारना कषायनो निग्रह, विशेषमा ज्ञान, दर्शन, चारित्रनु आराधन इत्यादिक अनेक भेद छे

प्र०—जैनमुनियोना जेवाज सन्यासियोना पचयाम छे, अने बौद्धधर्मना पाच महाशील छे. एटले ए आचारमा तो जैनमुनियो अने सन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो सरखा खरा के ?

उ०—नहीं.

प्र०—केम नही ?

उ०—एओना पचयाम अने पचमहाशील अपूर्ण छे महाव्रतना प्रतिभेद जैनमा अति सूक्ष्म छे पेला बेना स्थूळ छे

प्र०—सूक्ष्मताने माटे दृष्टात आपो जोइए ?

उ०—दृष्टात देखीतु छे पचयामियो कदमूळादिक अभक्ष्य खाय छे; सुखशय्यामा पोढे छे; विविध जातना वाहनो अने पुष्पनो उपभोग ले छे, केवळ शीतळ जळथी तेओनो व्यवहार छे रात्रिये भोजन ले छे एमा थतो असख्याता जतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भग ए आदिनी सूक्ष्मता तेओना जाणवामा नथी तेमज मासादिक अभक्ष्य अने सुखशीलिया साधनोथी बौद्धमुनियो युक्त छे जैन मुनियो तो एथी केवळ विरक्त छे

शिक्षापाठ १०६ विविध प्रश्नो भाग ५

प्र०—वेद अने जैन दर्शनने प्रतिपक्षता खरी के ?

उ०—जैनने कइ असमजस भावे प्रतिपक्षता नथी; परतु सत्यथी असत्य प्रतिपक्षी गणाय छे, तेम जैनदर्शनथी वेदनो सबध छे

प्र०—एओनो ...

उ०—आत्माने तारो,
एने कर्मरुप अनत दु खथी मुक्त ...

प्र०—ए माटे तेओए कया ...

उ०—व्यवहारनयथी सद्देव ...
जाणवु, सद्देवना गुणग्राम करवा ...
निर्ग्रंथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी ...

प्र०—त्रिविध धर्म कयो ?

उ०—सम्यग्ज्ञानरूप, सम्यग्दर्शनरू ...

शिक्षापाठ १०५ विविध प्र...

प्र०—आतु जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे ...
एना बोधने का मानता नथी ?

उ०—कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वनां जा ...
अने सत्समागमना अभावथी

प्र०—जैनना मुनियोना मुख्य आचाररूप ...

उ०—पाच महाव्रत, दशविधि यतिधर्म, सप्तद ...
दशविधि वैयावृत्य, नवविधि ब्रह्मचर्य, द्वादश ...
क्रोधादिक चार प्रकारना कषायनो निग्रह, विशेषमा ...
चारित्रनु आराधन इत्यादिक अनेक भेद छे

प्र०—जैनमुनियोना जेवाज सन्यासियोना पचयाम छे; अने बौद्धधर्मना पाच महाशील छे एटले ए आचारमा तो जैनमुनियो अन सन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो सरखा खरा के ?

उ०—नहीं.

प्र०—केम नहीं ?

उ०—एओना पचयाम अने पचमहाशील अपूर्ण छे. महाव्रतना प्रतिभेद जैनमा अति सूक्ष्म छे. पेला बेना स्थूळ छे.

प्र०—सूक्ष्मताने माटे दृष्टात आपो जोइए ?

उ०—दृष्टात देखीतु छे. पचयामियो कदमूळादिक अभक्ष्य खाय छे, सुखशय्यामा पोढे छे; विविध जातना वाहनो अने पुष्पनो उपभोग ले छे, केवळ शीतळ जळथी तेओनो व्यवहार छे. रात्रिये भोजन ले छे. एमा थतो असरयाता जतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भग ए आदिनी सूक्ष्मता तेओना जाणवामा नथी तेमज मासादिक अभक्ष्य अने सुखशीलिया साधनोथी बौद्धमुनियो युक्त छे. जैन मुनियो तो एथी केवळ विरक्त छे

शिक्षापाठ १०६ विविध प्रश्नो भाग ५

प्र०—वेद अने जैन दर्शनने प्रतिपक्षता खरी के ?

उ०—जैनने कइ असमजस भावे प्रतिपक्षता नथी, परतु सत्यथी असत्य प्रतिपक्षी गणाय छे, तेम जैनदर्शनथी वेदनो सबध छे

प्र०—एओनो मुख्य उपदेश शु छे?

उ०—आत्माने तारो, आत्मानी अनतशक्तियोनो प्रकाश करो, अने कर्मरुप अनंत दु खथी मुक्त करो ए

प्र०—ए माटे तेओए कया साधनो दर्शाव्या छे?

उ०—व्यवहारनयथी सद्देव, सद्धर्म, अने सद्गुरुनु स्वरुप जाणवु, सद्देवना गुणग्राम करवा, त्रिविध धर्म आचरवो अने निर्ग्रंथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी ते

प्र०—त्रिविध धर्म कयो?

उ०—सम्यग्ज्ञानरुप, सम्यगदर्शनरुप अने सम्यकचारित्ररुप

शिक्षापाठ १०५ विविध प्रश्नो भाग ४

प्र०—आवु जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे त्यारे सर्व आत्माओ एना बोधने का मानता नथी?

उ०—कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वना जामेला दळियाथी, अने सत्समागमना अभावथी

प्र०—जैनना मुनियोना मुख्य आचाररुप शु छे?

उ०—पाच महाव्रत, दशविधि यतिधर्म, सप्तदशविधि सयम, दशविधि वैयाहत्य, नवविधि ब्रह्मचर्य, द्वादश प्रकारनो तप, क्रोधादिक चार प्रकारना कषायनो निग्रह, विशेषमा ज्ञान, दर्शन, चारित्रनु आराधन इत्यादिक अनेक भेद छे

प्र०—जैनमुनियोना जेवाज सन्यासियोना पचयाम छे; अने बौद्धधर्मना पाच महाशील छे. एटले ए आचारमा तो जैनमुनियो अने सन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो सरखा खरा के ?

उ०—नही.

प्र०—केम नहीं ?

उ०—एओना पचयाम अने पचमहाशील अपूर्ण छे. महाव्रतना प्रतिभेद जैनमा अति सूक्ष्म छे. पेला बेना स्थूळ छे.

प्र०—सूक्ष्मताने माटे दृष्टात आपो जोइए ?

उ०—दृष्टात देखीतु छे. पचयामियो कदमूळादिक अभक्ष्य खाय छे; सुखशय्यामा पोढे छे; विविध जातना वाहनो अने पुष्पनो उपभोग ले छे, केवळ शीतळ जळथी तेओनो व्यवहार छे. रात्रिये भोजन ले छे. एमा थतो असख्याता जतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भग ए आदिनी सूक्ष्मता तेओना जाणवामा नथी तेमज मासादिक अभक्ष्य अने सुखशीलियां साधनोथी बौद्धमुनियो युक्त छे. जैन मुनियो तो एथी केवळ विरक्त छे.

शिक्षापाठ १०६ विविध प्रश्नो भाग ५

प्र०—वेद अने जैन दर्शनने प्रतिपक्षता खरी के ?

उ०—जैनने कइ असमजस भावे प्रतिपक्षता नथी, परतु सत्यथी असत्य प्रतिपक्षी गणाय छे, तेम जैनदर्शनथी वेदनो सबध छे.

प्र०—ए नेमा ससरप तमे कोने कहो छो?

उ०—पवित्र जैनदर्शनने

प्र०—वेदर्शनियो वेदने कहे छे तेनु केम?

उ०—एतो मतभेद अने जैनना तिरस्कार माटे छे, परतु न्यायपूर्वक बन्नेनां मूळतत्त्वो आप जोइ जजो

प्र०—आटलु तो मने लागे छे के महावीरादिक जिनेश्वरनु कथन न्यायना काटापर छे, परतु जगत्कर्त्तानी तेओ ना कहे छे, अने जगत् अनादि अनत छे एम कहे छे ते विषे कइ कंइ शका थाय छे के आ असख्यात द्वीपसमुद्रयुक्त जगत् वगर बनाव्ये क्याथी होय?

उ०—आपने ज्या सुधी आत्मानी अनत शक्तिनी लेश पण दिव्य प्रसादी मळी नथी त्यां सुधी एम लागे छे, परतु तत्त्वज्ञाने एम नहीं लागे "सम्मतितर्क" आदि ग्रथनो आप अनुभव करशो एटले ए शंका नीकळी जशे

प्र०—परतु समर्थ विद्वानो पोतानी मृषा वातने पण दृष्टातादिकथी सिद्धातिक करी दे छे, एथी ए त्रुटी शके नहीं पण सत्य केम कहेवाय?

उ०—पण आने कइ मृषा कथवानुं प्रयोजन नहोतु, अने पळभर एम मानीए, के एम आपणने शका थइ के ए कथन मृषा हशे तो पछी जगतकर्त्ताए एवा पुरुषने जन्म पण कां आप्यो? नामबोळक पुत्रने जन्म आपवा शु प्रयोजन हतुं? तेम वळी ए पुरुषो सर्वज्ञ हता, जगतकर्त्ता सिद्ध होत तो एम कहेवाथी तेओने कंइ हानि नहोती

शिक्षापाठ १०७ जिनेश्वरनी वाणी

मनहर छंद

अनत अनत भाव भेदथी भरेली भली,
अनत अनत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकळ जगत् हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे,
उपमा आप्यानी जेने तमा राखवी ते व्यर्थ.
आपवाथी निज मति मपाइ में मानी छे,
अहो! राज्यचद्र वाल ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे १

शिक्षापाठ १०८ पूर्णमालिका मगल

उपजाति

तप्पोपध्याने रविरूप थाय,
ए साधिने सोम रही सुहाय,
महान ते मगल पक्ति पामे,
आवे पछी ते बुधना प्रणामे. १

निर्ग्रंथ ज्ञाता गुरु सिद्धि दाता,
कातो स्वय शुक्र प्रपूर्ण ख्याता;
त्रियोग त्या केवळ मंद पामे,
सिद्धे विचरी विरामे २

शुद्धि पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
૮	૫	कर्मनडे,	कर्मवडे
૯	૩	पुछ्डु	पृछ्डु
૧૧	૧૮	मुनी	मुनि
૧૪	૧૦	'अनुनपदया'	'अनुर्कपदया'
૧૪	૧૮	पाताना	पोताना
૧૫	૧૮	कहुं;	कहु
૧૬	૧૧	काष्टम्यरुप	१ काष्टस्वरूप
૧૬	૧૨	१ काष्टस्वरूपी	काष्टस्वरूपी
૧૯	૧૭	जुगुप्स	जुगुप्सा
૨૭	૨૯	मोक्षगति, एथि	मोक्ष ए गतिथी
૨૧	૯	छे तेम,	छे, तेम
૨૯	૧૨	छीए	छीए,
૨૮	૧૩	तेम,	तेम
૨૯	૨૦	उतरे छे	उतरे छे,
૩૦	૧૮	जार्ता	जोतां
૩૭	૧૬	मलीन	मलिन
૩૭	૧૮	मलीनता	मलिनता
૩૭	૨૨	अंमुल्य	अमूल्य
૩૮	૩	परंस्परना	परस्परनो
૩૯	૨	निर्दाप	निर्दोप
૫૩	૨૦	मुळे	मूळे
૫૬	૧૦	शिद्ध	सिद्ध

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध.
६५	२	रात्रिना	रात्रिमां
६६	१४	आणि	आणी
६७	१९	स्त्रीयो	स्त्रियो
६९	१२	समपरिणामयी	समपरिणामथी
७५	१२	वित्या	वीत्या
७९	२४	पुरतु	पूरतुं
८४	११	पराधिन	पराधीन
८७	६	शियाळानी	शीयाळानी.
८७	१५	नथी.	नथी?
९१	१२	स्त्रीओ	स्त्रिओ
९२	१३	कहे उ	कहे छे
१०६	१२	सदूवस्तुना	सद्वस्तुनो
१०६	१६	अदूभुत जे	अद्‌भूत छे
१०८	४	निर्ग्रथो	निर्ग्रंथो
११२	१७	इद्रियनिरिक्षण	इंद्रियनिरीक्षण
११७	२	प्रणे	प्रमाणे
११७	२	नवा	नवी
११	६	रहेत्तो	रहेतो
११९	५	सहित	सहीत
१२२	८	सीतेर	सित्तेर
१२२	१०	पज्जुनासार्थि	पज्जुवास
१२२	१४	पज्जुर्वासा	पज्जुवा
१२५	२१		
१३४	१२		

शुद्धि पत्रक

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	५	कर्मवडे,	कर्मनडे
८	३	पुछ्डु	पूछ्डु
११	१८	मुनी	मुनि
१४	१०	'अनुवधदया'	'अनुबधदया'
१४	१९	पाताना	पोताना
१५	१८	कहुं,	कहु
१६	११	काष्टस्वरुप	९ काष्टस्वरूप
१६	१२	९ काष्टस्वरपी	काष्टस्वरुपी
१९	१७	जुगुप्स	जुगुप्सा
२७	२९	मोक्षगति, एथि	मोक्ष ए गतिथी
२९	९	छे तेम,	छे, तेम
२९	१२	छीए	छीए,
२	१३	तेम,	तेम
२९	२०	उतरे छे	उतरे छे,
३०	१५	जार्ता	जोता
३७	१६	मलीन	मलिन
३७	१८	मलीनता	मलिनता
३७	२५	अमुल्य	अमूल्य
३८	३	परस्परना	परस्परनो
३९	२	निर्दाप	निर्दोप
५३	२०	मुळे	मूळे
५६	१०	शिद्ध	सिद्ध

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
૬૮	૨	रात्रिना	रात्रिमा
६૬	૧૪	आणि	आणी
૬૭	૧[illegible]	स्त्रीयो	स्त्रियो
૬९	૧૨	समपरिणामयी	समपरिणामथी
૭૦	૧૨	वित्या	वीत्या
૭૦	૨૪	पुरतु	पूरतु
૮૪	૧૧	पराधिन	पराधीन
૮૭	૬	शियाळानी	शीयाळानी
૮૭	૧૮	नथी.	नथी ?
९૧	૧૨	स्त्रीओ	स्त्रिओ
९૨	૧૩	कहे छ	कहे छे
૧૦૬	૧૨	सद्वम्तुना	सद्वस्तुनो
૧૦૬	૧૬	अद्भुत जे	अद्भूत छे
૧૦૮	૪	निर्ग्रंथो	निर्ग्रंथो
૧૧૨	૧૭	इद्रियनिरिक्षण	इंद्रियनिरीक्षण
૧૧૭	૨	प्रणे	प्रमाणे
૧१૭	૨	नवा	नवी
१૧	६	रहेतो	रहेतो
११९	૮	सहित	सहीत
१२૨	८	सीतेर	सित्तेर
१૨૨	१०	पज्जुवासामि "	पज्जुवासामि"
१૨૨	१४	पज्जुवासामि."	पज्जुवासामि"
१૨५	૧४	पछो	पछी
૧૩૪	१૨	भरेलो	भरेली

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३४	१८	तेआ	तेओ
१४०	१	आवी जाय छे	आवी जाय छे
१४२	२०	अपूर्व छे	अपूर्व छे
१४०	६	वरसते	वरसते
१७४	२२	कहेवा	कहेवा,
१७७	०	जुओ	जुओ
१७५	११	विचारो ?	विचारो
१७१	१२	ज्ञानावरणीय,	ज्ञानावरणीय